

॥ श्रीगणेशायनमः श्रीकृष्णायनमः अथ
सालंकृतवीधनीपाडवयसैडुचंडिकाप्रार
भः ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिलोवीर्यो ॥ धनुरजोव
विधारिलो ॥ नृनारहारिलोवंदे ॥ नरनाशयणा
बुजो ॥ १ ॥ इह ॥ आनकीरतनवंदनात्रिविधमंग
लाचनः ॥ अथमअनुष्टुपवीचसोई ॥ नएत्रिधा
सुतकनः ॥ २ ॥ नमोअनंतब्रह्मांडकेसुरभूष
नकेरूप ॥ पाडवयसैडुचंडिकावरनतदास
स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामीकेपीछेरहे ॥ अदिहोयउच्चार
॥ नरनाशयनशब्दक ॥ दासस्वरूपविचारिध
॥ धनातरी ॥ गरलतैनीमकेसुज्वालाहूतैपांच
रुके ॥ जोपदीकेसनाओविशटवनतीनवारकि
रीटीकेअक्षरकेआपतैयुधिष्ठिरकूंमारिवेकूं
मरिवेकूंउनैनयैअसीधारि ॥ इरवासाआपवे
कूंआयोताकूंआदिदैकै ॥ अपदासकेतेकहै
एकछंदमैप्रकार ॥ तेईमेरेअंशआदिमंगलउद
पकरोएतेगअमंगलकूंमंगलकरनहार ॥ ५ ॥
कविता ॥ पोनेकेलंकारकेसवकिरीटीजुकी ॥
जंघालताजसउदैइडयोकीगोदमै ॥ संह्रीपदअ

पाठ ०
१

जुनकेससजामारुकरमणिकै॥ अंकवीचधरेती
नूपलोटेविदमै॥ अंतदधुरचारिनकेदेष्टतनिम
अनयो॥ एजअमैनेनमीनअनंदकेहोदमै॥ अं
निरंतरईहासस्वामीकीस्वरूपदास॥ संहोपा
समेरीचारैपायधानमै॥ ६॥ गुणीगुण॥ १॥ अं
शीअंश॥ २॥ विकारीविकारजावा॥ ३॥ कारणअ
रुकाजा॥ ४॥ जातिविकी॥ ५॥ वषानेहैसेवकअ
सेव्य॥ ६॥ उपचारा॥ ७॥ स्तुति॥ ८॥ साइसता॥ ९॥
उपमापरयणरेतीनपदअनेहै॥ मोविकल
ताकोजीवइसमैअहेतवादीकरैहै॥ अनावत
त्ववेतालोकाजानैहै॥ वासुदेवअर्जुनमैघटेहै
रुघटेतांही॥ असोज्ञाननक्तिनीअपदासमान
है॥ १०॥ हंपतिपरिहासमंगलाचर्न॥ कण्विस्तक
हैरमातेरेपिताकीत्रीयाजोगंगाशिवनेछिना
यलीनीताकोवैरकालयो॥ रमाकहेजारत्रिलो
कजैसोहीनोविया॥ आपतैछिव्योहैकविष्मात॥
विसमैनयो॥ आपकोजरयोधुवकांसोअ
नंगमाम॥ ताकोलिंग॥ अजि॥ नतनयोनयो
असोपरिहासकियो॥

पां०
१

सा॥ सा॥ श्रद्धां न हृदै चित्र द्वे गयो॥ ८॥ दुहा॥ हरिह
 रसुततमगुणमई चहिये गोरसूस्पामा॥ अयो॥
 अ॥ अ॥ यके ध्यान ते॥ नरे विलोमनमामि॥ ९॥ क॥
 धनं जया॥ १॥ विजो॥ २॥ श्वेतवाहना॥ ३॥ किरीटी॥ ४॥
 जिह्वा॥ ५॥ अर्जुना॥ ६॥ विनत्स॥ ७॥ सवसाची॥ ८॥
 ॥ नाम गहिये फाल्गुण॥ ९॥ क॥ १०॥ क॥ सखा
 ॥ ११॥ नर॥ १२॥ गुडा केसा॥ १३॥ वासवा॥ १४॥ सा
 गीतवेता॥ १५॥ नीसवजेता॥ १६॥ कहीये कुलेश्व
 ॥ १७॥ गाजी बंधारी॥ १८॥ कपीधुजा॥ १९॥ अ॥ नै
 कारी और कालषंजारी॥ २०॥ उचार किया चहिये॥
 छत्री को जरूर और को उद्धोख रूप दासवीसनाम
 ॥ जयै तै त्रिबर्ग सद्य लहिये॥ १०॥ कीर्ति॥ ११॥ लजा॥ २
 कंति॥ ३॥ बुधि॥ ४॥ प्रज्ञा॥ ५॥ धृती॥ ६॥ आस्तिका॥ ७॥ स
 मता॥ ८॥ अरु दमता॥ ९॥ तै तमता विना सिद्धै॥ सुय
 रशी॥ १०॥ गिरा॥ ११॥ लमा॥ १२॥ श्रीरता॥ १३॥ उदार
 तारी॥ १४॥ विद्या॥ १५॥ उयकार ताश॥ १६॥ विस्वमेवि
 कासी है॥ आसमुषधाची दिसास जनकुमुद वंश
 यदास बुधिसोचकोर निहं लासी है॥ नीमानु जनकु
 लाय जता जस उदै इडयो डस कला कीता कीचदि

०/ जून के ससना मारु कमलिके ॥ अंकवीचधरेती
 ने पलोटे विदमै ॥ अंतदधुरचारिन के देषतनिम
 अतये ॥ एजश्रमैनेनमीन आनंद के होदमै ॥ अं
 निरंतर ईदास स्वामी की स्वरूपदास ॥ संहोषा
 समैरी चारै पाय ध्यानमै ॥ ६ ॥ गुली गुली ॥ १ ॥ अं
 शी अंश ॥ २ ॥ विकारी विकार जावा ॥ ३ ॥ कारण अ
 रुकाज ॥ ४ ॥ जातिविक्री ॥ ५ ॥ वषा ने हे सेवक अ
 सेव्य ॥ ६ ॥ उपचार ॥ ७ ॥ स्तुति ॥ ८ ॥ साइसता ॥ ९ ॥
 उपमा परायण रेती नपद आने है ॥ मोविकल
 ताको जीव इसमै अद्वैतवादी करै है ॥ अनावत
 त्ववेता लोक जाने है ॥ वासुदेव अर्जुन में घटे है
 रुघटे नाही ॥ असो ज्ञान नक्तिनी श्रपदासमान
 है ॥ १० ॥ दंपति परिहास मंगलाचर्न ॥ क० विष्णुक
 हेर मोतेरे पिता की त्रीया जोगंगा शिवने छिना
 पत्नी नीता को वैर कालयो रमा कहै जार त्रिलो
 क जै सोरी नो विय ॥ आपतै छिव्यो है का विष्णात ॥
 विस्वमै नयो ॥ आपको जरायो पुत्र काम सो अ
 नंग माम ॥ ताको लिंग ॥ ११ ॥ नतन योनयो पां०
 असो परिहास कियो ॥ संगल १

सा सा ध्यान नरुदैवित्रकैगयो ॥ ८ ॥ दुहा ॥ हरिह
 रसुततमगुणमईचहियैगौरसुसामा ॥ अन्यो
 अत्रत्यकेध्यानते ॥ नरेविलोमनमामि ॥ १ ॥ क ॥
 धनंजया ॥ १ ॥ विजो ॥ २ ॥ चेतवाहना ॥ ३ ॥ किरीटी ॥ ४ ॥
 जिष्णु ॥ ५ ॥ अर्जुन ॥ ६ ॥ विजय ॥ ७ ॥ सव्यसाची ॥ ८ ॥
 ॥ नामगहियैफालुण ॥ ९ ॥ कृष्ण ॥ १० ॥ कृष्णसखा
 ॥ ११ ॥ नर ॥ १२ ॥ गुडाकेसा ॥ १३ ॥ वासवा ॥ १४ ॥ सा
 गीतवेता ॥ १५ ॥ बीसवजेता ॥ १६ ॥ कहीयेकुतेअ
 ॥ १७ ॥ गाजीबंधारी ॥ १८ ॥ कपीधुजा ॥ १९ ॥ अत्रै
 कारी ॥ औरकालषंजारी ॥ २० ॥ उचारकियाचहिये ॥
 छत्रीकोजरूर ॥ औरकोउद्धोखरूपदासवीसनाम
 ॥ जपैतैत्रिबर्गसद्यलहिये ॥ १ ॥ कीर्ति ॥ २ ॥ लजा ॥ ३
 कान्ति ॥ ४ ॥ बुधि ॥ ५ ॥ प्रज्ञा ॥ ६ ॥ धृती ॥ ७ ॥ आस्तिका ॥ ८ ॥ स
 मता ॥ ९ ॥ अरुदमता ॥ १० ॥ तैतमताविनासिहै ॥ सुय
 रई ॥ ११ ॥ गिरा ॥ १२ ॥ लमा ॥ १३ ॥ श्रीरता ॥ १४ ॥ उदार
 तई ॥ १५ ॥ विद्या ॥ १६ ॥ उपकारता ॥ १७ ॥ विस्वमेवि
 कासीहै ॥ आसमुषपाचीदिसास
 परासबुधिसोचकोरनिहुंलासीहै ॥ नीमानुज
 लायजता

काप्रकासीहै॥११॥मंगलारंनकिमर्थ॥१॥आ॥शरेती
 भा॥२॥आरन्य॥३॥विशटा॥४॥ओउद्योग॥५॥पकेमु
 सम॥६॥ओद्रोण॥७॥कणीनीशत्म॥८॥पर्वकहिये
 सुषोमिक॥९॥त्रिया॥१०॥शान्ति॥११॥अनुशिष्या॥
 १३॥अस्वमेध॥१४॥व्यासाश्रम॥१५॥मृशाल॥१६॥वि
 चारकरिगहिये॥महाप्रस्थ॥१७॥नैकेस्वर्गआगे
 हण॥१८॥आदिहेकेअनुक्रमहीतैपर्वष्टादशल
 हिये॥तिनकोसंयेपचहेवरमोखरूपदासकिरीटी
 केसारथीसहायनैकरहिये॥१२॥किप्रमोजनसदे
 यो॥पांचछतैकरिगोनहरिदिसफेरणवचलैनच
 लै॥जीतछतैकरिगोनहरिकिरदासस्वरूपहलेन
 हलै॥नैनछतैलखिरूपविशटकीफेरयेनैनखिलै
 नखिलै॥ओनछतैदरीकिरतिकूसनिकेरयेओन
 मिलेनमिलै॥१३॥इह॥गानजीवकाफजसकोधु
 निपरमारथसाच॥विघ्नशान्तिपरलोककी॥साहि
 ब्रयोजनपांच॥१४॥मिरैपांचहुदेमैरीजीवकाहरिद
 रिदासकीतिन॥ग्रंथकीयैजसनीहो॥पटेंगेजेनोको
 बुधिसकर्मपामिपरमार्थ॥ग्रंथविषैविघ्नशान्तिपर
 लोकसिद्धिदेही॥श्रीहरिकौहरिदासनकोमिश्रतय

कृष्ण

२

सा॥ साकलौन॥ सरकंजः निपाचंद्रन्यायेन॥ १५॥
 दसपर्वसुचियत्रयमश्वादिपर्वसुचि॥ कवि
 जयसर्पसत्रययातीतरतजन्मश्रंसाश्रवत
 सिताश्रुमानियौ॥ लापागेहवद्धमोहिदं व
 स्फुरकोद्रौपरीस्वयंवरश्रीराधावेधजानि॥ र
 धलाचवनौवासवर्षद्वदसकौ॥ अर्जुनकंस
 दिलोश्रीयालानगानियौ॥ पांडुदाहकंबुश्रये
 नुषनालानाश्रिपर्वसुचीपत्रनीकैकैपि
 ॥ १६॥ डह॥ मुनिअयनद्वगवामगति॥ अंक
 आया॥ वेदवसुगृहफिरवसु॥ श्लोक
 न्याया॥ १७॥ सनासुचिकवित॥ नारदनेदेवन
 नावक्रुधासही॥ पांडुकोसंदेसकनिराज
 वो॥ आशेदिगविजेआशेनातनतैमागधके
 तेवीनामशिशुपालरुकीरिवो॥ सनावीचदे
 पमानसोसुयोधनको॥ माछरतालिलियौ॥ पि
 तुलतैलरिवोरओधुतयिओचीरसकरनेव
 रफेरदुततेराअष्टवनकोविचरिवो॥ १८॥
 वसुमुनिअथायहो॥ सनापर्वमेंजानःचंद्रम
 रअयनलिपि॥ श्लोकप्रमानदिमान॥ १९॥ व

काप्रकासीहै॥११॥मंगलारंनकिमर्थ॥१॥आ॥शरेती
 भा॥२॥आरन्य॥३॥विशटा॥४॥ओउद्योग॥५॥पकेम
 सम॥६॥ओद्रोण॥७॥कणी॥८॥शत्रु॥९॥पर्वकहिये
 सुषोमिक॥१०॥त्रिया॥११॥शान्ति॥१२॥अनुशिष्या
 १३॥अस्वमेध॥१४॥व्यासाश्रम॥१५॥मृशाल॥१६॥वि
 चारकरिगहिये॥महाप्रस्थ॥१७॥तैकेस्वर्गआगे
 हण॥१८॥आदिदेकैअनुक्रमहीतैपर्वएदशाल
 हिये॥तिनकोसंघेपचहैवरमीस्वरूपदासकिरीटी
 केसारथीसहायनैकरहिये॥१२॥किप्रमोजनंसवे
 यो॥पांचछतैकरिगोनहरिदिसफेरणंपांचतैनच
 लै॥जीनछतैकरिगोनहरिफिरदासस्वरूपहलेन
 हले॥नेनछतैनधिरूपविशटकीफेरयेनेनधिले
 नधिले॥ओनछतैहरीकिरतिकूसनिकेरयेओन
 मिलेनमिले॥१३॥इह॥गानजीवकाफजसकोधु
 निपरमारथसाच॥विघ्नशान्तिपरलोककी॥साधि
 प्रयोजनपांच॥१४॥मिरैपांचहुहैमैरीजीवकाहरिद
 रिदासकीतिन॥ग्रंथकीयैजसनीहै॥पटेंगेजेनोको
 बुधिसकर्मप्रतिपरमार्थ॥ग्रंथविषेविघ्नशान्तिपर
 लोकसिद्धिदेही॥श्रीहरिकौहरिदासनकोमिश्रतय

सा॥ साकलौन॥ सरकंज॥ निसाचंद्रन्यायेन॥ १९॥
 दसपर्वसुचियत्रयमश्रुदिपर्वसुचि॥ क
 जयसर्पसत्रययातीतरतजन्मश्रंसाश्रवत
 सिताश्रुतुमानियै॥ लापागेहवद्धमोहिदं
 करकोडौपरीस्वयंवरश्रीराधाबेधजानि॥
 धलाचवनौवासवर्षद्वदसको॥ अर्जुनकंस
 दिक्केशीयालाचगानियै॥ पांडुहाहकंबुअये
 नुषनालाचश्रुदिपर्वसुचीपत्रनीकैकैपि
 ॥ १६॥ इह॥ मुनिअयनद्वगवामगति॥ अंक
 अथाय॥ वेदवस्तुगहफिरवस्तु॥ श्लोक
 न्याय॥ १७॥ सनाशुचिकवित॥ नारदनेदेव
 नावक्रुधासही॥ पांडुकोसंदेसस्तुनिरजस्त
 वो॥ चारिदिगविजेचारेंचातनतैमागधवे
 तैवीनामशिशुपालक्रुकोरिवो॥ सनावीच
 पमानसोसुयोधनको॥ माछरतालिलियै॥ पि
 तुलतैलरिवोरओश्रुतयिओचीरससरने
 रफेरद्वततेराअद्वनकोविचरिवो॥ १८॥
 वसुमुनिअथायहै॥ सनापर्वसैजान॥ चंद्र
 रअयनलियि॥ श्लोकप्रमानहिमान॥ १९॥

क॥ नास्करते अये पात्र पायत प्रथम नयो॥ कृष्णको
 मिलाय इति हासन पनलको॥ जिह्म तय असुना
 नक पट निधा जुधना कगोन रं नाश्रय नास देत्य दल
 को घोस यार्च मोष बंध दोप दी हरन तामे जन्म नष्ट
 केवो इष्ट जे इष्ट विकलको॥ राम कथा तीर्थाटिन कर्न
 जन्म अनीते॥ आरु बंध मसुय लजोग पान जलको
 ॥२॥ दुहा॥ रल उर्मि डग वन परब॥ कही व्यास अभा
 य॥ वेद रागरितु विधु मही॥ संष्ठा श्लोक जिताय॥ २१॥
 विराट शुचिक॥ कंकन टव हन जी बह न्नटा गंधि
 कार ते विपा लस य रंधी आ कृति छि पाय बो॥ ठिजे
 महो सव मे हत न जी मृत मन्त्रः॥ दोप दी के काज बं
 सकी चक य पाय बो॥ दक्ष ए गे ग्रह ए अर्ध मुंड न स
 समी को॥ डजे गे ग्रह ए कुरु से न्य मु र छा य बो॥ पासे
 को प्रहार न्य प म छु तै यु धि छिर के उतर ते सो न डे य
 आह को र चा य बो॥ २॥ दु॥ वार ग ग वे राट मे क हे अ
 धाय ब धा नि॥ ओ मा वर रा र कर रा हित॥ श्लोक स
 म ह पि छानि॥ २३॥ छ हो ग शु चि का॥ आदि मं च न
 ग पुर गे न नो यु रे हित को॥ द जे गे न सं जय को नी ती
 हे वि डर की ती जे नो श्री कृष्ण गे न मु नि द्रु ति हा सक

धारनविशदरूपदेवीसनाधरकीःदसकुदि
 पचागमनिमंत्रणतैसातप्यारहोहणीमिलिहै
 रकी॥आगमउत्सकदेनसेमागोनकुरुहैत्र
 आचंवाकथानारीनयेरकी॥२३॥द्वारागसि -
 रुचंद्रमा॥पर्वअध्यायउद्योगःवसरत्नउर्मिरि ॥
 कनकोसहजोग॥२४॥नीलमस्तुतिःक०॥षंड
 मानउसातकोधमानहनिनिस्मअनिसेवनप्रा
 तोसेन्यसारीकौ॥अर्जुनविद्यादगीताअष्टादश
 ध्यायजानि॥सीनवरदानधर्मपुत्रधर्मचारीकौ॥ई
 नउत्तरअसंखड्विशदपुत्रसतरसुयोधनकेव
 अपकारीकौ॥विवाणगंगादीनोजसअधैत्तन
 ॥२५॥६॥वारहंडगनयतिरदन॥नीलमय -
 धाय॥विदवस्तुसिद्धिदानलै॥श्लोकहिदियेजिता
 ॥२६॥द्वारागसि॥द्वाराकीप्रतज्ञाजुधसं
 कअर्जुनकीचक्रव्यूहवेधवद्रुसुभद्रकेनंदको
 कीप्रतज्ञाजुधविनारथवद्रुयोत्तरीअवाजेइय
 विदअनुविदकोरात्रीज्जुवासवीअमोघस
 तैनयोपातदेडवेईगनसत्रुनिहकंदाकोये
 लीसन्नाताइरयोधनकेद्वारापाता॥द्वाराअस्त

शयनप्रेसोष्टुजफंदको॥ २७॥ इह॥ ओमदीपचरुचं
 दमाद्रोरायवर्चश्चाय॥ गृहचंवरनिधिसिधियुतः
 गिनतीश्लोकगिनाय॥ २८॥ कर्नसुचिकवित॥ क
 अग्निसेचनओठंदयुधचैकद्वीपरात्रीसमेमंत्रस
 मसारथीविचासोहै॥ इजेदीनसारथीमहारथी
 वादतामेमरूदेससेनानिकोमाजनोविगासोहै॥
 ओओचीरतेईलुजओचदोउसेनविचपीयोओ
 तीमसेनदसासनमासोहै॥ युधिष्ठिरअर्जुनकी
 स्वतेमत्तुटारी॥ कृष्णपुत्रवसेनजुक्तकर्नमारिमा
 सोहै॥ २९॥ इह॥ रत्नरितश्चायहै॥ कर्नपर्वमे
 ध॥ विदरागनिधवक्त्रवि॥ गिनोश्लोककौबोध॥ ३०॥
 मसुचिक॥ कलस्नानसुसर्मापुत्सुकसकुनीको
 वरुधर्मपुत्रहीतैनाससम्यग्आधेदिनमें॥ सुयो
 नीरसजादतनतैसोधपाय॥ धमकटुवादतैज
 एकछिनेमेंकृष्णाग्रजतीर्थयात्राकुरुक्षेत्रसरसा
 ती॥ दोनूकीप्रसंसापाचोओनकुंडतिनेमें॥ ज्योपदी
 कूसनावीचदियाईजीवामजंघातातैसोईतोरिनी
 मारिलियोरनमें॥ ३१॥ इह॥ रत्नबाणश्चायहै॥ स
 मगहाजुतपर्व॥ ओमनैनकरअग्निगन॥ श्लोक

कृष्ण
 ४

निसर्वा॥३२॥ सुजीमिक सुचिक विद्रोणी अनी सेच
नउलक उपरे सनिसा यडुही तैंद्रो पदी कैनाता पुत्रा

हैं॥ अग राह जार सस्र अखे तैं विनास कीये

सेना बाह्य के राव उबारे दौ॥ द्रोपदी विलाप सुनि
तनर की भौने म॥ सनु कोरु आप को द्वै ब्रह्म अखटारे
वाधिलाये शिवा छेदि विप्र जानि छांदि दियो रतर
को गने राख्यो कृष्ण काम सारे दौ॥ ३३॥ दुहग॥ सर्व पुन
अधाय हैं॥ सर्व सुखोमिक मानियो मावर वसु श्लोक है॥
यहै अनुक्रम जानि॥ ३४॥ स्त्री पर्व सचि॥ कवित॥

मयु युक्तु लै कै आये रा लो कन को॥ गांधारी को यती जु
वास तैं सिवो॥ तोरु को पञ्चालाने त्रपाटी बांधी अधी॥
जाग॥ करत प्रनाम धर्म निष्ठ को जरायवो॥ मरे न केना
मले लै कहत जु धिष्टिरसं॥ सुयोधन माता को विलाप
ताप गायवो॥ लोह में बनायवो मिलायवो अच

सो चरन दिखायवो रुक्मीम को वचायवो॥ ३५॥
दीपनेन श्री पर्व मै गिनीय ध्याय अनुराधा रावार
न श्लोक दौ॥ आसक विनय॥ ३६॥ सोता अनुसासन
ची॥ कवित॥ राजधर्म दानधर्मा आपतिक ह्यो
र्म मोरु को जो धर्म सरस जाके सयन मै॥

इतिहासहो नृपर्वनमें पाचरत्नगीताविनविष्णुमोह
 नमो युधिष्ठिरन्नातापुत्रपितामहगुरुविप्रईनकीवि।
 नासदे। धितापघोरतनमो कृष्णउपदेसतैनां। आसउ
 पदेसतैनानीस्मउपदेसहीतैसीतलनोमनमो॥३७॥
 हा॥ रत्नेकालसंध्यासहित। सातिपर्वअभायदीपमो
 ममुनिवेदविधा। श्लोकअनुक्रमगाय॥३८॥ गगवेदवि
 धभायदे। अनुसासनमें जोयाननअंबरवस्त्रदीप।
 कृतश्लोकअनुक्रमहोय॥३९॥ अस्वमेधकचीक
 वित॥ मरुजज्ञकथाओरचामीकरकोसलानरीकृत
 जन्मअरुतैपचायोसी। अस्वमोहरिहाजुक्तदिसा
 तंयुधिष्ठिरकोसुदर्शनकथाधर्मवेस्त्रववतायोसी। वि
 त्रांगदापुत्रवन्त्रवाहनकोअद्भुतसोविक्रमसुनतलो
 कविस्मेउपजायोसी। मयकीसमाप्तनयेदलणअने
 कइअपायोमनवांछितजो जाचवेकोआयोसी॥४०॥
 इहस्वयसंध्याचंद्रमा। अस्वमेधअभाय। ओमअय
 नपुस्करअगनिदीनेश्लोकगिनाय॥४१॥ आसाअ
 मस्त्रिकवित॥ नयोनिरवेदरूपअचक्षुविपुनगो
 न। प्रयासासससुरज्योसेवाकाजैकीयोसाय। युधिष्ठि
 रपितानक्तिपूर्वअदन्तकीनीतीजेअदनेटिवेकूं

५

गयो लोये राजकाय ॥ कृता परलोक व्यास कृपा से
नी के मारे वीर मीले जाते हैं छो देविलाप के जो रि
धर ॥ ७५ ॥ अयन वेद अध्याय है आसा अम मे
गयो मसर चंद्रमा ॥ गिनती श्लोक विसेषि ॥ ४३ ॥ मु
सुचि ॥ सवेया ॥ न सुख आप के व्यास ते कृष्ण क
दुव संको नास विचारिके ॥ लुटी गई नीय आप म
देव सकी सीषत परं न कुकुरारिके ॥ जात है ज
नारि विरग जो वर्य छतीस को रज विसारिके ॥ ४४
॥ वसु अध्याय मसल परवा ॥ गिनत श्लोक
शि ॥ ओम अयन संख्या सहिता ॥ न विविधरीत वि
४५ ॥ महाप्रस्थान सुचि ॥ वजनानि को मधुपुर
निमन कृत पुरनागा ॥ हे कोटि न निध द्विजन सु
दिन बन नागा ॥ ४६ ॥ सर्वतीन अध्याय है ॥ पूर्व महा
ना ॥ श्लोक तीन सतबी सैं ॥ जाहर कहे सुजाना ॥ ४७
गारे हण सुचि पत्र कपा ॥ आरे जात जो पदी के य
पतन नयो ॥ युधिष्ठिर ओम गंगा न्हावत न सा
स्नान कथा सुयोधन आदि देये नाक विषे देव ह
बंध देवि वेकर गयो है ॥ अर्जुन क आदि दे को
निवास देयो ॥ करत विलाप सुनि अद्भुत सो नाग

चासौतहानिवासइहादिका। आयपासवतायोविलास
नयसोवतसोजागोहो॥४८॥ छह॥ पुरीपांचअध्याय
॥ स्वर्गरेहणमाहि॥ श्लोकदोयसतेहेसवे॥ घटतीबटती
नाहि॥४९॥ सर्वाध्यायसर्वश्लोकसंख्या॥ कालरगगहचं
द्रम॥ सर्वपर्वअध्याय॥ छंदकरसरधरवाणवसु॥ विन
हरिवंसगिना॥५०॥ अष्टादसअहोदनि॥ अष्टादसहि
पदी॥ अष्टादसदिनेमैकटे॥ अष्टादसविननरस॥५१॥ क
वित॥ उपदविरचराजमागधेससहदेव॥ धृष्टकेतंचैद्यप
तीनीकोनिरधारियेयुयुधानयडुवंसीपाड्यकोशलाधिप
तिरेकरक॥ अहोदनीस्वामीरेविचारियेः कुंतिभोज
केकयकेपांचौनातमासीपुत्रा॥ इनकीयुधिष्ठीरकीरे
ककैसंनारियेः सातहीअहोदनिअपांडवकीमाहासै
म्य॥ अष्टवीरविनाकटीयुद्धमेंउचारिये॥५२॥ छंद
धनाक्षरी॥ नगदैतदैतवंसनरीबाकुरुवंसीसत्यम
द्रपतिविंदअनृविंदजदेजानिः सिधपतिवहीनैऊजे
इयसुयोधनकोः सुदहणकांबोजीयवनकीसेममा
निः॥ अहोदनीअककतवर्माकीरेब्रावनईतीनधर
हीकेछोटैमोटेनृपतैवधोनि॥ ग्यारहप्रकारनदीगा
जीवीकीधारविचमूविगई॥ आरवीरवनसबहीकी

हंनि॥५३॥डुहा॥नननिधिग्रहचरुकालवस्तु
विधक्कुरुरंगः ओमकालरितुमहिसुनी॥ननवि
डवसंगा॥५४॥ओमवेदवस्तुरितुमुनि॥दीपच
कुरुवीरा॥ननवस्तुननमुनिरितुमुनी॥विधपा
रनधीरा॥५५॥ननडुगग्रहसंधावरण॥वाणवेद
सेनः॥सारथिआदिकवीरसवः॥मरणहारगनि
॥५६॥नमस्तुनिसरणनवर्णडुगः॥जगकुरुवस्ति
रा॥ननग्रहओमरुकालसरः॥चंदपांडुगजदेनि
॥ओमोवरडुगकालग्रह॥रगमुनिमिलिहोय
रचस्वगजजोरिकरि॥देनंदलनकेजोय॥५७॥
वित॥नयोदसीकार्तिककीयांडुशषनातसमै
ननयोदेमहाडुस्तरसंग्रामको॥सोदीनासक
हंसप्तमीदिनास्तसमैवाणसज्जासोवत्तजोग
ननामकोः छंदसीचसुरसंधाज्ञोनकोपतनन
॥चतुर्दशीकर्णपंथनीनोनिजधामको॥अमाव
सत्यचोस्तयोधनविनासनये॥रत्रीसमैनीचव
ज्ञोनधुवमामको॥५८॥डुहा॥कवितामैसुंधीक
धगटचर्यकेकाज॥मंडनघटचनुवासविन
माकरनैककविराज॥५९॥मोहोरविग

०/ अरथनविगरनदीन॥ तातैयटअनुवासविनः छिमज
 कुदोषधवीन॥ ६१॥ संस्कृतजेविगरेसवदः ताकीनाका
 होत॥ ममकृतपद नष्टहिनिरधि॥ मल्लकुसुमकविवुधि
 पोत॥ ६२॥ नामस्वरूपहिदासको॥ अपदासज्युहोरी
 पार्थयायसद्विदिसवद॥ नामाकेमतसोरी॥ ६३॥ बाल
 मीकरवीव्यासशशिमाघादिकउडजोत॥ नायाकवि
 जंगुनकुङ्गा॥ कलनिसकङ्ककउद्योस॥ ६४॥ विधि
 बुधविधविधिवंधवधः बाधवेधज्योवेधः मात्रविगरिवि
 गरेअर्थः अपदासपटिसोधि॥ ६५॥ कारीजपधुरीए
 कविनः वारिजोसोरोयजाय॥ बुधजनलेषकदोष
 को॥ सोधकुचितलगाया॥ ६६॥ नगेपटावरपधुरीया
 होतफटावरसोरी॥ मात्रवरणविपरीततै॥ अर्थविप
 र्जयहोय॥ ६७॥ इगग्रहवसुअरुचंद्रमा॥ समतअ
 कगतिवामः॥ सुक्तचैत्रराकाशशि॥ गुंयजन्मसम
 धाम॥ ६८॥ इति श्रीपांडवयसेंडुचंद्रिकायं अपदा
 सहकृतमंगलाचरणअष्टादशार्पवस्तुविषयमन
 यः॥ १॥ इहा॥ मागायोजगमीतकुं॥ सादिसजुतसा
 गीतः॥ अपदासजिनकेनके॥ पुंछअंगपुनीत॥ १॥ इ
 दअलंकृततरसनको॥ करुंस्चिनकापत्र॥ वडुव्यास

कसामान्यपया॥ आदिहिवरननञ्चत्रा॥ २॥ प्रथम

॥ एकवरनकुं॥ आदौ॥ छार्इसवर्णप्रजंतसष्टविंश
वतनेदके॥ प्रथमदिनामकहंत॥ ३॥ छंदपछरी॥ ३
कता॥ २॥ अतउकता॥ २॥ यहप्रमानः मध्या॥ ३॥

तिष्टा॥ ४॥ कहिसुजानश्रुतिष्टा॥ ५॥ स्तुगायत्री

स्तिका॥ ७॥ अनुष्टुप॥ ८॥ कहीप्रविनः चहती॥ ९॥

अरुपत्ती॥ १०॥ माननेऊत्रीष्टुपा॥ ११॥ जगती॥ १२॥

तीजगती॥ १३॥ तेऊसरकरी॥ १४॥ अतीसरकरी

होतः अष्टी अतिअष्टी॥ १५॥ धृति॥ १६॥ उद्योतअ

॥ १७॥ कती॥ १८॥ वृत्ति॥ १९॥ अरेहआकृती

२०॥ विहृती॥ २१॥ जानयहसंसकती॥ २२॥ अनि

ति॥ २३॥ छंदवरणषस्तारको॥ तेरहकोटिकनीसं

सषसतरैसहसः कहिसतसतछार्इस॥ २४॥

एछंदकनछंदमो॥ नेदकछुनलयाया॥ तातेवरण

केकेरम॥ आगौकहंवनाया॥ २५॥ अथवर्णष

॥ २६॥ संव्या॥ २७॥ अरुप्रस्तारहै॥ २८॥ शुची॥ २९॥

हृत्वा॥ ३०॥ निष्टा॥ ३१॥ मेरा॥ ३२॥ पताका॥ ३३॥ कैमेष्टी॥ ३४॥

हीकर्महैअष्टः कोइवृत्तेऐते॥ वर्णकेरुपकेते॥ सं

करो॥ प्रथमवरणरहोयको॥ मलरुअंकविवा

संख्याडुगनेतेंडगुन प्रस्तारहिलोधारि॥७॥ पुछैरूपकैसे
॥२॥ प्रस्तारकरे॥ डहा॥ लककीसुधीरेषकरिः गुरुकी
वांकीरेया॥ आदगुरुसबलकतका॥ यप्रस्तारहिलेप
॥८॥ डहा॥ आदिगुरुतरधरिलका॥ अग्रसुआगेवेल
घटेवरणप्रस्तारदौ॥ गुरुकरीपीछैमेला॥ ९॥ पुछैयस
आदिकितेनो॥ असुलकआदिकिसने॥ कलध्वादंत
तनेगुरुवाद्यंतकी॥ शुचिकरेः संख्याकेपूर्णकिते
प्रथमअंकजोम्यंतः तेगुरुआदिरुअंतहो॥ तेनक
आदिरुअंत॥ १०॥ पूर्णअंकतेतीसरो॥ होवेअंकजि
कः गुर्वाद्यंततितैकहै॥ लध्वाद्यंततितैका॥ ११॥ स्
पलिषपुछैयो रूपकितरमोउदीष्टकीजे॥ वरननपर
अंतआदितो॥ ईकतेंडगुनधनैरिष्टः नकउपरकेअं
कमो॥ इकधरिदायिउदिष्टः॥ १२॥ पुछैअंतरमो रूपकि
सोछैनैष्टकीजे॥ वीकीकैतो नकलिषो॥ ऐकिगुरुल
धिलेका॥ एकीमैंईकमैंलके॥ बजरअरधकरिहेक
॥ १३॥ यंदीसमअरुविसमका॥ लकगुरुलधीतैंजाड
प्रस्तारहिकैवरणलं॥ अरधकरतठहरकं॥ १४॥
१ पुछैअतेंगुरुकाकतरअतरलककारूपकतर
मेरुकीजे॥ चौपरी॥ आदिशेषत्रयचतुरपंचथि

कस
८

वारणसंघाकोवाक्रमतैकरामिरुप्रमानयकोवा।
 किजि॥ अद्यंतयेककोअंकनरीजो॥ उपरकेदोयअ
 कमिलावो॥ दोयकोएनतरकोएनरावो॥ वरणमे
 रुअसेनरवाही॥ जोतेप्यंगलकीमतिपाई॥ १५॥ पूरे
 रूपकतरमा॥ २॥ पछेताकाकीजो॥ चोपशीवरननते
 इकअधिककोएकरि॥ इकतैडगनेप्रथमतादिन
 रि॥ आदिअंतकेअंकदकुंतरपंकतिछोडिओरउ
 लटीनरा॥ पूरणअंकतेपिछलेअंकनरी॥ घटतबवे
 सोइतरकुनिसका॥ विषगयोअंकफेरमतिलेपु
 असेवरणपताकादेखकु॥ १६॥ पूछेअंतरमीबस
 केनेद॥ मात्रावरणगुरुनफकेतेमकटीकीजो॥ चो
 पशी॥ बसनेदमात्राअरुवरणः गुरुनफउनाकोव
 करणः फिरप्रस्तारणकेमाफका॥ आडकोवेकर
 कुषटहीतका॥ प्रथमदिअंतपंकिकुंनरियो॥ अंकते
 अंकक्रमहितैधरियो॥ ६॥ जीनेदपंकिसंघाधरि॥ दो
 न्गुनिचोपीपंकतिनरी॥ चोपीपंकतिअरधअरध
 करि॥ पंकतिगुरुनफपंचछटीनरी॥ चोपीपंचमी॥
 अंकमीलावो॥ तीजीमात्रापंकतिनरावो॥ १७॥ डहा
 धुरुमत्रियाअरुबंडहो॥ तीनजातकेछंदावर्णाः

मात्रावरण॥३॥क्रमतेगिनऊकविदा॥१८॥प्रथमपुरुषछं
 दसुचि॥जगनजगनअरुसगनको॥आदिमधगुरुअंत॥
 यगनरगनधुनितगनको॥क्रमतेनघदिकहत॥१९॥म
 गननगनकेतीनही॥गुरुनघकरिजानि॥गनतेसुछिम
 छंदगति॥कहतस्वरूपवषांनि॥२०॥गेलनगेकंकरत
 गुरुनिजलकरहतनिदांन॥वरणसंजोगीदेतहो॥आप
 वडाईआन॥२१॥सुषमुषोच्चारणार्थगुरुरेबलघत्वा॥
 माप्नोतिः॥अेकमगनतेतारीछंद॥गोपीसंजेइसा॥श्रीसे
 संविश्वेसां॥अेकनगनतैकमलछंद॥निरतःकरतःस
 रितःफिरतः॥अेकनगनतैमंदरछंद॥माधवजादवमा
 रततारतः॥अेकयगनतैससीछंदः॥सुषोषः॥अदोषनि
 नासिविनासी॥अेकसगनतैरमनछंदः॥जमुनंगमन
 मेचवो॥रचवो॥अेकतगनतैपंचालिकाछंद॥शधेस
 गिसः॥आशधि॥गोसाधि॥अेकजगनतैगजेइछंदः॥अ
 पः॥अन्यः॥अमाप॥अपाप॥अेकरगनतैवियाछंदः
 रमतेः॥सामते॥एकहैःनामहैः॥दोयमगनतैसेयाछंदः
 शधेजीगावैहै॥प्यारेकूनावैहै॥वंसीमैंबोलेहै॥तांनू
 तोलेहैः॥दोयनगनतैमदनकछंदः॥मदनः॥वदनः॥दनु
 जकदनः॥रुचिरः॥रदनसुबतमदनः॥दोयनगनतै-

रछेदाश्रीधरपावना॥धोषवचावनः कोरव
पातनः दीययगनतें संषनारीछंदः विधात
वसीसंः रटैजोकतीनंः सुगोपीअधीनंः
लकाछंदः जननीः जमनाः॥अगकीसम
दाः सुयरूपसदा॥दीयतगनतें मथानाछ
जोतः वंसीरवंदोता॥चालीसवेवामा॥सी
यजगनतें मालतीछंदः त्रिलोकनरेंदः
निकंदनकंसविनाकरवंसा॥दीयरगनतें
दासधीदायका॥राधिकानायका॥गोपगोप
जोदालनो॥आरनगनतें मोदकछंदः गो
धे॥मो॥राधाप्यारेः जाकूंगावोमेदोसाधो
जीमें नाथोसोही॥मीकोतत्वा॥नक्तीजोगं
क्तिमत्वा॥आरनगनतें तरलनईछंदः
अथटरतनः वरतनमिलकरनरतन
मः कमसुनिमनः दिलसुधसुषुषदति
नगनतें मोदकछंदः केसवः जादवः मा
गोकलनमें नचनारचनाकरजेडुषदास
तका॥नामरटैकटिहैंसखपातिक॥अ
नंगीलंदः जजोचकिदायासकंदं मर

सादिकं नासकारी॥ अनेदं नरात्तानही को यश्चैसो॥
यस्वामी चिदानंद जैसो॥ आरसगनतैं त्रोटक छंदः जग
दीस हरि तै ज जये॥ त्रिसना मुषमै वसना तजि रेः जव
दास स्वयमिलै हरि जी॥ हम सांच कहैं फिर जो मरजी॥ २२
आरतगनतैं अष्ट छंदः एमार मानायः राजा त्रिऊ लो
कः संसार की त्रास हंता जुतं सोकः मायापती मोह राता
सदानंदः धाता पिता रामः आनंद के कंदः आर जगना
तैं छंद मोती दाम॥ अकामा॥ अबाधाः अनदि अनं पः
जवे जग व्यापक एक स्वरूपः अने पद दायक देव उदा
रा विन्तु अनयंड बिना सविकार॥ आर गरतैं छंद स्वर्गै
वेणी॥ देह दंष्ट्रा एदं॥ सत्व दं॥ बुद्धि दं॥ मान दं॥ लोक पंमु॥
क्ति दं॥ सेवक पोषक दं॥ आनंद के चंदर का जयानंद
हेनंद के॥ २३॥ इहा॥ अष्टमगनतैं॥ अरुमगनतैं छंदान
पावत रूप॥ तातैं वरन नना की ये समजिले ऊक विन्तु
॥ २४॥ आठमगनतैं कीरीटी छंद॥ आज प्रमान टनाग
रकी॥ ब्रय भान सुताटक अक निहारतः मोर पया चैके
मेचक की डती कुंडल के दिगने ननदारातः गुजन की
बहमा लगलै॥ पटपीत को भान ननैक विसारता॥ चातुर
ता मति आतुरता जुत बाल संजाग उद्योग विचारता॥ अ

क
१५

यगणतैमाध्यंछंदा॥ जहनायगोव्यंदविस्वसधाता॥
 दानंदरूपीसदानंदकारी॥ कसोनासकंसादिकोवंस
 हंसविन्ससामवंदावनंरुविहारी॥ तजेकामक्रोधंनजे
 लाईबोधंहरैतापतीन्॥ करेआपजैसौ॥ कहेअपरासं
 टेकालपासं॥ विरुलोकवासीनकोपुजतेसौ॥ २४॥ अ
 सगनतैडुर्मिलाछंदा॥ सवैयो॥ मनकोमिलवोजवही
 नयो॥ नयोतीयेकटाछनकोघनवोसुयसागरजानि॥
 सनेहकियो॥ नटनागरआगिविनाजलवो॥ तनकोमि
 लवोकरह्यो॥ अतिदूररह्योकुलमारगकोचलवो॥ रहे
 विननकोमिलवोवनेनवनेअचनेनकोमिलवो॥ २५॥
 इहा॥ अंतरंगसधितैकह्यो॥ जायसुनायहुगयाती
 कैरंगमलारमै॥ आब्रटकाललमाय॥ २६॥ यासवैया॥
 कीटीका॥ परलोकसाधनो॥ पदेशकयटशास्त्रसारखा॥
 न्याया॥ पातोजल॥ ३॥ वेधैसिद्धा॥ मिमांसा॥ विदांत
 ६॥ इहलोकसाधकयटउपशास्त्राकरन॥ १॥ कोश
 तर्का॥ साहित्या॥ सांगीता॥ नाटिका॥ ४॥ जिनमेंतैसा
 हिसहै॥ यासवैयाविषैसाहित्यकेयटअंग॥ प्रथमछंदव
 तिछाईसधाद्वितीयनायकाचतुर्था॥ तृतीयअलंकारअ
 कसोआवधा॥ चतुर्थरसद्वयसधा॥ पंचमीरीति ॥ १ ॥

छठी ध्वन्यादि त्रिधा ॥ एषट्ही स्त्रंग या सवेया विषे जाहर
कीया जायगा ॥ वाणी होय ॥ देववाणी ॥ संस्कृत ॥ लोकवा
णी ॥ भाषा संस्कृत विषे सात विनक्ति जाहर होत है ॥ समा
सात नी होय ॥ भाषा मे विनक्ति समा सात है होय संस्कृत
विषे ॥ १॥ वचन द्विवचन बहुवचन ॥ छे सो ॥ १॥ छे तो ॥ २॥
छे जो ॥ ३॥ वचन मातीने ॥ १॥ साने ॥ २॥ तिनूने ॥ ३॥ द्वितीया ॥ ती
करा ॥ १॥ सांकरा ॥ २॥ तिनूकरा ॥ ३॥ तृतीया ॥ तीके अर्थी ॥ १॥
तिनूके अर्थी ॥ ३॥ चतुर्थी ॥ तीतो ॥ २॥ तिनूमे ॥ ३॥ पंचमी तीकूं
॥ १॥ साकूं ॥ २॥ तिनूकूं ॥ ३॥ षष्ठी ति विषो ॥ सा विषो ॥ २॥ तिनू वि
षो ॥ ३॥ सप्तमी भाषा मे ॥ १॥ वचन बहुवचन द्विवचन न
ही ॥ संस्कृत विषे स्त्रिलिङ्ग पुलिङ्ग नपुंसक लिङ्ग भाषा वि
षे स्त्रिलिङ्ग ॥ पुलिङ्ग नपुंसक नही ॥ न्त न विष्यत वर्तमा
न परे सप्तमसा ॥ सं ॥ भाषा हो नो विषे होय संस्कृत विषे
५॥ अनुदास होय असा नुदास होय मही ॥ भाषा मे होय
जाको तुकांत मोहोरे नेटी कहत है पार ॥ सी मे का कीया क
हत है ॥ संस्कृत विषे नक्षको गुरुती न गोर होय विसर्ग दि
संजोग दि ॥ तंकांत ॥ भाषा मे संजोगा दि गुरु होय विसर्ग
तंकांत ते नही ॥ स ॥ विषे संधी सुरते विसर्ग ते हसते अ
नुस्वार मे भाषा की संधि नवको नोजवको ॥ जो विनवको

॥ नो नय को नैः नय को नै वि नय को वि नैः ऐसे होय ॥ सर्व
 ॥ होय ॥ ऐसे पाय को पाय परय ॥
 ॥ विवैहकारणकार ॥ नाथामें छकार न कार संस
 कृत विवैहती ता न विमर्क्षि स राख होय ॥ नाथामें सकार
 ॥ यकार को जकार भी होय ॥ सं ॥ न छ दी धि पुन
 नाथामें न छ दी धि होय ॥ जामें नाथामें
 छंद ॥ छंद होय प्रकार को ॥ मात्रावरण जामें वरण ॥ वर
 ण छंद की छाई सवति जामें चौदीस वरण की संस कृती
 ॥ वती जामें प्रस्तार के प्रमाण तै एक को ड सत सव नय
 स सो तर ह जार होई सै सो ना छंद होय तामें ॥ अको तर न
 य असी ह जार होई सै तीस मास्थान को रूप ॥ अष्ट सग
 एतै इमि ना छंद ॥ कंक कनक की गहर गुरु होय उच्च
 रमै न छ बो लै तो होय नही ॥ सुष मुषो चार ० २ ॥ १२ ॥
 जामें ॥ जगो ना ॥ ५ ॥ अचल आलवन विषा व विषो रोड ॥ न
 करुण ॥ विनछ ॥ ३ ॥ वीरा ॥ ४ ॥ दासा ॥ ५ ॥ नया ॥ ६ ॥ अज्ञत
 ७ ॥ इन सात नमै ॥ अंतर विकार स्याई संचारी ॥ अदि अ
 ग विकार सातिक अनु नावादिक स्थिरी भूत नाही ॥ अ
 गारा ॥ साति ॥ २ ॥ वास ॥ ३ ॥ दासा ॥ ४ ॥
 नमै मन विकार संचारी ॥ ३ ॥ स्वनिमिते परनिमिते

गनता॥६६॥ प्रकारनएसब्दस्वरसरूपरसगंधेभः पंचग
 नततीनसेतीस॥३३॥ नयेअसेहितनविकारसांतिक।
 दसधागुणोक्तियेसतधानएसान्तिकआदि॥१॥ औरअ
 नेकनावसोतोस्थिरहोतहीनाहीपरंतुअंतरविकार
 स्याईरति॥१॥ निर्बेदा॥२॥ ममत्वा॥३॥ विनया॥४॥ रदसा॥५॥
 एस्याईऔरवाह्यविकारछिधाविभावआलंबनऔर
 उदीपनइनपांचक्रमेंजादरस्थिरीभूतदरसेहै।इन
 पांचमुख्यरसनमेंअंगाररसेहै।पाडरमित्तविरमेर
 तिस्याइतोहैईविभावआलंबनतोनायकनायकाज
 दीपनपंचधा॥सब्दस्वरसरूपरसगंधजिनमेंरूपतीकै
 षट्छस्मरणअंतरंगसषीआदि॥विवरणसांतिकसो
 ईअनुभावहै॥आगविनाजलबोयासब्दतैजानोजात
 है॥वचनभीअनुभावहै॥चितादेमादिकसंचारीहैही॥
 इनपांचभावतैरससुष्टहै॥अगारछिधा॥संजोगरुवियोग
 गजामेंवियोग॥२॥ सट्धाअथमप्रवासछिधाभूतनवि
 व्यतडजोमानचतुर्धनिका॥१॥ मध्वा॥२॥ गुरुआवणया॥३॥
 तीजीकरुणत्रिधादैहिकदैविकभूतकचोथेपुरवानु
 रगत्रिधालोकमजादावेदमजादाकुलमजादापाचमो
 स्नापाजन्यछिधादेव॥मनुष्यछुगोषयोजनोद्भवत्रीधादे

॥ काला ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ ३ ॥ अथैसैसर्ववियोगसप्तदसधा नयेजि
 ॥ संजोगमै ॥ १५ ॥ हावकोईकवि ॥ १५ ॥ कहत
 ॥ वयोगमै ॥ १५ ॥ दशा निनामा ॥ १५ ॥ चित्ता ॥ १५ ॥ गुनकथना ॥ ३ ॥
 ॥ १५ ॥ उकेगा ॥ ५ ॥ पलाया ॥ ५ ॥ जडसै ॥ ५ ॥ उन्मादा ॥ ८ ॥
 ॥ मरणा ॥ १५ ॥ जनमेउकेगसुषदवस्तुडयदहोय
 नीतैअनीलायानीहै ॥ अंतरंगसखिहूनायकानेकह्ये
 ॥ १५ ॥ अनेकारकेप्रकारकेसामान्य
 जाकेतोअनेकधा नेदवसीहसोअेकसोआवधावसिहके
 अंगविषेविषमाआघातशब्दनकारविषेअटअनुवास
 दया ॥ १५ ॥ छेका ॥ २ ॥ नाटा ॥ ३ ॥ जमका ॥ ४ ॥ अति ॥ ५ ॥ असा
 जिनमैछकालाटाअंसानुवासहै ॥ नाशकाचारप्रकार ॥
 कीप्रथमअंगनेदचतुर्थी ॥ द्विजीप्रकृतीनेदत्रीधाती
 जीवहीक्रमनेदासटधाचोथीकालनेदपंचदसधाजि
 व ॥ कतिनेदत्रीधास्वकिया ॥ १५ ॥ परकिया ॥ २ ॥ सामान्य ॥
 जिसमैपरकीयापरकियाछप्रकारकि ॥ ५ ॥ विदग्धादिधा
 लखिता ॥ १५ ॥ प्र ॥ ३ ॥ अलंसया नाचतुर्धा ॥ ४ ॥ गुप्तात्रिधा ॥ ५ ॥
 मुदिताअेकप्रकारकी ॥ ४ ॥ कुलटाइकजिनमैस्वधपरकी
 यातयालखितादरसणचतुर्धाअवरण ॥ १५ ॥ स्वद ॥ २ ॥ चि
 त्त ॥ ३ ॥ सारखात ॥ ४ ॥ जिनमैसाव्यातप्रकृतीत्रीधासातकी ॥

० राजसी॥२॥तामसि॥३॥जी० राजसीयांचरुकोसविषैच
 निव्यायककेकेवचननिकस्योहै॥अन्नमया॥१॥प्रा
 णमया॥२॥मनोमया॥३॥विष्णुमया॥४॥आनंदमया॥५॥
 ध्वनीतेकाकोक्तीअलंकारकाकनीनीहोतहैमेघकी
 नार्यामह्यारगनीमैगवेंहैसंधुर्नयाकीजातहै॥आ
 रोहीअवरोहीविषेय॥१॥री॥२॥गं॥३॥म॥४॥पं॥५॥ध॥६॥
 नी॥७॥सीतदीसुरबोलेजातेतालजलदतेताहोमा
 ह्यारगनीतैकालध्वनातैवरषारितुजिताईवरषा
 कीसामग्रीसोमीसुषदाइहै॥परंतुडुषदाइकेकेविर
 दअसंतबदावेहै॥मयरवीक्षतचातिकादीइतना
 प्रसोतरसाहिसकै॥कवित॥छंदश्लोकदोहासर्वविषे
 विचारबोकोईसाहिसकुसलदोयजाकोपुछनाका
 ईछे॥जाकोउतरकरनासोईकविहै॥आंगकेकवि
 त्वनमेंअैसेहिविचारीयोअंककणतैसर्वअन्ना
 कीपक्षताजाणियो॥२॥आवतगनतैकरेडछंद॥
 बाधाहरेमायराधापतीदासकीसामकामारिकेईछे
 आधार॥एकाग्रतामोरतोपांवकेध्यानकीराधियो॥देव
 देवाधिदातारः बोलैसबैवेदसोनेदपावेनही॥और
 काजीवजानैमदाराज॥कांगवैकाहापीवपावेकहां

क
 १

। आपकी जोर माया मित्रो आज २९ । आवज
 गनते जीव कछुदः अपार अणान मित्रो इह जीव क
 रे सुदयात वपावत पार अनायकु जीव सनायक
 रे ॥ ईलधारन पालन देव उदार कृपानिधकारन केतु
 मकारन वेद उधारन पाप विहार सदा कर जोरि धुका
 रत श्री धर बोध मिलै जुतन क्लि विचार ॥ २९ ॥ आवर
 गनते बोध कछुद ॥ एमर जीवना नीध सो मंड कुप
 ड वै शर सारै रचै एक द ॥ बसु कूंदै अजाधी स ओ सो प
 हं से स पाई ॥ रदै आप नारे सदा ॥ अं स कूंदारि के विश्व
 कंधारि कै उष्ट्र कूंदारि कै टारी ताप हरी ॥ हास कूंतारि
 कै कीत विस्तार कै पारि कीने नृतन आहते ज्युं करी ३०
 ॥ मात्रा एक द लकी ॥ १९ ॥ अठार पर विश्राम ॥ चो पई ॥
 या छंद ॥ मात्रा ॥ २६ ॥ छार्ई सच वदा पर विश्राम ॥ वेता
 ल छंद ॥ इसादिक विया छंद जानी ये जा मै गुरु लक
 वर्ण को प्रमाण नाहि ॥ अथ न पुंस कछुद ॥ दोहा ॥
 तेरह ग्यारह मात्रा फिरा तेरह ग्यारह जोय ॥ सो दोहा विप
 रीत तै होय सोरठा सोय ॥ मो दोहा पर जग ल केत ग ल हो
 य ॥ सातैं संडु ॥ सोला मात्रा अंत जग ल सोय धरी ॥ सोला
 मात्रा अंतर गुरु सो पादा कुल क पद मो ॥

०८ स्तर होय ॥ सोलापनरापर विश्रामा ॥ अंतास्तर गुरुमनहर
 छंदः जाकुं पिंगलैक वित्त्व कहत है ॥ परविषी ॥ ३२ ॥ वती
 स अस्तर होय ॥ सोला अरु सोला पर विश्राम होय ॥ अंतास्तर
 रत्न कहोय ॥ सोधना नाहरीय नमै ॥ गुरु रत्न वर्ण को नेम
 है ॥ अरु नही है ॥ जाते न पु संकहीये ॥ ऐसे ही योर कहै
 वो दोत सजले नो ॥ ईति श्री पांडव यसेंडा चंडिका वि
 ति यमदत्ता ॥ अथ लंकार सुवि ॥ ३३ ॥ वरु अयन
 विकसर्व है ॥ नेह गिने बरु होय ॥ अति व्याप्तिके दोष ते ॥
 चोरा सीमुख जोय ॥ १ ॥ जानै जात सुख ब्रतें काम परे व
 ऊठोरा ॥ अलंकार मुखि कहहु ॥ ग्रंथ बदे विध और ॥ २ ॥
 अथ उपमा सुचिका ॥ धरम और उपमेय है ॥ उपमा व
 चिक अना ॥ कोमल हरि पदकं जसे ॥ कमलै उपमा जानि ॥
 ॥ ३ ॥ अष्टक सोपमा ॥ चंद्र बदन सीतल सरा ॥ यल कुमि
 न सेने न ॥ राधे जी के पद कमल सखि महरि कटि अंन ॥ ४ ॥
 रमा सद्रस रत्नावरण है ॥ पिक सी मीटी वानि ॥ हे हरि दाडिम
 सेद सना ॥ हंस गमनी करि जानि ॥ ५ ॥ पदयादिक उपमेय है
 ॥ कंज दिक उपमान ॥ विविधि धर्म सामान्य अरु कहत विसे
 ष वधानि ॥ ६ ॥ सीसे सो ज्युं रुद्र वेस मतुल्य सद्रस समान
 मनो आदि वाचिक जहा ॥ श्रोती उपमा जानि ॥ ७ ॥ नवरध

क
 ९

यश्चास्वाणश्चवर्णाकतगुणमोनि॥धर्मसु
 कारयो॥समद्रुजसैनसुजा॥८॥सिता॥९॥मिचका
 हरिता॥१०॥धसरा॥११॥अचाकारा॥१२॥नोहिता॥१३॥मि
 छिमा॥१४॥आदियेधर्मवरणकरिधारा॥१५॥
 घा॥१६॥सुछिमा॥१७॥पुष्टा॥१८॥वक्रा॥१९॥अवक्रा॥२०॥
 घृणी॥२१॥आवर्ती॥२२॥पुनिसुब्रता॥२३॥विकोणसु
 हा॥२४॥तीक्ष्णा॥२५॥मंडलसहिता॥आकतध
 हि॥कोईकोई॥आकतदंडा॥अरण्यनवीचसरद
 ॥२६॥कगोरा॥२७॥चंचला॥२८॥अचला॥२९॥सुबदा
 गतिमंदा॥३०॥अवर्णा॥३१॥वर्णि॥३२॥सति॥३३॥म
 मित्रि॥३४॥अगति॥३५॥सदागति॥३६॥कंदहर
 री॥३७॥हूरस्वरा॥३८॥सस्वरा॥३९॥मकरा॥४०॥
 ॥४१॥सीता॥४२॥तपतजु॥४३॥कहतहो॥गुण
 रूपा॥४४॥उदाहरनइनसबनको॥कीनोकेसव
 करतजु॥सम॥द्रुजबुधिनिवासा॥
 मोदाहरण॥स्वेतकृष्णअरुअरुनकता॥पीतद
 रि॥आरुकोअवकरतहो॥उदाहरनउच
 तोदाहरन॥धनादारीछेदा॥बलवकहीरा
 ककासनस्मकाचं॥आदिघांडहांडकरि

३०

५

निः चंदनवरहंससत्यजगद्गुह्यसंयुतगुणनफटीकसीपच
 नोससिसेसननि॥गंगोदिकशुक्रशुभासारदासरदसिंधस
 तोगुनसंकरसुदशनफटीकमनि॥सांतिहास्यउचीस्ववा
 नारदा॥अरुणारदतैनुजरेअधिकमनिअैसेहरिदासध
 नि॥१३॥रुहोदाहरन॥कलिकाककोकीलकचकी
 चकाचकेकीकोधकरीकालीकलाकोलकजलकले
 कमानि॥कलकांमकलहकुंसंगकालकूटकराकुज
 सकरवालतमपापपुंजलौवयानि॥बेधाचलतानबछ
 आसवनआलव्योमडोपदीजलजावजमुनाअत्रता
 नानिमगमदअंगाररसनिरयनिलतैलकुतैकारे
 अधिकहरि॥विमुषनकेऊदयजानि॥१४॥रुहोदाहर
 न॥रसनाअधरपलकंदरीपकीडुगंततलकसिंदर॥
 औरहीगुरुवयानिहै॥हाडिमपलासकासमीरओज
 सलकूनसारसाअरुकुरकुटकेसिसअनुमानिहैमां
 निकयद्योतईडुगोपकुजपावकहै॥किसलेमजीवरक्त
 चंदनपिछानिहै॥रोडरसमहावरगेरुधिरसंधारजो
 नीविषयनिकोअैसेमनजानीहै॥१५॥पीतोदाहरन
 वानरविधाता॥औरवासवजेहरदतालरंगहाटि
 योसे॥चकवाकचंपकहै॥चपलाचमेलीसो

चनगायमुन्नखुरवतायोसोपीतरपरगमेरुगंधकमलको
 सकेसरकोरं सो कविसुरनगायोसो॥ वासुदेवपीतवास
 कंसकाजकवीकसोईनतेविसेयसुनोवीररसछायोसो
 १६॥ इतिवर्णोदाहरमः वीपरी॥ त्रीयकेनीदरुकोपञ्च
 हारः इगपुतरीअणुलक्षचारः वांमनदंडमेरुदाताम
 ना॥ आतमवितदृष्टीदीरघमनि॥ त्रीयचित्तकेहरकंटिके
 सा॥ सुष्ठिममायाब्रह्मविसेसा॥ त्रीयनितंबकुचकरिकुंन
 स्थला॥ षष्ठकीयेवरनतजैकविनला॥ १७॥ नृहकटाछा
 अलकधनुअदिगति॥ कोलदांतवक्ककविलनकीम
 तितोमरबाए॥ दीपयिरनासा॥ सरलमतीजैहरिकेदास
 ॥ आननअंबुजवेमप्रकासः संपुरणआदरसआकास
 चकरीचक्रअलातचक्रगनि॥ फिरआवर्तकुलालचक्र
 ननिः कुंचकिडकविलादिकअडासरतआरा॥ कहीये
 ब्रह्मंडा॥ महिचिकोणअरुवज्रसिघोशपांचतत्त्वला
 जागुरुधारे॥ नैनवांननयतोमरतीछनः मंडलमुद्रिका
 कुंडलकंकना॥ १८॥ इतिआरुतः॥ किसलयकुसुमर
 रिजनकोमना॥ वांलककविवांनीमृडतागनि॥ उपल
 अस्तूरमकीपीठः वज्रकविनपुनीडरजनदीठा॥ मी
 नमकयमरकटमनमाया॥ छलरूपनोजोवनघनछाया॥

विद्यतमारुदचलदलकेदल॥ध्वजपटत्रीयचषा॥आदि
 कचंचलअचलमेरुध्वसंतनकोवित॥सुयलसुपतसु
 वीयासुषदमति॥कुचतकुचामकुचुधिकुस्वामी॥चषा॥
 आसादिषगामी॥कुलत्रीयहासमंदहसत्रियगतिःअव
 लधुंगअरुगगरेगजता॥अंधछुधातुरत्रियअरुवा
 लकःअधिरअनायतिनिहिहरियालकःबालतीमह
 नुपवनकालजमःससबलसबजगतमूवन्नमजीवन
 गतिःजलप्रवाहमनमरुतसदागति॥कूलतलत्रनके
 नफोरेअति॥हटिकपारदसीसोपरबताईनकंकविना
 रीकरिवरनतःकाकउल्लककोलमहीषीयरशिवाक
 रनअहिआदिकुरस्वरःगेरिगिरिसगनेसगिराकोर
 विरो॥उगमदानकहिताकोनलदमयतीसीतागमःरूप
 अस्वसुरेतेतिअरुकामःचंदनचंदकपुरसाधसंगःतु
 दिनपवनकोहैसीतलअंग॥दिनमणिचित्रभावुतपरे
 गःओरतपतप्रीयतमकोसोग॥१८॥इतिगुन०आह
 तोदाहरन॥सवेया॥लघक्रीधअनुणमनदीरघम
 रुहरिकटी॥कुंनकरिकुचदैतनःजगन्नेहधनंधिरही
 पकनासिकाकंजमुषीचकरीहरिकोमनःकुंचकंचन
 कीडकलानसंधारे॥माहागुरुलाजदेवाणसेलोयनः

१६

करकंकणमुद्रिकाकुंडलरथकेमंडल ओपमाआकृत
 एगनि॥१९॥गुणीदाहरन॥पंकजसेपरहीरकनीरदा
 मीनसैनैनहैसंतनसोचितः पीवतपतीव्रतआधीनआ
 धनः हंसगतिअवलनिमेक्षितः कालरूपैवलव्रत
 मनोव्रतः मायोकोकेलविरंचकूपैमतिः ओमविनागति
 अष्टसदागतिः कूलतैफोरिहैभारिगिरिगति॥२०॥काक
 सोनासुरकोकलसोसुरदाससीबानिमहेस्वरसोदता॥
 गोरीसौरूपहो॥सीतबुहिनसोतापदनेससोराधिकाएजत
 जाकमहोहमवीचहैताक्रमविचसवैयनसोधिमहामत
 ॥राससरूपविचारकैदेखिये॥आकृतआरसुनावरुकी
 गति॥२१॥उपमेयकूउपमानहिहोयअनन्वयअलंका
 रः ॥३॥काउपममाहैआपका॥नोकस्यसुतनानः उप
 मानगैसआपकीः आपसंद्रसकोआन॥२२॥दोषकूंगुन
 मानलैनोसोअनुष्णअलंकारः॥एकनावकूंदवावतह
 जोनावप्रगटसोनावसावत्कहियो॥दोउकोउदाहरनः
 मीचउषदजानोमतीमहागुरुहैमीचा॥अपदाससासुमर
 ता॥मरहरिसुमरेमीच॥२३॥एकगोरएकवस्तुमैगुन॥
 ओगुनमानैसोलेषअलंकार॥हरषविषादविरूधनाव
 किसंधिहोमकोउदाहरनः छिनछिनउमरिघटलधि॥

३० यो हरम-अरुसोकः धनितैवकता अवसताः लयिदेवु।
 भिजनु लोक ॥ २४ ॥ आदिकोपद-आदि अंत को अंत बंधा
 जोग्य चदा हरन ते जया संष्य अलंकार विषाद नाचोद
 यः कं सिगार सौभो पहरि किय विय राग उच्चार ॥ अंधि।
 रोपीन सजत वधिर हेपिय रषण हारा ॥ २५ ॥ निद्या मे स्तु।
 निसो व्याज स्तु मि अलंकार चिंता नाव संधि ॥ हरिक गोर
 दासनिक रतः निरधन अरु निह कां मा ॥ दास अपवक स
 त डुय नि ॥ धर्म नि डर ल न धां म ॥ २६ ॥ स्तुति में निद्या होय
 सो व्याज निदान अलंकारः गेद पधारो सास कहे अरो
 वरु जी आया ॥ द्वार देहरी कूं यरी ॥ एरी सकुल अपा पः
 ॥ २७ ॥ या कूं विपरीत ल छुना निकहत है ॥ वरु वाचि अर्थ
 कारण के लिये यद फेर फेर ग्रहण होय सो एकावली अ
 लंकार ॥ पद प नृत न नृत तत रु ॥ तरुत रु को कि ल षंड
 षंड षंड पत म कर सर सुरा ॥ २८ ॥ मदन पचंड ॥ २९ ॥ यामे
 पद मुक्त ग्रहण मुक्त ग्रहण होय पद फेर फेर ग्रहण हो
 वीय सामें दै न्य को ध विच मानिः एक हि प डे त्रय वषत ॥
 देवीय सा जा नि ॥ ३० ॥ धन्य धन्य तु म धन्य तु मः रक व
 दर सध नं द ॥ तिष्ठति नृनि सचर समरः कही सब कीये पां
 निकंद ॥ ३१ ॥ करता साध्य और नोक्ता सिध और तै ३

धा-अलंकारः रागबागवीयपट-अंतरयट-सनवरससोय
 ॥ करतासाधेककृकरि ॥ नोक्तोक्ता-आरहीहोय ॥ ३५ ॥ गुनदे
 यकोकरताएका ॥ नोक्ता-अनेकसोप्रसिधा-अलंकारः सतद
 रचंदराजानको ॥ पुरकियस्वर्गप्रयाना ॥ सतकारतारावन
 करीः गयेकदुमकेप्रान ॥ ३६ ॥ अर्थापत्ति-अलंकार-बदे
 जातगजराजजितः कितंचीटीकृपाहः दरसेअधहरां
 गजलपरसेअरनुतरह ॥ ३७ ॥ मिथ्याधिवती-अलंकार-
 ॥ निरजलनयलबोएअरक ॥ अंबचढेजोहया ॥ ग्यानन
 क्रिवेरागविन ॥ तवरहरिमिलेसुनाय ॥ ३८ ॥ जायदारय
 केजतनकूंदतसोइपदारयमीलेतीसरेप्रहर्षणा ॥
 -अलंकार ॥ दंडतजांकारनगुस्त ॥ पायेदरीमाहारज ॥
 -आरपदारय-आदिहो ॥ नयेसकलसिधकाज ॥ ३९ ॥ अलं
 तर-अलंकार ॥ हेगुरुकवपावैसुदरि ॥ हासनकूंकलिक
 ल ॥ क्लिसहयवयरगमन ॥ हाननिरुपयचाल ॥ ४० ॥ वि
 रुधकारणतौ ॥ कारजकीप्रगतोटेपंचमिविजावना-अ
 लंकार ॥ नईनगनलपिजोरिचय ॥ गईअंगुष्टवताय ॥
 मुझजोनववेमई ॥ नईबयानेनाय ॥ ४१ ॥ साहेमैचोरै ॥
 देकेवकुतलेनोसोपरजत-अलंकार ॥ दैकटाछहरि
 तनकसी ॥ जीनेमनधनप्रानः बुधिविचारसंयदेचुकी ॥

सबकुलमानसयाना॥३८॥निजगुनतिजगुनसंगको॥गरे
सुतदगुनजानि॥संगतमैगुननाखेगै॥ताहिअंतकुना
मानि॥३९॥इष्टसाधकैसाधकी॥संगतिकरिपलनआध॥इ
ष्टसंगकरिसदयदिना॥होतनसाधअसाध॥४०॥संगत
मैपुखगुनबधिमावैसोअनुगुनाअलंकार॥आगेहि
हनुअगाधबल॥पायगमसिरदारा॥छलमैकुलनि॥
सचारकोकोनकरेसंधारे॥४१॥वखेछामनुजनस
वदःवसुहेतुफेनहोयओरेओरेसबदजहा॥तेहका
तिहेसोया॥४२॥हरिपदमानुजहो॥सियमुषहेजनुचंद
॥कविमुयकीबानीनको॥ओरेपठतअनंद॥४३॥यहन
हियसोअकुतिदृष्टरूपकजानि॥किंधराब्कीसष्ट
तहासंसयकहतवयानि॥४४॥बदरानहियेकामके
॥तनेवितानविसालःबालकिंधहाटकलताकिंधके
तकीमाल॥४५॥हेउलेयसोईएककुं॥बहुसमजेवा
ऊनाय॥त्रियनिकामहरिसंतहेतकंसहिकालनवा
य॥४६॥काहुकोगुणदीयकाहुयेपरेसोविधकरणोक्ति
नामैअंतरभूतप्रथमकोअसंगतिकारणकऊकारन
करुंदहतपनोलीयनकरै॥मनपावतहेतावा॥बोडनईप
दउटकै॥हीजेयरकेडावा॥४७॥येकक्रीयापदकुंतयादे

हरीदीपवत्पदकंबुजवेरा॥ अर्थकरदण
 काकेकोअलंकारः हरिसदृशानदिवीसर
 त्रीयासदेव॥ साधजगतपतिस्सामको॥ जीव
 व॥ ४॥ ककारतेनास्तिककारनकारतेअ
 धनीतेआवेसोकाकोक्तिअलंकार॥ अग्निस
 काष्टतै॥ सिंघकीसरीतापाय॥ कालकीनहण
 कित्रीयाअघाय॥ ४॥ एकनागग्रहेतेसोष
 जायसोसेषनागज्ञापकालंकारः एकेनावे
 ॥ अनावकैसागः होयकिग्रहिवोसागतै॥
 कुनाग॥ ४॥ पापरिषदमेंएकहीः यहैविड
 नापरिषदकेबीचमेंमोहियज्ञतंमंनि॥ ५॥ स
 दिकवनस्पतिषावस्तुनंदनमाहिः विनयअ
 एकलहोयअधममेंनाहि॥ ५॥ एकोनेक
 पका॥ अरोनंअलंकारनवीनहै॥ असेहीनवी
 विष्यतर्वतमानपरेसप्रतसउतममधामक
 एकारिजआधारआधेयनोमविनोमनेर
 दहोतहै॥ वरुनाका॥ ६॥ इअओरगुणा
 ५॥ पुनिसामान्यविसेसः हेसमवाया॥ ५॥ अना
 रायअसेस॥ ५॥ न॥ ५॥ अपतै॥ ५॥ ज॥ ५॥ रुवा

हिमा॥ धाकाला॥ ७॥ आकासा॥ ८॥ आत्मादी॥ ९॥ नवद्रव्यहो गु
 णको आश्रयतासा॥ ५३॥ क०॥ रूपा॥ १॥ रसा॥ २॥ गंधा॥ ३॥ स्पर्श
 ४॥ संख्या॥ ५॥ परिमाण॥ ६॥ आदयश्चका॥ ७॥ संजोगा॥ ८॥ ओवि
 ॥ नागा॥ ९॥ गुणगान्धियेयरत्वा॥ १०॥ अपत्वा॥ ११॥ बुद्धि॥ १२॥ क
 र्त्वा॥ १३॥ डरव॥ १४॥ रूपा॥ १५॥ डिया॥ १६॥ प्रयत्ना॥ १७॥ गुरुत्वा॥ १८
 ओद्रवत्वकरिमानिये॥ सनेहत्वा॥ २०॥ संसकारा॥ २१॥ धर्मा
 २२॥ अधर्मा॥ २३॥ शब्दा॥ २४॥ चतुर्विंशसंख्या मतन्यायतेवष
 नियेः पांचकर्मठेसामान्यविसेसचनंतविधः आरहेअ
 नावताहिटीकातेयछानिये॥ ५५॥ वार्ता॥ चक्षेयणः॥ दृक्अ
 क्षेयण॥ आकुचनः प्रसारणः गमनएतानिपंचकर्मणि
 सत्तारूपं परसामान्यं॥ जातीरूपं अपरसामान्यं॥ प्रागभाव
 प्रध्वंसाभावः असोमाभावः असंताभावसप्तपदार्थना
 विषेद्रव्यगुणकर्मकेसमवायश्रेकतात्रयेजातीनशीसा
 मान्यत्वतैतामैविकीनईविसेसत्वजातीगोतजाने॥ नाम
 रूपजांमो जायअंगपुच्छकवलनईहेरूपा॥ गयनामः वि
 क्तिविसेसज्ञानः कालीपीत्नीघोलीषांडीबांडी॥ नाडिरूपा
 हि सर्वपरजातीनामरूपलण्णोहो॥ तातैशब्दव्रतियरूपा
 नियेः आम्रवोकांसद्वआम्रजयार्थविक्लाकोवचनः वाक्य
 पदनकोसमूहः यथागमानयशुक्लरंढेनितिशक्तंपदं॥

अस्मत्सहायमर्थबोधयोगः॥ इति ईश्वरशक्तिः॥ घटकं
 हेतुं घटजान्मो जायपटनंहीजान्मो जायश॥ हे ईश्वरशक्ति
 ॥४९॥ आकांक्षायोगतासन्निधिश्चवाक्यार्थज्ञानहेतुः॥ पद
 स्पपदंतरमतिकरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाका
 क्षाअर्थः बोधोयोग्यता॥ पदानामवित्वंवेनो॥ चारणं सनि
 धिः आकांक्षादिरहितं वाक्यं न प्रमाणम्॥ यथागौरश्चधुस
 याहस्तीति न प्रमाणम्॥ आकाक्षाविरहात्॥ अग्निनासिंचेदि
 तिनं प्रमाणं योग्यताविरहात् प्रहरो॥ २५॥ सहोच्चारितानि
 गमानयेसादियदनि प्रमाणं सन्निधौ नावात्॥ ५६॥ इहा
 निकाक्षारुच्यमोग्यता॥ असात्रिभूतात्मागिहोवैसद्यसम्
 हतौ॥ आसवाक्यस्तुनिपागि॥ ५७॥ अव्याप्तिश्चतिव्याप्तिः
 पुनि॥ रोच्यसंनवहोय॥ इनेति नरुं कूं समजिकरिसद्य
 चतिकोजोय॥ ५८॥ गोहया॥ ५९॥ सीवकुं अग्निकरि॥ ६०॥ प्रह
 रंतरउच्चार॥ ६१॥ गोकपित्नागोश्रंगतौ॥ ६२॥ गोयकसुरतौ॥
 धारि॥ ६३॥ पदा॥ ६४॥ पदंसा॥ ६५॥ वाक्यार्थी॥ ६६॥ जेः रसा॥ ६७॥ ह्या
 नविधिपंचईनकेअंतरभूतहै॥ समरुद्रवृक्षस्तुनिरंच
 ६८॥ नार्ताइनहोमणरहितशब्दवृत्तिरुं विचारवोशब्द
 ति॥ ३॥ रूढिः योगरूढीः योगकः कथाब्रह्मकोवृज्याकूं
 दिवकीहीयेअर्थः रदितवादिटवेमैवरतैसोरूढी॥ ५८॥

जकमलः पयोदमेघः पंकसुषगटहोः और ऊते पंकजन
ही कहाय ॥ जलके दे न हारा ॥ और ते पयोद नही कहायः वि
ना मेघ सो जोग रूटी ॥ जलजकमल कुं नी कहीयेः रंडुमु
क्तादिक कुं नी कहीयो ॥ और न विषे रू अर्थ वर ते जातेयो ॥
पकः मुखार्थ छोडे ॥ तथा मुखार्थ लगे पोर दो ॥ उपर ते आवै
सो लछु ना गंगा यो घोषः गंगा शय ॥ अनिधाः बिसे अर्थ छो
उतीर थको अर्थ गुहल करै सो लछु ना ॥ तट के विषे शितल
ता पावन ता आदि ध्वनी ॥ अथ चतुर्विधिरिति शब्दालं
कारः ॥ दोहा ॥ ध्वनी आत्मका का मको कहत नरत मत
गुंथ ॥ कहत आत्मारीति कुं ॥ वामन मत को पंथा ॥ ६१ ॥ गोदि
के विच ओज गुनः लाटी गुन परमादः वेर नी पांचालि
विचः गुन माधुर्य सबादा ॥ ६२ ॥ अथ गोडी ॥ वर्ण संजोगी
दिवर्ग मया रचना बंधन छंद ॥ अर्थ जु ब्रुत समा सते गो
डी कहत कविदा ॥ ६३ ॥ सम सल छन ॥ सो ते ॥ १ ॥ नो ॥ क रि
३ ॥ ओ ॥ अ र र्या ॥ धा ॥ ते ॥ ५ ॥ कौ ॥ ६ ॥ मौ ॥ ७ ॥ न समात ॥ वा हरि सा
त वि न क्तिको अर्थ समा सल माता ॥ ६४ ॥ नाथामें इव ब्रुव च
नः नदि ठि वचन कहाई ॥ है स्त्री लिंग पु लिंग है ॥ निपु सक
नां हिल याय ॥ ६५ ॥ गोडी को उ दाहरन ॥ टेटी ॥ अ व त न
हटिग ॥ हिल हि अ मै व त डी व ॥ डू व ग ये छि व मोर डू ग ॥ कर

दिवाइटीदा॥६६॥अथवैदनी॥विनसमासकिममासकंसा।
 स्वातुस्वादवकुवनीनहीटवर्गसंजोगनदिवैदनीउर्जन
 ६७॥उदाहरना॥कंदगयंदनिकंदकरः जगतवंदज्जजवंद
 मंदमंदमसकतमफरा॥नंदनंदसखकंद॥६८॥गोडीवैदनी
 लेपांचा॥नीसोजानी॥वर्नसजुगअनुसारजुता॥रसमम
 तकरतवयोनि॥६९॥चितवितअंतरलग्णै॥जंदजंदब
 वाला॥मंजुतअटतनवीसरतगंजनकंसगुपाला॥७०॥
 अथलाटिः॥जामैकोमलपदचैरेः लगतसवादपवंता॥ला
 टीरितिककहतहैं॥विउषमहागुनवंता॥७१॥उदाहरनः
 रिगिरितरुतरुसुघरहरिः वजतमफरकरवेनः ललि
 तला॥ललोयनलषता॥ललचतललकतनेना॥७२॥अ
 यसष्टालुवासरकवरनकीकिंवावकुतवरनकीवकुवे
 मता॥कंजमदंगजनकसै॥अंजनमेजनअंनः घंजनछि
 वचंजनयतमः नितहरिरंजननेना॥७३॥एकवरनकीन
 रसमता॥गुनगनअरपनकरिदीये॥तनमनधनअस
 प्रांना॥जनसुखघनषदगमंजी॥सुनिसुनिसयेसयाना॥७४॥
 ॥अर्थसहितपदयलटे॥नावमैनिन्नहोइसोलाटानुवा।
 : तीरथवतसाधनकहा॥जोनिसदिनहरिगंना॥तीरथा।
 तसाधनकहा॥विननिसदिनहरिगंना॥७५॥अने

जकमलः पयोदमेघः पंकसुषगटहोः औरकतेपंकजन
हीकहाय॥ जलकेदेनहाय॥ औरतेपयोदनहीकहायः वि
नामेघसोजोगरूही॥ जलजकमलकुंभीकहीयेः इंडमु
कादिककुंभीकहीयो॥ औरनविषेह् अर्थवरतेजातेयो॥
गपकः मुखार्थछोडो॥ तथामुखार्थलम्पोरदो॥ उपरते आवै
सोलछुनागंगायांघोषः गंगाशब्द॥ अनिधाः विसेअर्थछो
उतीरथकोअर्थगुहलकरैसोलछुना॥ तटकेविसेशितल
तापावनताआदिध्वनी॥ अथचतुर्विधिरितिआद्यालं
कारः॥ दोहा॥ ध्वनीआतमाकाशको॥ कहतनरतमत
गुंया॥ कहतआतमाशीतिहूँ॥ वामनमतकोपंथा॥ ६॥ गोदि
केविचओजगुनः लाटीगुनपरमादः वेदनीपांचालि
विचः गुनमाधुर्यसवादा॥ ६२॥ अथगोडी॥ वर्णसंजोगी
टिवर्गमयारचनाबंधनछंद॥ अर्थजुवऊतसमासते॥ गो
डीकहतकविदा॥ ६३॥ समसलछुनं॥ सोते॥ नोपकरि
आओपाअरर्थ॥ धातै॥ ५॥ कौ॥ ६॥ मौ॥ ७॥ नसमात॥ वाहरिसा
तविनक्तिकोअर्थसमासलमाता॥ ६४॥ नायामेंइवऊवच
नः नदिठिवचनकहाई॥ हैस्त्रीलिंगपुलिंगहै॥ त्रिपुसक
नांहिलयाय॥ ६५॥ गोडीकोउदाहरन॥ टेटी॥ अथतन
हटिग॥ हिलहिअमैंवतडीन॥ डूबगयेछिवमोरडुग॥ कर

दिवाइहीटा॥६६॥अथवेदनी॥विनसमासकिममासकंसा॥
 स्वातुस्वादबहुवनीनहीटवर्गसंजोगनहिवेदनीउर्जन
 ६७॥उदाहरना॥कंदगयंदनिकंदकरः जगतबंदब्रजचंद
 मंदमंदफसकतमधरानंदनंदकयकंद॥६८॥गोडीवेदनी
 लेपांच॥लीसोजानी॥वर्नसजुगअनुसारजुतादसमम
 तकरतवयांनि॥६९॥चितवितअंतरलग्णौ॥अंदअंदअ
 बाला॥मंजुतअटतनवीसरतगंजनकंसगुपाला॥७०॥
 अथलाटिः॥जामैकोमलपदचरैः जगतसवादपवंताला
 शिरितिककहतहैंविउषमहागुनवंता॥७१॥उदाहरनः
 रिगिरितरुतरुसुघरहरिः वज्रतमफरकरवेनः ललि
 तलालल्लोयनलघताललचतललकतनैन॥७२॥अ
 यसष्टालुआसएकवरनकीकिंवाबहुतवरनकीबहुवे
 मता॥कंजमदंगजनकसैं॥अंजनमंजनअंनः यंजनजि
 वचंजनयतमः नितहरिरंजननैन॥७३॥एकवरनकीवि
 रसमता॥गुनगनअरपनकरिदीये॥तनमनधनअरु
 प्रांना॥जनसुखघनषदरमजी॥सुनिसुनितयेसयाना॥७४॥
 अर्थसहितपदयलटेजांवमैनिन्नहोइसोलाटानुआ॥
 तीरथवतसाधनकहा॥जोनिसदिनहरिगंनतीरथा॥
 तसाधनकहा॥विननिसदिनहरिगंन॥७५॥अनेकवरण

००/ अथ सात्विका ॥ अथ ॥ १॥ वलया ॥ २॥ वैवरनता ॥ ३॥ स्थिता ॥
 कां ॥ ४॥ स्वरनंगा ॥ ५॥ स्वेदपुलिका ॥ ६॥ ज्ञाना ॥ ७॥ गिनो ॥
 नंदिता ॥ १०॥ जुतदसअंग ॥ १५॥ अथ संचारिदुप्ये ॥
 दोनिर्वेदा ॥ १॥ रुग्णान ॥ २॥ संकायव ॥ ३॥ चिंता ॥ ४॥ कहिमे
 मोहा ॥ ५॥ विवादा ॥ ६॥ रुदेन्य ॥ ७॥ अस्या ॥ ८॥ आलस
 लहियो ॥ १०॥ मदा ॥ ११॥ सम्रती ॥ १२॥ उन्मादा ॥ १३॥ इरषा ॥
 १४॥ श्रमा ॥ १५॥ लाजा ॥ १६॥ चयन ॥ १७॥ धृति ॥ १८॥ जडिता ॥
 १९॥ नया ॥ २०॥ आवेगा ॥ २१॥ सदा ॥ २२॥ निद्रा ॥ २३॥ उता
 सका ॥ २४॥ मति ॥ २५॥ अविदिधा ॥ २६॥ बोधा ॥ २७॥ अरु
 उग्रता ॥ २८॥ आधि ॥ २९॥ विषादा ॥ ३०॥ वितर्का ॥ ३१॥ मरु
 ॥ ३२॥ हेअपस्मारा ॥ ३३॥ रुंआदिदेसंचारीतोतीमहि
 तु ॥ ३४॥ नवरसानुनाव ॥ ३५॥ इहा ॥ मनमरुवदनप्रसंन
 ताः मदहास्यमधवेमः एअंगारअनुनावहे ॥ मोदजु
 कचलनेना ॥ ३६॥ आदिरूपतजिओरदोः वचनरु
 अंगविकारः ॥ स्वरनंगमदिकतैप्रगटः केरहेमहास
 प्रकार ॥ ३७॥ दिर्घनिसामरुदुनतै ॥ मृच्छादेमविला
 या ॥ करुनाकेअनुनावहे ॥ नमिपतनसंताप ॥ ३८॥ क
 रतेपूचेकोमलन ॥ अधरडसनअरुकंय ॥ ससतोत्वो
 रोदुतैमुषचयवरनवित्त्प ॥ १००॥ सोर्यधैर्यप्रगलनव

जवचन॥सात्विकरेमाचादि॥वरनवनतैवीरकौ॥वगत
कहतकविआदि॥१०१॥पंकचरनसिश्चंकरअंगसी
रा॥चषचाकितथिरकाया॥सुखअधरकंवतालनुयः
जानोजाय॥१०२॥मासाआननसंकुरितःचष

विनछप्रगटता
जोया॥१०३॥वाहवाहहाहातयागऊगऊवचनवन
अजुतरसअनुचावा॥१०४॥

अथोइएअनुमतबा॥जगतैवतउदासःनिजमुषनि
॥१०५॥सहतेअंगाररा

सा॥नानाकानुकेगानकीपरीकानमेंआया॥जवहीतै
मनानजा॥नईचक्रकेनाया॥१०६॥सपरसतैअंगार

हनिहंपहरमदी॥मोहनतैउरमालस्वेदकंप
लिषीतदिछिमलाल॥१०७॥रूपतै

नानाजादियविचउठीहूंक
नगीनहीहूंक॥रसतैअंग

वाप्यारीकेओठको॥पानकीयोरपीव॥कहैस
जवकोउऊयोजीवा॥

केअंगरगकी॥गंधनपटमोपान॥आन
नकाकेगटेकाहू॥१०८॥असैहीप

००) दीपनसमरसमें जानीये नवरस अकचछषयः गिरजा
आंकसिंगारकीर्तिमुषकाजकरुणमयः विनछरुद्ध
कीमार्तः नृत्य आनर एउरगनयः असंभाव अदन्तः
ज्वलनचषयचसीसजलः रौद्रहसक्रतुनासा ॥ नृतित
नसातिरूपनर ॥ गनवीर नद्रुतवीरमया हास्यनग
नतनविमलजसः उरश्चपदासधरभान अवा एजा
तसिवतनवहिरसा ॥ १११ ॥ अथ अंगही एमया शीक
नीलमैनी श्रीति द्विजकेदसिंदये उछाद मोतीमीतग
येपाये ॥ विस्मय नमानतं ॥ श्रीकलीक अंगनाक अंगना
पेगिनाननादिमारि ॥ रुजितेकस्यानकोधनावधानतं
निहाकाजेगावसवयुरागनितवेदनं हि ॥ कदलीमरो
राजकरुठानजानतं याही विधश्चपदासा ॥ ओरेरसजि
ते आशी अंगही नगीनलेमया शीसयानतं ॥ ११२ ॥ अ
रसा नासा ॥ इहा ॥ जुधपिसाते इतको ॥ अनुचितसोर
सनासा ॥ मरण अगम्या नारीतौ ॥ गुरजनसेतीहासा ॥ १३
इति श्री पांडवयसे उचं द्विकात्ततीयमय ॥ १३ ॥ अ
थ वैचित्र्य विर्यवसकारकभारतगुणकारका ॥ श्री
वेदशासोत्सति ॥ छंदपदरी ॥ नोमइकेतगंधर्वराज
॥ अदिकात्रिमासो नामाजातिदिरियिसरायकयजे

निपाया॥ उहारिषदिही नोवताया॥ कोउमनुजवीर्यनजि
पुत्रहोयदंपतिनिजगतिनुमलहऊहोया॥ वरुनामा
कवरुआयेरकाजपितुवचनलागिगेऊतसमाज॥
निहवामनामगिरकासुताहि॥ रतिवतियवयशुसुक
वरपाहिधरिजलिकविरजशुकहिदीन॥ जमुनाप
रनिकस्योसोववीन॥ सीचानरुपटमारीसुताहि॥ वदवी
र्यगिस्तेरिवतनयमांसिसोमीननिगलिजातिहिशु
नावा॥ गर्जस्थितनोताहीवनावः सोजालपरीकऊकम
जोगः विधयाहिआपकोनोवियोगः उदिराउदरडीक
पुत्रीपायः सोकरीकीरसेवाशुनाया॥ पुनिनयोअंग
मोवनअवेसाविधविधहिवटतसोनाविसेसा॥ मछंगधा
ईकदिनसरिततीरा॥ एकाकीनईअंतरअधीरः किज
परस्वर्यकहतातकालः मोहिपारिकरऊमतिनईऊ
कालः नयजुनावघेरीसुनामा॥ कंमालधिरियनोविव
सकामः रतिजाचितापहिरियअधीरसरमन्मथछेद्यो
जिहसरीरा॥ कंमालवविनतीकरिताही॥ इकदिवसऊ
रिकनित्वआहिः भुमतेकस्योरियिअंधकारपुनिक॥
होमाहिनजिसहितप्यारः जोनटेआपदेहऊरूरा॥
माननटीरियलपिकरूरः धिरमात्रनाववि॥

३० व्रतनंगनयोरिषवरत्नजाया। कहै कंन्यादृष्टरणनगो
हिः ताको प्रजन अवजुक्तो दिवी र्यतिह उपजिऊ
दव्यास॥ अवतार अंस सब जग उजासा॥ ५३॥ अथ
सजिन उक्त तै पुरन रचे पुरान॥ एकलल नारत कीयो॥ व
दकु किय व्याख्याना॥ रा॥ कवि॥ ब्रह्मा १०००॥ पद्मा १५०
००॥ विष्णु २३००॥ शिव ४००॥ श्रीमत् १८००॥ न
मोतरा १४५००॥ नारदा २५००॥ वाराहा २४००॥ लिंग
११००॥ ब्रह्म वेद तजानिये १८००॥ कूरम १७००० म
छा १४००॥ वावना १०००॥ सकंद १०१०॥ मारकंड २
००॥ कहि गरुडा १९००॥ ब्रह्मांड १२००॥ अग्नि १५
००॥ विधस पिछानिये स्याम वेद २५००॥ रुघवेद २५००
॥ अथर्व वेद २५००॥ आरुके सूत्र वेद अंत रुं वषांति
ये॥ नारत निर्माण कीनो संहिता अनेक छाया॥ अपरास
ताहि रुं विचारै गति मानिये॥ ३॥ ३॥ जन्मे जय नृप करत
हे॥ सरप सत्र तिहिकाल॥ वेद व्यास सब शिष्य नकतः॥
आये मुनिवर चाला॥ ध॥ पुछी न्त परिषरा जघत निज पु
रषन की वास॥ कै सै वसं कवि रोध नो॥ कै सै जघ नो तात
५॥ वेशं पाय न शिष्य को॥ दिआ ग्यारिषराय॥ कुरु कुल की
पुरव कथा॥ सबै कहत समजाय॥ ६॥ क०॥ ब्रह्मा १॥ अत्रि २

लैंकै लुनोहीगै॥ वीयानोकीरीटीकैहैं॥ धृजतनिदा
 कपिकीगरजसुनैसिरकंधनहिगे॥ मानतनवाआ
 साउतपातहोता॥ जीतवैदगोजिवतैगांतकुंनुनोहीगै॥
 ५॥ कहैज्ञेनआवतहीदेखिकैअकेनोरथउर्ध्वजदंड
 केतेजअदभुतहै॥ चिअरतवाहनचनाकीचितच न
 चारुनटचारुसूतअपनैकुरुतहैं॥ धृकृतदे
 ॥ धृधरोदियातननहोतअनमतधीरसागैरिनधृतहैं
 जीवसरसमनधसोहैसमुनासनकोजासनतनकपा
 सासनकोपूतहै॥ ४५॥ कर्न० स० काउतपातवतावतहो
 मअकं०॥ वातनजीवपैआनत॥ ज्ञेनतैकर्नकहैंकरि
 ५॥ अवीरकोजीमतवीरवधानत॥ अककहाकपिकेत
 अनेकपितामहसनकुंकानिपछानत॥ ओहमतेंड
 धनतैनहिंसोडसनागपराक्रमजानत॥ ४६॥
 कोबालकहैं॥ फलतर्जनीदेखतहिगरिजेहै॥ जुजुवाकुं
 दिषायडरावता॥ बालकूंयंकहासैनत्रसेहैं॥ नामसुनाया
 कैपारथको॥ तुमदेतहोकीवताकोउनपैहैं॥ ज्ञेनवाये
 ककिरीटीकैगोनतैकोनजीपीठवतायपलैहैं॥ ४७॥ ज्ञे
 नकोषुत्रकहैंसुनिसूतकायावतगालवजायैवडाशीर
 कगांजीवतेइंद्रकोरुद्रकोतोमिलियेंजगकीरतिगांशीक

लवजदिकवर्मनिवातरुगंधवजापेअजेतुमपार्श्वी
पदीप्रापतदेष्टिदैआपनेएकत्नेकौनविजेउपजाई॥४३॥
वाकृतेक्षत्रीयसरसवेठिजवाकृतेसरसदेवनयावत
नीममहाबलनतेधनुतेकपिकेतकीसरतादेवऊगावत
देछलश्रयहेसकुनीरुसुयोधनकुंठेहेश्रवतावत
नीततेसरयुधिष्ठिरहो॥तुमकर्नमनोरथसरकहावतः
४४॥कविता॥उतरगोग्रहणयुकारसुनिबालनते॥उत
रकुवरवोसोकोयवेसमारमेहुंकाकिरीटीराजयो॥
सिकेनिकारहीनोमारथीजोहोयदियाउगोप्रहारमो॥
दृष्टिओमचुवितध्वजाहूकुसुवपिनीकीस्वेदकंपअ
श्रुतेनरेहेताहीवारमोसबकुंदियांनोतहापदजोनिपु
सकोकेखांगमात्राअर्जुनमैलछतेकुमारमो॥४५॥देष्टि
चमूनागोबालनप्रकसोविलोमहोरिकद्यौराजपुत्रमै
रांपानउमिजावैगो॥जानदेहुतोकरयवाजकरीड
अदेऊजुधकोमरेगोमैरेजीवअकुलावेहैगो॥प्राप
कद्योअर्जुनहुंगाहोरदिताजैमति॥अहुतवनेगो
जुधसिद्धविजेपावैगोःअर्जुनहोआपतोसुनावोदस
नामअर्थःयथायोग्यसुनेतैविसासइहआवैगो॥४६॥
सत्रुजीववैतैविजेसक्तहसअर्जुनमैरइदयोकीट

कृष्ण

४६

तातैरिष्टकं हायो हं॥ फालगुन उत्रा अरुपुरवाके मध
 मा॥ कृष्णपदु कपाकैजि सुवासवको जायो हं॥ जधमे
 गिलांन काम करूना विनस्तुता तैस्वेत अस्वही तैस्वेत
 वांरपंद पायो हं॥ सव्यसांची वांमपांनि हे सहाय तातैजो
 निधनं जैरसा कोइ मय सवै जीती लायो हं॥ ४७॥ उदद०
 अर्जुन होतो जात चड्ढा॥ किंतु हे दुपद कुमारी॥ अरु
 न उवाचा॥ नृप जुधिष्टिर कंकन टवळ न नीम विचारि
 ॥ ४८॥ गंधिकार यरु विद न कुला॥ तं विपात सह देवा हे
 रं धिद्रो पदी॥ तजि विद्या न दिने वा॥ ४९॥ दोऊ कवर
 मम सारथी॥ ५०॥ धुध समय को लेषि॥ जानि अतिरथी जूध
 नटा वीर नायु अवदेषि॥ ५१॥ जांनि वाद्य तननांन मम
 पन चकर हि दुनिगांन॥ मत्सकर हि मम उ नय कर तै
 री ऊरि दुवांन॥ ५२॥ छंद पधरी॥ करि समीप रिक्ता
 दं एकीन॥ तेश्चनु सवांन कर उ नय नीन॥ गोध्वजा॥
 सिंधु लल्लु न विनाय॥ जो चित तवांन रविकट नाया॥ गं
 धर्व अस्व विद्या प्रभाव सेता स्व नयोरथ मन स्व नाव
 करि कोप धनुष टंकार कीन॥ जो सव्य नृमि आकास ति
 न॥ बहुरि दीय देव दत दि॥ वजाय किय हा कध्व जा क
 हा काय॥ सुनिध डधडां टरथ ने मिघोर॥ चकिर देस

लखजदिकवर्मनिवातरुगंधवजापेअजेतुमपार्श्वो
पदीजापतदेखिदेआपनेएकनैकौनविजेउपजाई॥४३॥
वाक्यतेधनत्रीयसरसवेठिजवाक्यतेसरसदेवलनयावत
नीममहाबलनतैधनुतैकपिकेतकीसरतादेवऊगावत
देछलनश्रयदेसकुनीरुसुयोधनकुंवेदेश्रवतावत
नीततैसरयुधिद्विरहै॥तुमकर्नमनोरथसरकहावत
४४॥कवित॥उतरगोश्रहणयुकारसुनिबालनतै॥उत
रकुवरवोसोकोयवेसमारमेहंकाकिरीटीराजयो॥
सिकेनिकारदीनोसारथीजोहोयदियाउगोप्रहारमै॥
देखिओमचुवितध्वजाहूकुसुवपिनीकीखेदकंपअ
श्रुतेनऐहैताहीवारमैसबकुंदियांनोतहापदजोनिपु
सकोकैस्वांगमात्राअर्जुनमैलछतेकुमारमै॥४५॥देखि
चमत्तागोबालनप्रकसौविलोमहोरिकद्यौराजपुत्रमै
रोषानउमिजावैगो॥जानदेहुतोकरयवाजकरीइ
अदेऊजुधकोमरेगोमैरेजीवअकुलावेहैगो॥पाय
कस्योअर्जुनऊंगाहोरहिनाजैमति॥अहुतवनेगो
जुधसिद्धविजेपावैगो॥अर्जुनहोआपतोसुनावोदस
नामअर्थःयथायोग्यसुनेतैविसासइदआवैगो॥४६॥
सत्रुजीतवैतैविजेसक्तकृतसअर्जुनमैइददयोकीट

कृष्ण
४६

नरआपराधलेनेनिसंकः लेजातहुस

वकीछीनछाज॥ करितजेजियतमत्तदयाकाजः पुरप
वयहतगउवनछुडायः सबकवरविजयकहियोसुना
या॥ नपहुनिजपुरतिहिदिवसआया॥ सुनिपुत्रविजया
चोसररचाया॥ कंकनटतादिप्रतिषेधकीना॥ नलनयोड

नलीना॥ कुरुत्पजुधिसरसूतकाज॥ कि
तगयोनजानेनचएगजा॥ मंगलकेसमयनरमहुआपः
गर्विष्टरूपदहुजयप्रतापा॥ तदिगमोवचनयेमोनिंसक
कीडतहिकहोतदसुनहुकंका॥ ५३॥ दोहा॥ कहैचिर
॥ अहोउतरसमराथ॥ जीसोदेवनतेअज

॥ ५४॥ कंककहैनपजहन्तटाज

सोजीतैसरराजहु॥ तोउकाअचरजहो
॥ सुनतस्तुतिममपुत्रकी॥ रोधनहैदवगनिः करत
॥ वासंडकी॥ रेडिजसंअग्याना॥ ५५॥ कविता॥ तीस्रदो
नकनडोनीकुरुराजडसासनजिनकोविसेयतेजहैवन
तैसागोहो॥ उनकेप्रतापहीतैगांडवविनायगयो॥ इइति
कअंसनतैजनमवधानोहो॥ तेऊजीतिएकरथ
जेछुरायनायो॥ उतरकौपोरसमेंआजदिनज
॥ धनमातापितादेसवंसजोसपुत्रअहोवालवयरुमो॥

अह नृत्तजस आनो हो ॥ ५॥ कंकवाच ॥ ६॥ जाके
 ऐसे पारधीः सो कंकवाच कमिनी ॥ तीन लोक कूजीतीने
 ॥ तो पुनिकाह विचित्र ॥ ५॥ सुनतरी सकरी सि सपे ॥
 पासो कियो प्रहार ॥ चलि युधिष्ठिर नालतों सिध रुधिर
 की धार ॥ ५॥ स्वर्ण पात्र में दोपदीः जेलि नीयोरत सोयः
 ॥ मति नीमा पुनि देखिलें जिन तें वचन कोय ॥ ६॥ छंद
 धरी ॥ नृपकन्या सैन्य वैसा पग यत्नाये सुउतर कुवर
 दिव्याया ॥ कहि प्रथम दिन रति हि कवर काजः पांडव
 न घगट मति करु आज ॥ प्रतिहार कसो आवत कु
 मारः नट कंकयु सवर ज्यो सं नारि ॥ ६॥ दोहा ॥ राज कव
 र कूं आन दो ॥ अध नट हि मति अनि ॥ नयै रुधिर मम ना
 लको ॥ करे सबन की हानि ॥ ६॥ मिमो आय पितु तें कव
 रः लज्जो जुधिष्ठिर नालः कसो मछु तें किन कसो ॥ ऐसे
 कर्म चंडाल ॥ ६॥ मछु ॥ करत प्रससा तोर सुत ॥ घंड प्रस
 सत मुहुः तातें अल प्रहार ॥ मिकियो सिध दृष्ट रुद्र ॥ ६॥
 उतर ॥ द्विज पें धात अनय यदः समाकरा वडु याहि ॥
 देव हल जी सो समरा ॥ घात दिवें कुं तां हि ॥ ६॥ घात सना
 की नी कवर ॥ पांडव नृसित आय ॥ श्रेष्ठा आसन ये धर्म सु
 त ॥ प्रथम दिवे गो जाया ॥ ६॥ दिवि हरतें मछु नयः कसो क

कनटसुहृः सुहृत्तागौ तातै नयो ॥ मम आस आरूढ ॥ ६९ ॥
 ॥ अर्जुन उवाच ॥ या के अनुचरै सदा ॥ इक्ष्वासन अतु ॥ २ ॥
 निरेतु छासन कदा ॥ यदै सुधिर न प ॥ ६९ ॥ कदी ॥
 कल उत्तर कवरा ॥ निज पितु ते सम जाय ॥ गुप्तर है जव ते
 कथा ॥ जुध परिजंत जिताय ॥ ६९ ॥ मछ ॥ मोर सुता अति पु
 न न जुतः करै ग्रहन जुत ईडा ॥ तव उर न हो कंकलु कतु
 मते धर्म न रेडा ॥ ७० ॥ अर्जुन उवाच ॥ मेरे तो बद्धु त्रि स
 मः गुरु करि जानत मोहि ॥ कलंक ॥ लगे मि अतर हो ॥ जो
 ऐसि गति होहि ॥ ७१ ॥ क हो जुधि छिर विजय को ॥ पुत्र सु
 ज नंदः अनिमन कुंदी जे सु ॥ ता ॥ कर डूबा द सुपक
 दा ॥ ७२ ॥ तथा अस्त कहि नृत वे ॥ हत न द्रिये पग या ॥ संवां
 धि रोउ नृप न के ॥ मिले कृष्ण ल आया ॥ ७३ ॥ नयो
 आनंद ते ॥ दिये करि रथ बाज ॥ पवय सुयोधन हत यत्ता
 येष गति ह काजा ॥ ७४ ॥ युधि छिर उवाच ॥ गए
 दस अधिक दिन ॥ अधिक मास ते आ जः तं दि जो न
 सम कहि ॥ नां मानी कुरु राज ॥ ७५ ॥ इति श्री पांडव
 द्रिका विराट पर्वणि सप्तम मयः ॥ ७६ ॥ छं
 ॥ विराट सुता उत्तर विचारै ह अनिमन किय करग्र
 त उच्छाह ॥ प्रात निवसना सवन य पधारि ॥ वसुदेव त

सुनिविचारः श्रिष्टासनवैवेनपसधीरः वैशट्टुपदव
 मव्रधवीरतिनअग्रजुधिष्टिरवासुदेवः नीमदिकति
 नकेअग्रतेव श्रीकृष्णकहतनपनसुनायः लघुव
 धसनरुसवचितलगायः संपूर्णनितविद्यासुजाना
 सवकहकृमंत्रबुधिवलसमानाकीनोडरयोधननप
 अकाजरविकपटद्यूतहरिलयोरजानपधर्मधर्मय
 यसावधानः पनकियोजयाकीनोप्रमानः त्रयोदसव
 र्धवनगुप्तवासः तिनमैसहिलीनीविवधनासाअव
 चरुतनपतअपनोविनागः तथापयधर्मविनतयैसा
 गः सगपनअपनैरुतउतसमानः दोउओरकुसल
 चारुतनिदाना॥ यदैसुनतबोलिसेसावतारासतकारि
 अतुजवचवकुप्रकारः पवावकुहत्तकुनबुधियुनी
 तः रजाअचलुप्रतिविनयरीत॥ सबकदैवातविनती
 सुनायः सुयोधनआदिसबकोसुहाय॥ युधिष्टिरद्यूत
 विचप्रमतदोया॥ सहिलयोआजनोंकहसोया॥ अब
 धिताआयवहपुत्रआदिताकोविनागहीजैसुतादि
 नहीहोयआपकंहैनपालाचलनयोयुधिष्टिरद्यूत
 चाला॥ यंजोरवतायेविनआरभअमयासुयोधन
 हेंअसाभः यहुसुनतवचनयुयुधानआप॥ परजसो

कृष्ण

५२

कृतासनघतघतायः बलिभद्रसुनेकं ममसमवाला
मकहैवचननिदतनतातः वचनऐलीवजेकनवीरः
उनेकंमैनिदतकृ अधीरः यहवसुसायताकि अनेक॥
यकवाकसुमनफलजुक्तऐकः वसिऐकउदरयकस
रवीरायकमहाकुमतिदारन अधीरः असोनजुधिहिर
वीचहिआहिः तनमनअपलछनकहैतादिः अपल
छसुयोधनकेअपारावैछेकआपतिनकूविसारि।यन
कोजोडयनकरतआपः पापिहसयाताकोघतापानमा
वतधर्मकूकोननीतपगपरहिसुयोधनसहितधीतिः न
हिनमैडएमदअंधनीपः तोः वसावडंसिद्धजमनोकति
चः धनंजयसातकीधनुषधारि।महिकरैनिकंठकडएक
रि।विहूनोकजीतीबोसुननतातः वसुरेडरयोधना
कितिकवातः परिहैकिसुधिहिरनयनिपाया।कैनयहि
गधअंगालंकायः यहसुनतबोनिनपडुपदयेहः सा
तकीकहततुमनिरसंदेहा।नमनाताकियेमदअंधक
नीचः बलगिनहिअधिकनिजसैमवीचा ७
ननमतनाहिः महासारदंडपकदंदमाहिक वि ५
पिसामादिकाजः रहैवल्लजयाविधधर्मरजनि
पुरेहितकूबुनाया।सबकहरीतताकुसुनाया॥

रघोनिचतुरासिलक्षः तिनमैवरजगमहेप्रतत्ता बुधेजी॥
 बीतिनमैअतिविसेषदेहनरतिनहिमैअधिकदेसा॥तिन
 मैडिजन्महैश्रेष्ठतातः वेदाध्ययनीतिनमैविष्णातःतिन
 मैवरकरियतकरमकारा॥तिनमैअठैतवादीविचारः॥
 तिनमैअभयनीआपतातावेताकुरुपांडवकेरवातावि
 द्यातयकुलवयचतुरब्धः सबनीतनिधुनअरुमंत्रसि
 ङ्गः पधाररुसिङ्गकुरुब्धपासः सुनावरुमिश्रअरुक
 दुकनासा॥उजवंसब्रधतुमकूनदोषः फिरहत्तजानिका
 रिहैनरोसः पुनिनिस्मझोनविडरहिप्रधान॥मिलकरहि
 आपकेवचनमानः उस्सासनसकुनीकनडष्टः सुनिव
 चनअनारदकरहिसुष्ट॥इतनेहमपववहिहत्तअोरः
 निमंत्रणकाजनपवीरवीरा॥सुयोधनकरहिकूटेसंधानः
 जुधसाजकरहिहमसमयजानः करताजुधसेन्यासान
 कूलः माहाकोससस्त्रसादिसम्पन्नः तीनहुंवातजाको
 तयारः महिराजकरहिसोईसत्रुमारि॥श्रीकृष्णकहेतुम
 गुरुसमानः आग्यावसिहमसमसिष्यआनः करिहोवि
 चारसोईआपकाज॥सबकरहिमानहमजुतसमाजः ह
 महुंअवाङ्गणपुरीजातधुरेहितनागपुरहुंप्रनातः मा
 नैनेसुयोधनसंधिम्हः हमकुंबुलायपवहुंअगुहः क

कृष्ण

५३

एकागमनकीनः डुपदकुंनिमंत्रणचारहीनः
संतकारकियोबुधिचषा
वैचित्रविर्यपरिषदबनायः विप्रकुंलीयोसारद
लायः यतकुसलशुद्धितकीसुनायः पूरनकुलवय
कहनपुनिवचनधारनकीनाडुपदादिन
नीमकुंदियोतुमविष्यअनीतालाषगद
अनीतारंचिकपटद्यूततुमदस्यौराज
त्रियकीविचसनालाजः अयराधमवनकौटकनए
कुः इतेपरलोभवसिनद
कुआप्राडुनिलषिदोगांजिवकोप्रताप। अशोनदेवनर
अर्जुनतैजितैसमरएकः अर्जुनरुनीमतैजु
कोउवओसुमोअवलोभकाजः जिहसुनत
नजोरावनडादशअष्टनिवसिवहोरः
लैहसुतिन्दैलितियनलग
यः कियधगरत्रयोदशवर्षमांदि। मायविनशांमयक
मितैनांदि। बोलतनीमाअर्जुननयवतार्य। अशैन
कतैगिरउडायगोगेयकहतप्रज्ञागंभीर
दिनकीबातवीरः डोपहीस्वयंवरघोषजात।
दमतिकरोतातः मांजनोषोयबांधवमराया।

जयते अजययायः वेराट् अवहि वीती विसारि महि
पन विच बो लन गाल मारि ॥ असे को सिय वन फनि अ
साधः विहु लो क करत त व पुत्र बाधः करे जो ई पुत्र न
गिनत काज ॥ रहि देधत गहन वंस गज ॥ पितामह वच
न कुं करि प्रमानः न्यहट कि करन निज मय निशाना ॥
॥ सयोधन गा दोहा ॥ तुम बडु सौ जी हो बो होत ॥ दो ए
दिक गा ॥ गेय न्नि न दे कुं पे ड नरः बाटी करन अजेय
॥ २॥ जी स्त उवाच ॥ कबिता ॥ मेरो तो हे वा छित सो चो पा
न करु से च सखती थी ॥ मत्स्य गुनी की रति कुं गुनी हो तिरे ॥
लो न मो ह मान मत्सर कय ट ता ई ता के बी ज ब दे फल न
की विध लु निहै ॥ याद करि मेरे दो ए विडु रा दिक हूँ के बो
ल गा जिव को ते जरे विधी छे सी सध निहै ॥ मेरे बै न नी त के
निवास ना हि सु निहै तो कर्ना दिक वीर को विना सवेग सु
निहै ॥ ३॥ कर्न उवाच ॥ दोहा ॥ जो लो से ना पतिरहै ॥ य
है नी स्मडु रवादः तो लो सखन कर ग्रहै ॥ कर्न जुक्त अ
॥ ४॥ जादि न गंगा सत मरहि ॥ दरहि परस परवादः
॥ तादि न पांडु न मारि नय ॥ हरि कु तोर वियाद ॥ ५॥ छुंद द
धरी ॥ पुणे हित विदा की नो स डीतः राज न तै जा विध वन क
तरीतः तुम पी छै ई पव व कुं सिध तातः विधि स निहै संज

यकद्विवातः उपयत्नः आयनपकेऽगारः सबकदे
 स्माचारागयोऽर्जुनन्तनवास्तदेवः उतडुर
 योधनः आयोऽर्जेवः सुरीविचकीयोदोउसंगववेस
 रुगजउतेइतगुडाकेसः पोदेतहोरुकुणिकांत
 पायः वहसमयवीरदोउनिकटः आयः यकउधवेवि
 यकयधोनागः अजिमानियकयकसदितरागावंदी
 जनबोलेवीमलबोनिगायकमित्तनैरवकियेगान
 वहसमयजागिशीकृष्णः मिसनयोषमयार
 यमितायः कयोधनकरतहमप्रयमः आयः निमंत्रण
 काजकीजेसहायासबंधसख्यापनहैसमानः होउतर
 कः आयजानतनिहानाः श्रीकृष्णउवाच॥ एकलेकुमे
 दिवितुसस्त्रमेकायकलेकुसस्त्रजुतवलः अनेकाः लि
 यसेनसुयोधनधीतनायाः सस्त्रविनकृष्णः अर्जुनसदाय
 ॥ सप्तमिलिअलोहनीइतफनायाः एकादसगजपुरमि
 लीः आयः संजयनपवेसोसावधानः जुधिष्टिरकीयो
 दितपुज्जानिः करिकुसलवलनपकीफनायाः पुनि
 करनलनगौसतकारपायः आयकूयुक्तकरवोनः आज
 ॥ नितान्तश्चेष्टनहिश्चेष्टराजाः गुरुजनकोकुलकोकरि
 संघारिः तुमसेनदिवांछतराजनारः सबगुरजनकरि

बोचहतसंधि॥मानतसुयोधननयमदंधः यरसुनतकृष्ण
 करिकोपआप॥पुनिकहतहतसौजुतप्रताप॥नहिदेतया
 मयकसहितनीत॥फिरनीषमगावतकोनरीत॥कहिनी
 तमगावतयनहिनीष॥सुयोधनइष्टकोकुंनसीषः देता
 दानरेअसमर्थदीनः नदिकाशग्रहविचकरतलीनः दि
 नपांचसाततिनरहोइत॥सबकहिसंदेसकियविरासत
 ॥६॥इह॥उतविराटसआयकैसजयपरमसयाना॥म
 तीचरुनयतैमित्योलियआयसअतिथाना॥७॥अमजु
 तयथरथघेदतौ॥अबमैनिजग्रहजाता॥पांडुनकेसंदेस
 सब॥कहकुंसनाविचघात॥८॥धिकनयतेरीबुधीकुंसा
 गेविनअपरग॥पांडुपुत्रनिजपुत्रकै॥गिनतनसाधसाध
 ॥९॥संजैयेगोस्वस्थाननिशिन्नयबुलायलफनातः कसो
 कनाबडुनीतकुं॥निडालगतनतात॥१०॥देअवलनन
 नमोहिक्को॥गोसंजयनिजगेह॥कहिहैसंदेसोकहा॥उ
 पजतउनयसंदेह॥११॥विडुरउवाचपरत्रियातपरइव
 हर॥तिनहिषजागरहोय॥आपअवलनरिपुप्रबलतै
 करेबैरपुनिसोय॥१२॥इतैकहाचितहोयतै॥बंधनहोम
 हाएजः निडालगतनआपकै॥इहैकौनगतिआज॥१३॥
 इकतैहोयविचारिकरि॥जीतिआरतैतीन॥पांचरोंकियत

क
 ५

जानिकरी सात तै जैसु यं लीना ॥ १४ ॥ कविता एक बुद्धि ज
 तिही ते कारि न अकारि ज को नी कै विचारि स बुद्धि मित्र उदा
 सीन को ॥ को प्यात्रा मलो सां दाम नी ते ने दही ने दंडा ॥ जा
 रतें यारी त नी ते पूर्व क है ती न को पांच ई ई विग रो कि संधि
 विग्रहा सी यट जानि स प्रवि स्रत जै और संग ही न को ॥
 दूता ॥ १५ ॥ सुखा ॥ १६ ॥ गीया ॥ १७ ॥ तं डा ॥ १८ ॥ छला ॥ १९ ॥
 ताई ॥ २० ॥ हो न लोक नष्ट जानि सात को ॥ अधिन कू ॥ २१ ॥
 हाज दि न विद्या धर्म को ॥ यस को ला न न दोय ॥ विडर क है
 धतरा दूतै ॥ अधिका न है सो या ॥ २२ ॥ उत पति विद्या ना
 य धन ॥ कर क अ मर त न मां नि ॥ धर च ऊ आतुर होय म
 बु ॥ काल ग्रह क च आनि ॥ २३ ॥ मन सा वाचा कर्म ना ॥ रज
 नीत की रीत विडर क है धतरा दूतै ॥ सुन ऊ लाय पर तीत
 ॥ २४ ॥ मन सो दा दर न कविता ॥ के ति कि उप त मे रे यर चा
 कितो कु आदि ॥ के तो पु न्य दान के तो की रति को दां न है ॥
 के ती च ही प्यारी सैन के ते स बु के ते मित्र के सो है स कै सो का
 ल वे न व विधां न सौ ॥ कौ न कषा पा व कौ न साधार न स्यां न
 हो ॥ जहां तहां जवै तवै न पति विचा सो करै ॥ विडर व
 रज नीति को विधान है ॥ २५ ॥ दोह स्त्री न ऊ र ये दृष्ट मे धर
 म अर प्य काम ॥ ती न न विगर न दे त र वं कु ल ॥ क
 को न स्यां म धोर को ह रं म धोर मे रै पास

तीन पिछाने विमल मति ॥ पिहायर च ॥ य जानो सब को व
सिकर लेता ॥ २॥ वाचा उदाहरन ॥ सस और उषगार मय
मिष्टवचन अविरुद्ध ॥ श्रयदास दरि नक्ति जुत ॥ सोई बा
णी दे संध ॥ २१ ॥ करम ॥ सस सोच समर मरया ॥ विद्यास कु
लता संन ॥ जग वल्लभ नता सरता ॥ पावत दस पुमवान
॥ २२ ॥ किवत पुत्र त्रिया का जधन ॥ रहानी के की जतु हो ॥ पु
त्र त्रिया रिता सोई आत मा के का जदे ॥ पुत्र त्री याना स
तही आप को बचाय ली जे पुत्रादिक फेर के न अंग को
ई ला जहो ॥ इव जातार यै कुल कुल जातार यो ॥ जीव जी
व जातार यी ली जे जा को नां म ला जहो ॥ ना जग ये गई की
ति ॥ २॥ किर्ति गये गयो मान ॥ २॥ मान गये जीवत ही म सु
को समा जहो ॥ २३ ॥ सो न स ना जामे को ऊर्ध्व को प्रवेसना
हि ॥ सो न ब्रध होय समे पाय नीत बोलेना ॥ सो न नीत जामे कु
ल लोक वेद की नरीत सो नरीत जामे सांच ऊवनी के तोले
ना ॥ सो न तोलि बोहो ॥ जामे पक्षपात बोले छल ॥ स्वारथा
विचारी जैसी होय तैसी बोलेना ॥ २४ ॥ दोहा काश गुहरे
पुत्र को ॥ धर्म पुत्र को राज ॥ टरे प्रजागर आप को ॥ कुल
को केन अकाज ॥ २५ ॥ सागि एक दित ग्राम के ॥ ग्राम सा
गि दित देस ॥ देह सागि दित प्रान के ॥ वाणी बिडम विसे ॥

सा॥२॥विहरकरतत्सत्यश्रवः सुहृदरीततसमजाय
 ॥जथानवसिक्केहैतथाः पुत्रनसागोजाय॥२॥भीष्म
 द्रोणकरनादिसरबासतपुत्रनजुतनयः मिलेसनाकि
 प्रातनयेः बालिकआदिअनूया॥२॥बोलीपगयोह
 तसोई संजयतिनटिगआया॥भीमकीरीटीकेवचन
 ॥सबकुकरतमुनाय॥२॥कविताभीमसेनकह्योस
 तकरियोधनतेजेतेसचुतोसेतेतेकेतेमारडारेहैं।द्रोप
 दीकेक्लेससनावनकेविराटहूँकैः कैसैसहैजातेधर्मराज
 काजधारेहैं।जुधिष्ठिरसामरुतेमांगेविनाजुधकियोहैन
 कामपंचग्रामहमनाविचारेहैंः मानलेनवारेनहिआन
 लेनवारेहमा।हांनलेनवारेनहिआनलेनवारेहैं।३॥पुत्र
 ॥हिंडवजडासुरवकअसुरः जगसंधपुनिजानः कीच
 कादिवलकुबुधितैं।सबनयेतोरसमानः ३॥कवितह
 तकीडादीमैंकालकीडासीदियायदेतो।अग्रजकोधर्मरा
 यबेकोनाहिमारेहैं।आयायहवनकेविराटद्रोपदीके।
 क्लेसअसैइयभीमनिसाक्षोसनाविसारेहैं।करियेविलो
 मवासतिदशजुधिष्ठिरकोआनरखेचहैंतोनिहांनतो
 प्यारेहैं।कीबलेनवारेहैंसंदीबहांननिसाहमू।सी
 नवारेनाहजीबलेनवारेहैं।३॥कहुमचीमाकीलेहैं।

लाज और राजसाज पाजी है स्वभाव ताको एही बात ताजी
 है। हम तो चंडाल तो सो के दते छुराय लीनो। अग्रज की
 अग्नाक्षत्र धर्म ही तैराजी है। तो कुतो नयो विदोष। एजा
 से भवै नवको। असो रोग का रिवे कूंकिरी दी यत्नाजी है।
 स्थान न छुडावै सब का न न पगवै नांदि। बान न के पासे।
 अवधान न की वाजी है। ३३। दुहा। देवें कारगंजी वक्रं क
 है वचन फिर पाया। इन्द्र अमनिरवदस हरिसः नो पुरति
 इकसाया। ३४। कवित। तेरे बंध तुहि तेरो मातुलन सो सत
 पुत्र चंडालन चो करी जूही और मिले सारे हैं। धर्म राजनो।
 कवी च धर्म राज याद कीनो। धर्म राज को पनरे लोचन उघारे
 हैं। ब्रह्मरू के रूद्र के सनव चोगे नांदिंगा जिव कंधारि
 के किरीटी यंत्र कोरें हैं। दाल कनवारें हम प्याल कनवारें
 नांदि। साल कनवारें हम काल कनवारें हैं। ३५। छुप्ये। ज
 बहिनी मरि नजुरहि। प्रांनति हवंधन हरती। जबहि
 नी मरि नजुरहि। करी से नायक करता। जबहि नी मरि नजु
 रहि। वसहि बल न जिहि जित दितित। जबहि नी मरि न
 जुरहि। कहहि सब सरन रहि कित। रिनजुरहि नी मड
 र जय डस हम मुक्ति कष्ट परि है सब हिमद नष्ट डष्ट धतरा
 द्रुमुत। तपि है डुरयो धनत बहि। ३६। जबहि सात की जुर

क
 ५

ही॥ कविनगनसत्रुनिकंदनः जवहिः अजिमनजुरही॥ पांड
 सुजझकुंलनंदन॥ जवहिसियंडीजुरहि॥ निस्मकेमर्मवि
 दारदिधपुष्पमरिनंजुरहि॥ प्रवलजटजोनप्रहारहिः सु
 समसिक्कुनिकेआनंदरा॥ जुरहिमाद्रिकेसुतजवहिः मति
 नष्टसुधतरासुसुतः तपिहेडुरजोधनतवहि॥ ३७॥ स्वेत
 अस्वरथजुरहि॥ धजावातात्मजगर्जहिदेवदतगांजीवधि
 यः गनसत्रुनतर्जहि॥ वातवेगतिहिरथदिः कससंगरविच
 वेरहिः कहांजादिकाकरहिं॥ सरमिलइतचतहेरहिः गन
 बांनछुटहीगांजीवतैजीवअमितहरिहैजवहि॥ मतिन
 ष्टसुधतरासुसुत॥ तपिहैडुरयोधनजवहि॥ ३८॥ डहा
 दतसुयोधनमोरतै॥ देवदसमरथनाहि॥ जुरनजुधविच
 रनतैकहोडरवयजैकाहि॥ ३९॥ जोजोसिरधरपैरहै॥ तो
 मिलेनकोरजवहीसिरधरपैरहै॥ तवसवनेहिसंचाराधि
 अतरा॥ नोगाधीरीतोरसुत॥ करतनरतकुलनासा॥ गुर
 जनकिसीधनगिनता॥ हैनितकुमतिकुलासा॥ ४०॥ गांडिव
 जुतप्रतिकुलकैः सांडवहीयोजराया॥ सांनुकुलपांडव
 सकलसुरअरिदियेमिटाया॥ ४१॥ सहस्वाअर्जुनपांच
 तः छोरतईकछिनबांनसोईकेजुजतैपांडुसुत॥ कोति
 दिखुरुषसमाना॥ ४२॥ गाधारि॥ ॥ अंधअंधमातापिता॥ जो

सतहमकुंदेयिपुत्रसोककोडसहउयजीवमात्रविचने।
 ॥४४॥ सुयोधन॥ कवित॥ अहोमहाकष्टधतराष्ट्र
 कइता॥ ऐसेकैदेवसनिष्टसासमर्थताको नष्टहो॥ वष्टहो
 सहीवस्थापुत्रतेगरिष्टकुंमो॥ जातेकोऊसरवीरजेष्टना
 कनिष्टहो॥ कनमा माइसासनईष्टहोमोरो॥ तेउसचुनकोमा
 रिकैअनीतनरेतिष्टहो॥ औरनकीवानीकहुनैकनस
 हानीमोहि॥ वानीतिनरुकीतीनकालरुमैमिष्टहो॥ ५५॥
 हा॥ नैकनमानिनाहिबध॥ संजयउतयहसीध॥ नावीनाम
 कनयनकी॥ परीसवनरुंदीया॥ ४४॥ इति॥ उद्योगपर्व
 लि॥ अष्टममध्या॥ ८॥ दोहा॥ सतगयेबहुदीननयेपी
 छोनाहिसंदेसा॥ ततीयवसीटीहुंलैके॥ गजपुरकरऊ
 पवेसा॥ १॥ मातपीताबधअंधमम॥ सोहमोहिसोकअसाध
 ॥ तीजेउमानेनाहितो॥ कामेरेअपराध॥ २॥ कहेसुधिष्टीर
 रुसतौ॥ करियोसामउपाया॥ कुलविनासकोदासकै॥ अं
 कलगैनहिआया॥ ३॥ सुंदीबकोदरनैकहो॥ यंमडबो
 लरुआपः सधिकरेमदअंधनयः लगेनकुलबधपायः
 ॥ ४॥ ऐसेईअर्जुननकुलको॥ वचनसुनेयडवीर॥ कहिस
 हदेवरुसातकी॥ जुधयपडुरिनधीर॥ ५॥ टरलजुगलप
 यासतै जुगलकुचनपरनीर॥ कहतडोपहीरुसतौधि

कपांडुनकीधीराधीकवितामेचकमडललंवेवारकोसुगंध
 सीमौ॥ बांमयांनलेकेजुगहसकोवतायोहैं॥ याकूंजिनहा
 यनतैअैमौतेछिदेनजो नोतौ लौझायदीकोकोपनैकन
 सिरायोहैं॥ पुत्रवधनीसमअश्वलुकीकहाउताहि॥ जिन
 केसमीपसनावीचडयपायोसैं॥ गोजीवकेगरावोधरैयाकूं
 धिकारजोपैऐतेहीयेंसंधिकोउपायमननायोहैं॥ ७॥ वध
 अष्टकमपिताशोपदस्वयनुवीमैं॥ श्वसुरनोपांडुपांडुपु
 त्रनरतारहैं॥ ताकोनयोकात्तसनावीचमंकंगालकोकैं
 ॥ तापैनीमसैनरुकेसंधिकोविचारहैं॥ रहोपांचगंगापुत्र
 जोनरुकेकालरूपा॥ औरकुरवंसीनकेकरतारधारहै॥
 मेरोपितामेरोवंकमेरोपुत्रमहावीरसुनझाकोनंदएतैजु
 धकृतयारहै॥ ८॥ उहा॥ अतिसीतलतनुईडको॥ होतग
 हनबहुवेर॥ उग्रतेजरविकोचसमय॥ होतननदयिअं
 धर॥ ९॥ निजपितावरपौछिकरि॥ अंशुशोपदीकेर॥ क
 तरुसतिहिबेरपुनि॥ अंशुजुक्तमुयहेरी॥ १०॥ ज्योतव
 सोकनमिटतहैं॥ सुनिनपडुयदकुमारि॥ तूंनिमग्रम
 एतिलोकेहैंकेउनपनारि॥ ११॥ योकरिकीनोगमनपुनी
 कसनागधरओर॥ वसनयोधतरादसुनि॥ विडरहिकत
 तवहोर॥ १२॥ करिहूंआतिथकसको॥ विडरसुनकमम॥

वात विनायक सवसतदासिका करी अष्टरथसात ॥ १३ ॥
 अष्टादससहस्र ॥ उतिम अजिनडुमाल ॥ चीनदेसके उ
 रणियट के सदरतिहकाल ॥ १४ ॥ इस्सासनके महनजे
 वटरितुस्यदस्वस्य ॥ तहांडोरापुनि अवरकुंदेकरत
 न अनं ॥ १५ ॥ अष्टगुनो सवसायको ॥ पांनपांनस्य
 देन विनडुरयोधन जायहो ॥ सनमुपतिनको लेन ॥ १६ ॥
 विडुरउवाचा ॥ आपबुद्धिवयब्रधको ॥ करतलकरईवात
 अर्जुनप्यारोपांनतौ ॥ तजेकस्रकूताता ॥ १७ ॥ सर्वराज
 केनो नतौ ॥ होयनतेरेकस्र ॥ अरधराजदीये अैधरमकु
 वत्री हेरि कुलप्रस्र ॥ १८ ॥ पायधवावे अर्घविना ॥ विनज
 लकुं नन आना ॥ ग्रहणकरै सतकारनदी ॥ कस्रअ नत
 समान ॥ १९ ॥ विडुरकहोतुं दीकस्रही ॥ पूजाग्रहणन
 कीन ॥ गतिविडुरकुं केरहो ॥ ताकेई नोजनलीन ॥ २० ॥ वि
 डुकहेचहियेनइति ॥ तव आगमब्रजराज ॥ इष्टस्योधन
 नांदरत ॥ करतसकाज अकाज ॥ २१ ॥ अपनोकहे सुतु
 मकही ॥ जथाविडुरधीमंत ॥ इनतैमोहूनैकनय ॥ समऊ
 ऊमतिमति सं ॥ ता ॥ २२ ॥ वातसनविचनपतसवा ॥ अ
 रेषुनिरियराय ॥ तुं आगमनो कस्रको ॥ सवतै आदरा ॥
 पाय ॥ २३ ॥ कस्रकहेधतरा दुस्रनि ॥ नकरिनपकुननिष्ट

कस्र
 ५९

उष्टमती सोई होत है गिनै दिन न में नष्ट ॥ २४ ॥ देखियु धिष्टि
 र की छ मात वस्तु को अपराध विगरी सुधे रं धर्म को ॥ अ
 कुरा जरे आध ॥ २५ ॥ सुयोध विद्या धन कुल विन व को ॥
 रां न सरता जोरा ॥ मेरे सो उन के कदा ॥ छिमत त व दिड घ
 घोरा ॥ २५ ॥ सुख उवाच वं स ते नंदि मदान ता है ॥ नमदान
 ता लाय न ग्रंथ पदै तौ ॥ उमर ते नमदान ता है नमदान ता
 को दिड व वदै तौ ॥ नंदि मदान ता है ॥ नमदान ता
 रता नू उ चदै तौ ॥ जो मग धर्म धन जय को सुमदान ता ता मग
 वी चकदै तौ ॥ २४ ॥ कवित सुयोधन कहै पीता औ रजस ना
 सद सु ॥ बातें ये गुवान की सुवान कैसे मानो दो ॥ ए हो स्याम
 दोण दि क सव ही न मा ए आप इन कै न रे सै कदा ए हृत्ति
 त आ नो दो ॥ सुची अग्र वै है जो ती नूमी को न दे न कहौ ॥ क
 ण दि क मार हू को मत ना पिछा नो दो गोरस की जानो क ह
 तो क सव सी ठी करे गोरस की जानो दो कै गोरस की जानो दो
 ॥ नई परतीत

॥ रदि है अयं ड मंड ड मंड मै कदा वैगो ॥ आये रंग न
 दिन दिया यई सो जा की ओट जाने जप न तु व
 जा वैगो सम न ग वी नीम की गरा तै धनु वि जै धारी

०१ मारीविजे विजयविजावैगो॥२५॥ डुहग॥ अहोसुयोधन अर
रनिसः सेवतहृदिसदीव॥ तजिरनकुंजैहे तथा जैहे नमिरुजी
वा॥२६॥ कवित॥ जादोनको मानमारिकिरीटी सुनइलैगो॥ तु
मनेनिहासोतैसैमैतोनानी होरिहू॥ वैरवाधिकप्रीतराजा
नीतकीनरीतसजुसैन्यनावसिंध आइवमैंवोरिहू॥ मिरिया
गदांते जमराजलोकब्रधीयहैं नीमादिकसरनके कंधनको॥
रिहौं छोरिहू नटैकअेककहिये अनेकमेरेनामरनछोर
नादिकेसैरनछोरिहौं॥२७॥ श्री कृष्ण उवाच आनयांनहाट
ककोकोमलसुनावसदा॥ अग्निनीरफेटतहांकविनमहांन
॥ आनधातुआनपांनकविनमहांनहैपैनीरसोरयंचतहं
हीकीहांनिहै॥ सांचमांधर्मवानपांडुपुत्रकोमनहै॥ युध
केषयानईइरुइकेषमानहै॥ आनधातुकेसमान॥ जानितैरेव
॥ आनहांनकैहैमानवचननिहांनहै॥२८॥ कहैकुरु
वीरबस्त्रिवीरतेकहोहोतुमदेवअंसपांडुनतैजीतिवैको
लगाना॥ धर्मराजवायुईइअस्वनीकुमारपांचोहोतैअवता
तनो॥ दोतीराजसागना॥ कैहैहोनहारराजकरैहैनरतबं
॥ जीवकोरुजीवकाकोमैरेअनुरागना॥ तरकैसंधाकैहैन
केजुरेतैतोऊ॥ धरकैविनागकैहैधरकैविनागना॥२९॥ जी
वजीवकातैमानप्यारोमोहूंवाकदेव॥ जेतैदेहधारीतैतेका

नीसमकरण दोरा मद्रयती हसासन सवे

हारिदेतो आपतेन देहे उप

याही तेन और कछुचित को विचारे हो। यो तो हो

जसो अहार लोक पर लोक दी के गदा के प्रहर ही ते सया

॥ ३४ ॥ धा॥ धतर ए उवाचा॥ नीम नीम वात है। धनंज

गां जीव अयं यतो न धन को दारि हो। कर्न दि

जरि है उधरी है इसासन नाहि। युधिष्ठिर छिमासी लमही

॥ जल देन कुल सह देव ओम मंडल है। वना

तो कुं पारि जो चतारि हो। पांच महा तत्व जैसा पांचो

नापतै तउं ज छुते वासुदेव मेरे मन छे दडारि है। ॥ ३५ ॥

न कुरु राजसमजा वैकाजः कदत समाज वीचहि

मिरे कही वेकुं सन नीजे नीके सो वदे को

न को देवो नाग नीत की निसां नी है। नां तो सब

न को कहै नासः हो नहार हां नी सो तो जाहर ही जानी है।

॥ घन रुकी दां नि जां नि। महां घन दां नि

पंक दानि की नहां नी है। ॥ ३६ ॥ स ना सद

रजसे न्यपधतर ए जे से विडर निहारी है।

क ना वदै। युधिष्ठिर सोः पांच गोम मांगे तासं तो सको विचा

ये। मो सो है वसी टी समजाय वे। कुरु स कहै चारुत ऊं जे।

३० तिसै न संघार टारिये ॥ एते ही ये मेरे कसो वाय के व घ ख हो
३१ कहें तावी च हो तादि के सै के निवारिये ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कैर क ॥
सोच दें कस को ॥ घ सौ च दालन घाट ॥ उ सो स यो धन दे वि ह
रि ध सो रूप दे ए ॥ ३२ ॥ क सो स यो धन कस को ॥ ग यो न अ
ग म म न ॥ रु स च ले न प सी य लै ॥ गो य डं चा व न क र्न ॥ ३३ ॥
श्री ह ल ड ॥ तं ले न ज ग रु पा डु स त ॥ हो ड डिर द पुर ना य ॥
घ रें जु धि छिर तो र प ग ॥ व ज ड स यो धन सा य ॥ ३४ ॥ क र्न ड
वा क हो आ प जै सै इ करै ॥ नि र लो नी स त ध र्म ॥ त जु स यो ध र
न स म य ॥ क र व ने य द क र्म ॥ ३५ ॥ बु ल्यो मि लो स त्री न को ॥
ड ल न स र्ग को डार ॥ ३६ ॥ फिर हर संधि क पा टे दें ॥ म ति रो क ड
य ह वार ॥ ३७ ॥ क हि इ त नी पी छे फि सौ ॥ क र त स र्म नित ने म
॥ प्र या आ य ता ही स म य ॥ ही य अ सी स जु त से म ॥ ३८ ॥ कुं
ता जा ओ क र न को ॥ त म म पु न व धां न ॥ पां च अ वु ज जु त
क र डु स त ॥ रा ज नां ग पु र पां न ॥ ३९ ॥ मा त क र न र क छ
ज वि न ॥ कियो आ ज लो रा ज ॥ किये ज ग दाना ही पु नि आ
ह म दे छ व सा ज ॥ ४० ॥ न प त स यो धन पी त तै ॥ ता दि त ज्यो
हू स आ ज ॥ मा ता गां धा री पि ता ॥ अ त रा पुर म हा रा ज ॥ ४१ ॥
त जै स यो धन कू न तो ॥ पां च पु त रै मा हि ॥ ह तै न तं त व व सि
प र ॥ ति न हि त जा च त मो दि ॥ ४२ ॥ ह तं वि ज य को व सि प रै त

वस्तुनवनकुं वदाराहतेकिरीटीकरनकुं॥ तोऊरहेंपांचकुं
 तोरा॥४८॥ दतनाप्ररतेंआयकै॥ कसकदतजुतरेयती
 नवसीटीहैचुकी॥ अबतुमकुंनहीदोष॥४९॥ अंधपुत्रम
 तिअंधनपाहेंनदियेउपमांनजुरिदीनीमअर्जुनजबहि
 देहैन्हमिरुपांन॥५०॥ लोकविता॥ छलसकोकहावडहमांनो
 नांसुयोधनतेंसचकुंननासकाजःगदकेअदिनकुंकरिटी
 कोजेनीअसोबोलाउद्योदोफिनुजाकरिहृगधातेंसिध
 अरिकेकदनकुं॥ बडेरन्यनकेहीमेयहरायरायेहेकुं॥
 मालपेहरायदेहुपंचहीवदनकुंमहास्यंदआसनपैअ
 अग्रजविदायदेहुकोरवपगायदेहुजमकेसदनकुं॥५
 ॥॥ दुहाइतनेकोयेदुतकरि॥ मातुलपुत्रसियाया॥ पवय
 सुयोधनधर्मप्रता॥ कहिकछुकुकसुनाय॥५२॥ तंतपसी
 मांजारगति॥ कुजकुंगरमतिनीच॥ अंतरकपटीधर्मस
 तःवसोसाधजगवीच॥५३॥ जौनाचौवेगटविचःवेणीस
 संगुहायःसोअर्जुनकरणदिहूँ॥ बोलतनीतबताय॥
 ५४॥ डरयोधनकैसिरसदधिःबंधाहूमिईहिबेराडरदि
 बायकोचयोसिलै॥ असोकदाअंधेर॥५५॥ युधि
 ससुतर॥ सवेया॥ नितप्यासहुसासनओनकीतौ॥ चित्तन
 कोयोअकुलावतहै॥ छिनजामलौंदीततजामजे

गोड
६२

द्योसते मांसलौ जावतहे॥ फिरमातुल्य पुत उत्क कुं मि
कौ कुं कदुवाद सुनावतहैं॥ नय तेरी अनीत को नाक लो
नीरः बद्ये अब स्वासन आवतहैं॥ ५५॥ पुत्री हीन के हेयी
ता॥ मात अंधममसोकः मरतो मारे अब धकुं॥ आवरुसीम
अनोक॥ ५५॥ अजुने उषाचन चिछो दे बेराट मेक नहि र
के प्राण गां जीव जुत न चरी कमौ॥ अब हरि ले कुनिदां न॥
८॥ ईतें सात ग्यारह उतौ॥ मिलि असो दिहा आनं कुरुते
चरै रकी आ॥ नबि निरह ए थां न॥ ५५॥ रथी महारथी अ
तरथि संष्ठा॥ रथी रथी ते जुध करि॥ रथे परिकर सोय ब
ध जो इव लफुर नितै ताही की जय होय॥ ५६॥ महारथी ए
क ले रे दस सहस्र तौ॥ रथि ले तरथ साज॥ साय छिदय उप
मारथी॥ चकर सह निज काज॥ ५७॥ रथि ले तनि जरथ हि
करि अग नतै जुठः कहत ताहि कुं अतिरथी॥ जे दे बुधि
विसुध॥ ५८॥ डिगलः॥ दोहा॥ १॥ नाबाइ लस कर लार॥ धर
मइत जिस डो धणी भारत बालो नार॥ नीमा अर्जुन रेनु
जा॥ ५९॥ दे महारथी हजार॥ जु जुधान सिंघंडि जि साः ना
रत बालो नार नीमा अरजुन रेनु जा॥ ६०॥ धरु ड म्र धनु
धार श्रुति किर्ति श्रुति वरमसाः नरत॥ ६१॥ उतर कुवर उ
हार॥ जो पद कुल विराट डर॥ नारत॥ ६२॥ अनमम ते ज

अपारः सुनज्ञानेन विजयमुता ॥ नारता ॥ ५॥ सुतिसोमक
 उमिया ॥ प्रतिविधसदरेव सुवगटा ॥ नारत ॥ ५॥ सतानी
 कगदसारा ॥ धृष्टकेतुचिकतानधत ॥ नारत ॥ जे सो ॥ ५॥ जु
 धसदरेव जुगारः ॥ करसिंहकस्तजोमरदा ॥ नारत ॥ वा ॥ ७॥
 केकयन्यतकुंवारा ॥ कुंतिजो जयसुजितकदारा ॥ नारत ॥ वा
 ७॥ सलजरी श्रवसारः ॥ डरयोधनसलसोमरतः ॥ नारत ॥ वा
 जो नार ॥ करणश्रीसमकरा ॥ ७॥ कयाचार्ययुधकार
 ॥ जयनेडेडश्रीजिसा ॥ नारत ॥ वा जो नार ॥ करण ॥ ७॥
 नयवाल्मिकनिरधार ॥ कतवर्मा जगदतविकटा ॥ नारत ॥ वा
 ७॥ अलमासरआधारा ॥ हसासणविकरणडसदा ॥ नारत
 ॥ ७॥ यनायुधिर्कितारः ॥ असकेतुकां वो जविंदा ॥ नारत
 ॥ वा ७॥ कतडरमुषजयकारा ॥ चित्रसेन अतुविंदविचित्र
 नार ॥ वा ७॥ सुदत्तगयहीयां सारा ॥ चि
 वलः नारत ॥ वा ७॥ सकुनीजुधसाधारः ॥ सुसरमा सरया
 सुनटा ॥ नारत ॥ वा ७॥ डरधरचीतउदारा ॥
 छमणकुंवरा ॥ नारत ॥ वा ७॥ जेवांका जुगार ॥ सलिसुत
 डसासनकनतः ॥ नारत ॥ वा ७॥ धयकुरुपांडवधारः ॥ आ
 म्हासाम्हाउत्तजियां ॥ नडसेनाहोय नारा
 रजुनजुजा ॥ ७॥ इति श्रीपांडवयसैडसंज्ञिका

वर्णिनवममयः॥१॥दीहा॥छिपायनिरघनागपुरःस
तसमजावत आयः करतसनाविचसांतिहितः जोउतपा
तलवाय॥१॥कवितयोसचारिकुं कैनिसानिसाचारीकुं कै
द्योसवनचारीनग्रनग्रचारीवनधावेहो॥आमवीचकूल
कंजमेलगोहैकैरीः कालदेसवस्तुकोविरोधकोलधावेहै
विनापोनतदेधजाज्वलैनाआकृतिहोमग्रधनकेकुडकु
ह्येत्रदीपैजावेहै॥होतउतपाततत्रवंसकैअदनकाज
कुलकोकदनपुत्रहूनसमजावेहै॥२॥दीहा॥धृतराज
नरतम्यउयरजतनकछु॥मिरोकुरैंनतात॥करियेआप
उपायकछुसुनजुधकीकात॥३॥कासा॥१॥गुपतप्रगटकी
जुधकीकथा॥करिहेसंजयतोहिः देवादिकरुयेप्रकन
जोनवतकसुहोहि॥४॥दसरनबीतेजुधके॥संजयजनप
विगआयः पुछीनपजैसीनईः तेसीकहतसुनाय॥५॥सज
यउवा॥छविनकोगुरुधनधरः छविधर्मनररूपः सांतउ
गंगातैवभवः गिसोपितातवभूप॥६॥सुनिपितुबुधम्
छितनयो॥कैसचेतकियप्रसा॥कैसैछलकरिममपिता
कहकृगिरयोहसः॥७॥कात्रीकशुलत्रयोदसीजुधा
रंनसहेतु॥छमम्हरनीसमरचीः अर्धचंद्रकपिकेतु
॥८॥पछिमपांडवपूर्वकुरुः जुरीसैमयहनायः मानकं॥

॥ कस्यायुक्तुत्कृतिरिहस
 जहं उपदेस ॥ जाकेवलगरजन्त्रपति ॥ सेमन
 सेस ॥ १० ॥ रूपजुधिधिरधरमनिधि ॥ उपदिष्टा जगदी
 नं जय नट जहं ॥ हेजयविसंवावीस ॥ ११ ॥ कहे
 ॥ अर्धाक्षोदणिसंम ॥
 ले ॥ त्रियोपार्थ उरनाया ॥ १२ ॥ कहे अर्जुनविषं दोउसेम
 विच ॥ रथथायकृम्यद्वीश ॥ जौलोकधकरतारपुरस ॥ लष
 मोरसमधीर ॥ १३ ॥ रथपासेपत अर्जुनलषी ॥ दोउअनीक
 करिआन ॥ बांधवसंबंधिसमुजि ॥ डारिदियेभनुबांन ॥ १४ ॥
 अर्जुनउवाच ॥ कविता ॥ काकेओनतीमांम ॥ नागनेयशा
 लेबककवहिनेउपितामदा ॥ गुरुजिमाविबो ॥ रुधिरकेरु
 नेजोगकोनअसोरजचहो ॥ यातेअेयमानतकुनीमहा ॥
 अन्नधारिवो ॥ पुनकितनऐरेमकंपतसरीरमेरो ॥ विकल
 रुदयताकंकैसैकरुनपारिवो ॥ कोउकहोसंरकाउकायर
 असाधकहोअेसेजीतवैतैतोसदेवनजोहारिवो ॥ १५ ॥
 अर्जुनअषंडआतमावोनासमानैमतपोनतैससतना
 हिआगिवैनजरिवो ॥ जलतैगलतनाहिचितंधरिवो ॥ ज
 वैतैराजमरैदीतैलानस्वर्गसाजछत्रीकोअनमधर्मउ
 छवतैलरिवो ॥ बारिवोनवरिवोनांगारीवोनगरीवोसं

ॐ शरिवोनहरिवोता मारिवोनमरीवो॥ १५॥ छुहा॥ अग्निर
तः विषदत्तनरः त्वेवशरधनहारः वक्रवक्रवकारनसह
गहिः अवधवधवटकारा॥ १६॥ कविता॥ प्रथमदत्ताहता
दियोहो नीमसेनजकुंदजैलायायेहवी आगिमैजराये
हो॥ तीजैजोयदीको अनिमर्षणदेवारकी नोचोयेसबेवैन
वके अंगहीछीनारेहैयंचमेरसाकुंधोसिवनकुंधायादि
येछुवै आतसस्त्रवंधमारिकु आयेहै॥ एकअंगहीतैवध
होवनहीकुसकहैकुसवटअंग आतताइतैअधायेहै॥ १७॥
गारमैअधायदिवचसुदैरियायोरूप॥ केउसीसने
नपायुकेउजुजाधारिहै॥ ससचंद्रअग्निजैसंसस्त्रओर
जुषनहै॥ दांतनकीमेघवीचमरीसंससारीहै॥ ब्रह्मादि
ककोद्यावधीकरेहैप्रसंसताकुंदेपिकेकिरीटिदेहदसांकु
दिसारीहै॥ हूजीयेप्रसंसंतिरूपकुंदियैयेदेवमैरेहैनि
मंतरचनंतिहारिहै॥ १८॥ छुहो॥ अर्जुनगहिगाजीवको
कियोअचिटंकारः तोलौंपदचारीनपतिः कियपरदत्त
संचार॥ १९॥ नीमादिकबांधवकदत्तः एननरतकुलरीत॥
अधिकदेशिरियुसैमकुं॥ आतुरहोनअनीतः॥ २०॥ छ
सकदेनपल्लेवनाकोउसनकारनजातः निस्मदोनको
परिकमनः करिनपवजतवातः॥ २१॥ सबेयो॥ विष्कपदी

ततेबिनती नृपयुधिष्ठिरययुदरावैहो अवजीतरुहारके
 हाथमेजापेकपा अकपासोइपावो। घरतैकरैजघीत
 कीधोवनतोठिविधामेअरोनिसजीअकुलावै। कुरुनृपा
 नीकं धमएकंकहोहमघोरयुहवैकीकामैठेगावौ॥२२॥
 हा। शि। जयहांआगा मांगवैनही आवतकुरु राजः दमवसन
 होवतनही। होवततोरअकाजा॥२३॥ अबतेरीजयहोयह
 गुरुजनदेतअसीसः दमतोकारनजीवकाः नरेअन्यायअ
 नीस॥२४॥ नृप॥ जौलौनीसमझोनदेउः सरखधरेधनायः तौ
 लौइइदिकनजुतमेरीजयनलयाया॥२५॥ नीसमकदपुरव
 मा तिनकौदेऊंअष्टः मारिवांनगोजीवधरः गतकरतम
 निष्टः॥२६॥ जेनकहैअधीयवचन। कहिरैससउकार।
 ताहिसुनतधनुवांनसबदेऊकरनतैबारी॥२७॥ सवैया॥ क
 वहुनलघीनसुनीकरैसंजयः सनकयाअरनूतन
 रराजकेजाचीबेरानीरधीचनोबवतेजीतवेकीविपवी॥
 निकुंरपांडवसेनजुरीतिहीबेरमेनृपयुधिष्ठिरबीन
 नीजिनतैलरिबोतिहैनीसमझोनतैजीवरीयो नयआ
 सयाहीनी॥२८॥ उहा। गुरुजनयेवरसनलै। गयो जुधिष्ठि
 रतात। घोरजयोकेदिवसजुधः तीजेहीनकीबाता॥२९॥
 किबुंविताअकासा। अवितंबितअकासपूर सरकेसमीप

नलागलदरतुहै धर्मपुत्रनातनको गातनउछाह नरे
हायमुयक्लिबकदिदीयहदरतुहै नैचकनयावनो
सो ननरनो नमि नर केतेनरनाहतेसनादपहरतुहै
चोकिचकिआगे। औरकहतनिहारिदेखो नीसमपी
ताकेवेपताकेफदरतुहै ३॥ छंदयधरी॥ वनअदउ
जयसेत्पावकार॥ वतसमताइयप्रहरनप्रहार। र
पीतैरथीनयकोधरुड॥ अतरथी अतहिरथीतैआ
गुड॥ जुरमहारथीमहारथीजुझा। पदचारहितैपदचा
रकुछ॥ असवारनिरो। असवारअग॥ समकुलबय
गुनलयलयसमग॥ प्रथहिकहेनीसमप्रकार॥ इतने
रहोयनसस्रवार॥ कवचदिनहोयसोयुलेकेसविनधनु
वतथा मुर्छितविसेस औरतैनिरतनहिदतेऔर॥ जोवि
नसमानतिनपरनजोर॥ बंहतैहोयबाहरवहोर और
रतेवारतकरतेहिऔरदिनडेकरहो जुधनयमलीन॥
निउरतीत्रतियदिन नईनविन॥ पदचारकरतगजसिर
प्रहार॥ असवारथी परकरतचार॥ वहसमयपितानी
समउमंग॥ जोविकटकषवतकरतनग॥ अनिमव
केजेलेबाणआप॥ पाचालहतेतिहिरिसप्रताप॥ पि
तामहउतैअजुनपुनीत॥ जुटेनदुहुचहुलोकनी

ता॥ यत उत हि परे नटकट अनेक कहत धृत वचन अमो
 न्य के काजोग निरुत वेताल जुहा॥ संश्राम वीचना चतस
 सह॥ अख जोर ईकरत अरु जन अस्यासा॥ नर राक्षसि
 स्म सोई करत नासा॥ अवकास पाथन हिल होओ रा॥ पि
 रर होवे ठरय मंच गोरा॥ ३१॥ कविता॥ नीसम कस नोन
 जुधका जगोन की नोज वसुनत अवाज है समाज के ठगे
 ठगे॥ बांनवर सांनम जु मान कै र है धिमान॥ मावत गिरा
 न मुष बोलत धगे धगे॥ श्रीन सरिता नकी बहां न परे वीर ब
 के॥ देत धक थोन बिच की चमै पगे पगे॥ तुंड परे मोकरा अ
 वाज देत वोकरा से॥ मारे डोकरा के फिरे छोकरा नगे चगे॥
 ३२॥ छंद मोती दां॥ इहं दिस बाजत संष नमान॥ इहं दि
 स मेचत ज्वांन कवाना॥ इहं दिस रष्य न पंथ न रुडा॥ इहं
 दिस बाटत विरन कुडा॥ इहं दिस घोल दिथे ध्वज डंडा॥ इ
 हं दिस गोकत है दंड प्रचंडा॥ इहं दिस नामगनां यगनाम
 इहं दिस इमनायमनाया॥ इहं दिस बाजत नेरिय तरा
 इहं दिस कोध बदेरन सर॥ इहं दिस दंतिन पंत दियात
 इहं दिस बंदर आवत जाता॥ जहां तहां जु दत जोरिय ज
 न जहां तहां नेच कन्मि नयाना॥ जहां तहां कुटत तटत
 कंधा॥ जहां तहां जटत सर मध्य॥ जहां तहां रथ न मथन

डि० सर॥ जहां तहां संवन के रवधर॥ जहां तहां तू दत मय अथ
६ रा॥ जहां तहां जटत उछ प्रकार॥ जहां तहां चत के कक बंध
जहां तहां जटर दे जु डू डू द॥ जहां तहां तो मरते ग प्रदारा॥
जहां तहां मार हि मार उचार॥ जहां तहां कुं जर पिं जर कुट
जहां तहां बान बर म्म न तट॥ जहां तहां हाथिन ते सिर का
य॥ जहां तहां नेट त न मिय आ य॥ जिते तित घोर न के अस
वार॥ करे द न डू वन ची च प्रदारा॥ जिते तित कुध कर य
रय॥ प्रहार त सख न जिक दि आ य॥ जहां तहां ने र व ना च
त स त॥ जहां तहां दिस त स त क स त॥ जहां तहां डा कि नि स
क नि बिर॥ जहां तहां ले त अ दार अधिर॥ जहां तहां गा व
जोगिनी गीता॥ उचार त प्रे त पिसा च गी त॥ जहां तहां अंत न
बंद न माला॥ जहां तहां लोट त वीर बहा ल॥ जहां तहां ले मु
ष अंत विरंग॥ उडा वत दै म नु बाल पतंग॥ जहां तहां जो
गी निष्प प्य र पूरा॥ जहां तहां उठ त बान क घर॥ जहां तहां य
जर ये जर था बा॥ जहां तहां तू द त बान नि दा व॥ जहां तहां ल
द त मुंड म ती रा॥ बनाव त हार महा बर बिर॥ जहां तहां नार
द आ हरि ये स॥ लि ये जु त को त क दे व म दे स॥ जहां तहां अ
छर वीर बरं त॥ जहां तहां के वर मा न करं त॥ ३॥ छंद नि नं
गी॥ उऊ वे द ल जु ट त अ रि सि र तु द त बान बि छु द त ना॥

हृदता पलन्योन उमहृता नोदिनदहतः सोरनिषु हतः
 रजुहृत जवसंघ नयानक अदन्तवानक उवत अचा
 नक धुनधानका वरसारित जानकः वरयतवानक ॥
 बीजसमानकः असिपानक जुहुत जुधलायकः
 यशायक जुगानिगायक मननायका वरुवीरसराय
 क जुसमननायका कहिजयवायक रसछायका
 वनपकुलमंडनु यलनविहंडनु जसनवषंडनु
 हंडनु फहरतजयजंडनु तेजप्रचंडनु अतिवलनव
 डनु जुजहंडनु ज्ञाननतेणारे कुलउजियारे नैननि
 रो गुननारे जयजसरयवारे विध्वबुधवारे
 रियवारे बीरसरनिनै सुनवतलिनै इसकतकीनै
 यदीनै समहरगुनजीने विषमयलीने वचनअधीनै
 परवीनै जीनकी जुधकरनी समजचचरनी कुमंतनी
 दरनी जगवरनी प्रभुताविसतरनी रछकधरनी की
 येवेतरनी यदधरनी श्री नीस्मसुकटमनी सुमर
 घन नामलियततन मनपरसना जेके जुधलछन य
 रमविचछन लियतअमरगन कहिजयजन नोका
 समहरनिध नीसमविधविध हरजन जुगान दियनवा
 निध पलनयखापदगिथा उचरबिबधविध संघ

० किय निरनिध ॥ नित प्रत जु धनी के ॥ काज धनी के ॥ जग कि
के ॥ उछाद स नी के ॥ जस जय टी के ॥ साल अरी के ॥ इह दि
के ॥ ३४ ॥ हुँद मधु धार ॥ धक स मर धार ॥ पहर न पहर ॥
जुहुत अपार ॥ कोग न पार ॥ धक को ध धार ॥ जाहर प्रचार ॥
उठत अनेक ॥ जुटत बिसेक ॥ छुटत कवांन ॥ तुटत सत्रा
न ॥ चुबत सतिर ॥ फुटत सरिर ॥ जुग निरुद्ध ॥ छुटत समुंड
उठत कबंध ॥ तुटत सुरंध ॥ छुटत सयाग ॥ रुबत बजाग बो
लत बकार ॥ नाजत अधिकार ॥ तोलत सुयाग ॥ दयदाक अं
ग ॥ ओलत जटिस ॥ चय चती यरिस ॥ ओलत सडुंम ॥ विनमं
रूड ॥ धर परे तुंड बो लत प्रचंड ॥ बरु परे सुम ठेयंड पंड
रप चुर चुर ॥ छिनिक टहर ॥ सारथी धिर ॥ लेन जत विर ॥ धि
कार देत ॥ फीर सस्त्र लेत ॥ धक जुध धार ॥ डारत प्रहार ॥ पांच
ल राय ॥ निज बल अघाय ॥ गो निकट बर ॥ अति धार कु
ध ॥ तास मय विर ॥ अनमनु धिर ॥ जुर निस्म जुध अति ब
गो कुध ॥ सुत याय याय ॥ सातिक सु नाय ॥ बरु बटीरीस
॥ पांचाल सीस अतिरयो एक ॥ किय नास के क ॥ लिय क
दल न न चित न योचन कर बिय आय ॥ मीट बिय आ
प ॥ मीट सुर्य ताप ॥ अवहार किन ॥ अवकास दिन ॥ निज प
सवर आय ॥ निरस लाघाय ॥ कीन सु आय ॥ तन मटिता ॥

पाकवित्तसंजयकहतगाजीवतैमहावीर्याण्डवप्रजास्योता
दासुनेद्वयानमैद्वैवदेसनागकोद्यावधीतैलरुउतेश
तैमेघबंदनरुकाईव्योमयानमै॥अमीपचनार्त्तापेछाईव
पलादेइदेयीतारुन्यपैब्रधगंगापुत्रकीनिदानमैनिनपिता
ध्यानमैअसारयीअग्यानमेतंवानरदेम्यानमैपयोवाकदे
यानमै॥३५॥कोइकहेअग्यानको॥स्वयंवल्हकोदोयतोहू
संदनचक्रकरःधसोप्रतज्ञाघोया॥३६॥कविततीजेद्योस
कुरुब्रधःसचुसेनकुंदरायकिरीटीकोआयकोपशकमी
वायोहैःसारयीमहारयीजेदोनोरुसचक्रितदैअरवेहू
॥अस्वसत्रछिडनहीपायोहै॥आगेपीछेसमअपसम
जोनिहारेताकूरयनांतषावैमरापंजरयोछायोहै॥आं
वीरवानतैवचावैषानवासवाकेगंगापुत्रवानकोबिता
नसोवनायोहै॥३७॥पितामहपारयकेप्रवत्तप्रहार
पार्थिवअनेकअेकअेकनाअगेरहै॥अर्जुनउदारवत्त
अरुकोविसारवैठोबांमपानस्थिरीरुतगांजीवधरोर
॥मैंजकौनिवारीनक्तपैजप्रतिपारवैकौरयअंगधारिग
चावकधरोरहो॥ताछिनबिसंनरवासंमरकौकीनोको
पकंमरतैछुटिपीतअंवरपागेरहो॥३८॥करीहीप्रत
ज्ञाअस्वअेरकप्रतीदविनालोइरुंछुसुनसुअआरी

३० वानी है: ताहि कृविसारि चक्रसंदन को धारि चले नीषम पैता।
हीवार रसा अकलनी है। ताहि समजाय वे कंकटितें सुजो है
पटध जै मती रास की प्रतज्ञा उर आनी है। पटको तथा निष्प्रा
य: वंछे नो कज्ज वपरै ता को संग छांड़ि दे तो नीत की निसानी
है॥३९॥ दोहा॥ आतुर नर रयतें उतरिय करे हरि के पाय: य
ह अमाय कदा करत है॥ डारि दिये धनु बांन॥ मै समीप अव
मारिये॥ तजिये कोय विधांन॥४०॥ आप कही मै मल्ल विन
न्ह मिहर कुं सब नार॥ हमें छत्रिका नांगिने॥ बोल कुबच
न विचारी॥४१॥ डारि चक्र हरि हम दियो: किय उतर बज
रज: तजी प्रतज्ञा मोर मै॥ तोर प्रतज्ञा काज॥४२॥ जुधनयो
नव दिवस पुनि॥ घोर घर सपरधात॥ कहत पिता तें तोर सुत
नवम दिवस की रात॥४३॥ पीता नरो मे आप को॥ मेधा सो
संग्राम: चाहत पांडव विजय तुम: करत अकत से काम॥
४४॥ हिंदु धरी अर्जुन के सरत न कटे नाल: त कहत व
सत नाट साल॥ सयोधन सन ऊरु बबतांत॥ यकनयो
य जुत मद असांत॥ यकनयो न प जुत मद असांत॥ रिधन
कहत दी जै वताय: मोतें संग्राम को उजुरें आय: नर ना
णव दी नि केत॥ तिन रिषन वताए जुध देत॥ तिनयें
नपम दांध: सीतल तो उबोले कपा सिंध॥ हम रिधीत पस्या

करतलेषी॥ जुधकाज्योरकोउसत्रिदेमि॥ मामोनवचनफि
रजुऊजाचिः नारायननरतैकसौवाचः यकअस्त्रउचारन
करऊगुदा॥ मरनष्टदोययदडुष्टमुष्टः नरकनतहकासो
नमिपारनः वेसां वधानंसजिसखजाता॥ मंओअनहस
रकरणसमुजः वेसोसुरुकेसबसखपुजः मुयसुकेनै
नअरुअबलाडाण॥ सरकरणतैसबकेरुकेषाण॥ निज
सेनडुषीतनविधलीतकीनः दयाजुतनपदिरिपीअन
यदीनः उवत्तारहरनअवतारधारि॥ विधिधारयनारी॥
केविचारीतेरीअजयसुरासुरतैअनुपा॥ वसुदेवतनया
अर्जुनसरूपा॥ पनकसोनजीतंतोउपातः तजिहूरनतीर
यषांततात॥ सुनिगयोसुयोधनआपयांन॥ सुतधर्मआय
धनसमाननीस्मतेमिओहरिक्तक्तन्या॥ आदरदिया
सनअनपः पितातैकहतपुनिजोरिहाया॥ सबमरतजात
नितमोरसाथा॥ वरुकोनत्रियाजिनतैजुदीवः जोरेनआप
रिनफेरीपीठा॥ कदिनीस्मसियंडीकुंवरकाजा॥ रिनपातस
मुषममकरऊराजा॥ तातैनदीसनमुयहोऊतातः तासम
यकिरिटीकरहिपात॥ अकसोपितासुंकीयोव्याजः गांगे
यमहाबलहनंतकाजः ईकएकदिवसदंसदसहजारः
सवारययोदेकरिसहार॥ ४॥ ५॥ ६॥ एजपुत्रइकसहस्र

नि॥ नवसतमतमतेग॥ अष्टसहस्रमारेरथीदसदिनवीच
अनंग॥ ४४॥ इएवानअर्जुनतनय॥ उत्तरसंघरूस्वेदती
नपुत्रवेण्टको॥ मरेसुदसदिनहेत॥ ४५॥ सतरसुततेस
नय॥ नीमसेनकेहाथ॥ मेरेगयेकैवारमे॥ नीस्मजुधकेसा
थ॥ ४६॥ अग्रसीयंडीकुंदीयो॥ रस्योकिरीटीपीठ॥ पूर्वत्रिय
अवासमजि॥ नीस्मवचाईदीठ॥ ४७॥ दीठवचाइरेषिनरः
मेलहीयेधनुबांन॥ नयेपगमुयपित्रको॥ दतवोपापपिछ
नि॥ ४८॥ नीस्मजेनअरुकर्नको॥ वरुसयोधनकेर॥ मुस
कलछलवनमारिवो॥ करिप्रहारहियदेरी॥ ४९॥ लगेवा
नगाजीवको॥ ईडवज्रकेरूप॥ गिसोपितारनन्मिमै॥ सरस
आसननय॥ ५०॥ इंदुधरी॥ लषिगिसोनिस्मकुरुहीनगर्व
पांडवनआदिरदेघेरिसर्बकियआयानीसमनीरकाजः स
वजीयेकमंडलः कुरुसमाजः अविलोकोनीसमविजय
ओरः कियप्रगटगंगदतिबांनघोर॥ आचमनकीयेजल
पानआपः पुनिकस्योकरनतैजुतप्रताप॥ रुयोधनतोर
अधीनवीरः मेमस्योअबहुकरिसंधिधीर॥ तुमलष्योतेज
गाजीवतात॥ कियबाणमारिगंगाविष्मात॥ कर्नउवाच॥ अ
धीननपममससवातः ततकालसंधिजवकरुतात॥ शकहै
कुंमोदिवरदानआपः सखतेमरुताकेप्रतापः मृतलोक

किरिटीविनाधीरः अधकरतातेरेकोउनवीरः अैसेच
 सिनाधारहततोरः तोकरहुंजुधनपकरमघोरः नीसम
 टिगजामिकनरपहायः अवहारसेन्यदोउसिवरआयः॥
 ५३॥ उद्दा॥ करनहिसेनापतिकियो॥ चाहतयाहेतवपुतः
 रनकह्योहिजनेनछतापदनहीहोयअनूपा॥ ५४॥ नयो
 जेनसेनापतिजुधवनेगोवाता॥ आग्याकैजुधदेधिकेफेर
 कहुंजोताता॥ ५५॥ तरीनवअलोदनीः पांचधर्मसुतपास
 रहीसुमततेरेन्यतकैहेवेगहीनास॥ ५६॥ कवितधतर
 पुठवाच॥ जानेअस्वतीअस्वमेधनकेंवाधिराघे जोते
 निजरथनांछुरायेगयेकाहूये॥ रंमईकईसवारनिछव
 करेयान्मिजुधकोसियैयाजुधजीतलीनोजाऊपैकासि
 रजहंकीकन्यातीनहीपकरजोयो॥ स्वयंवरजीतकैनज
 सोगयोताहूये॥ अैसेपिताकोमलहीजुधकेनिपातनये

तदेयाहूये॥ ५७॥ जाहूसुतपुर

नवस्यसोईहोयहौ॥ कीजेमरा

५८॥ इति श्री पांडवयसैंकुचंजिकाया नीमपर्वणि

१०॥ अथ श्री एमुचि॥ उद्दा॥ पांचरिवसजणि

जध॥ हतनापुरमेंआया॥ जेनपतनयांअनितय

हतसुनाया॥ १॥ लोकगेयेयस्यपनं

30 स्वरेव सुखी ॥ वीरणां हि अणो मिथो यमु रितं ॥ आकर्षतां
ध्वितां ॥ उचैर्वै एरवादिवाद्या विविधैर्न संति वारंगना ॥
हा हा जो ए कुत्तो सितस्य सदने ॥ वाचं स मुदीर्यतां ॥ २ ॥ धतर
द्ववचन श्लोक को आसय ॥ सवेया ॥ जित जाठि जरा जके
द्विविधे ॥ ठिज घोष सुती समती करते ॥ फिर सोरधनु मुरवी
मुनिके ॥ कुरु राज के सबुस बे डरतै ॥ विजवाद्य अनेक ॥
दी गायक गां न तै दी सब श्रोतन को दरतै तित हा कित दो
न विडारि गयो बहुराष्ट्र असं नव तै वरतै ॥ ३ ॥ सोरवा ॥ म
हा असं नव मीत ॥ दोन पन न संजय डसह ॥ नायक जया
अनीतः जुध कीयो ड जरा जने ॥ ४ ॥ स नय उवाच सवेया ॥ जी
त सकैति न तै नर को जया ॥ शयक जो द्वै गुणान सो नां दी ॥ ना
ठि जरा ज के बांन समान करै उपमान पैं काल सो नां दी ॥ हां य
न मै चल चाल अ नोपम दे चित्त मै चल चाल सो नां दी ॥ दो
न वराह की डाट न मे परिके कटि बोक छुष्या ल सो नां दी ॥ ५ ॥ क
वित ॥ दोन के धारे बांन मारे ॥ सु विचारे ॥ सु विचारे बछः न
यमत वारे ॥ रुमे कऊ के रु के रु के ॥ बांन को संधान सबुषांन ॥
कोपयान साध ॥ विऊ के जहां के तहां लप हते के रु के ॥ नैन ॥
विडरणे ॥ अ नवेन तु तरणे ॥ सबै सैन्य हराने ॥ मुष अधर सुके
सुके ॥ वावरे से कैर दै उतावरे ॥ जिते के तितै ॥ जीवरे के धारै

रहे डावरे लुके लुके ॥ धो न कसो मांग न पसु पो धन म
वर जीवत ही धर्म राज मोहि प कराइयो ॥ अर्जुन छ ते देखे
बिन दिगपालन को ॥ शिन क देखे उ को विजोग कैसे पाइ
विगता धिपती यो सु समीने म मर वे को की नी कही से न
सो अर्जुन बुलाइयो ॥ न मन र कै अ देखे न आयु आस
नाहि स बुजुध ज चै ता के समुष सिधाइयो ॥ १॥ इहा ॥
हीन ता कै व्यताः अर्जुन के रोय ने मः आयु अन
अव सी आयु राधी हे ले म ॥ ८ ॥ इतै एक गां जीव धर
पुचा स हजार ब्रह्म तर थी इ क प्र हर मो ॥ की ने बिज न
हार मोर अरु ते सार थी ॥ ए थी ह्रस्व अरु पाथः लघे
त अरि पर स पराहत त जात निज साथ ॥ ९ ॥ कविता ॥
स क सु धरुं किरीटी के ॥ प्रितै करी वे सो न ग द ता न
को अंतर ले र सो ॥ स्व व ल वि च ल निष्ट अ सु नि ति
तिष्टः आयो य उ चार त ही गां जीव रुं छै र सो
न एक ही प्र चारि दिग आवत सो
तु ड चै र सो ॥ धर्म ज के वि जै के वि ता न से त न गे
त आदि की लगे पि वे को के र सो ॥ ११ ॥ न ग द त नै वे
रु प्रे सो अर्जुन पौ ॥ न रा य न वी च के लो न र रुं व चा य
पट का वर रां न के हो इष्ट का ज स

० सोकथासमुजायकेकहेगजमारिसीमडारिनयेनप
विजयउचारीनिजबलरुंसुनायकै॥जेनिरेहैआयकैके
आयुधउगयकैवातेजरुंरूपायकेपसोमुरछायेक॥
तुयुध॥दिहा॥दिहनअर्जुनविनरसोधर्मनयकसोआ
पःवरवथाकिअथवावथाः नयेतोसरचाप॥१३॥दि
वाचचकवदअवरचतहो॥आजयकरिहंनयःनांतो
तिहंसरकोउताहीकेअनुरूप॥१४॥अर्जुनकोजुधको
यो॥संसप्तककेसंगःतापीछेदिजज्ञेननैकीनोवदअने
॥१५॥जुधिद्विरउ॥अदवेधयेहारजय॥नगीपुत्रविष्मातः
वेधतहैपकुम्भदरिःतंअथवातवतात॥१६॥तोविनआ
निमनतीनहःवेतोनहियहकालःतंवेधहुतवपश्ये॥र
दिदेहमसबलान॥१७॥चक्रव्यूहकेधवेअनि
वरउदारःधमराजआदेसतै॥चलोक्वचधनुधार॥१८॥
कि॥जेजयकोमसुओअजयसयोधनकोःछुड़वीरधीर
रनकोअजसलषागयो॥विजययुधिद्विरकोसुजसकिरी
टीजूकोःज्ञेनकोपतननाहिजतनरषागयो॥सुनद्राको
सोकअदवातनामउतराको॥केउन्पपुत्रनकोकाल
जुंशियागयोःइतनापराधकोचक्रव्यूहरंगनमे॥आ
र्जुनीकेआगमतैआगमदियागयो॥१९॥ज्ञेनकोइहायो

नडसहृदिषावतर्दिषः शरुननुसासनसेचकव्यरुवना
हो जाकोनिरनेदकौवे नर्तवंस नृपनयो पा यपितुय
लुज नार नीम नायोहैः पारे अवनीसन केसी स अनिस
कीने के ते ईकुमार मारे तो उन अधायोहो सुन झरुं पकी
लेया लीजे वारवार जाके वीच वीरधीर अनिमनु सो जा
हो ॥ २७ ॥ वेरी वधान ते हे सुयोधन की सैन्य नारेः अर्जुन ते
को ते जन घत सबायोहो वडिवाको नारजे सैचकव्यरु
पे वेगद सजग काज वीर नड दर सायोहो वाप रुको आ
नारज और सब त्रिन को ताके सुय वाप जे सो आप पद
गहो ॥ सुन झकी रुं पकी वलेया लीजे वारवार जाके वी
व वीरधीर अनिमनु सो जायोहो ॥ २८ ॥ डडा ॥ काका और
नजी जके ताहि नगो ले सत ॥ २९ ॥ की वता समात पिता सु
न झरुधनं जन यहे प घते ज कवी विसैना ॥ जे एतो कष्ट मे
इ ए परे न कनिष्ट की कष्ट मे घष्टिरेना तात को नात डरे न
क सनु मे ॥ नात को तात मदेव डरेना काके की हो रुन ती जा
करे नही ॥ काको नती ज की हो ड करेना ॥ ३० ॥ किवता सुयोध
न को पकी ये सुन झ नंद ये चलो तां कूदे यि से ना पति जे न
अकु नायोहो वार वर रं में वर जो न माने सवा मेरी डडा
वा न घने का न मो न यायोहो अ

तेरी बाहनी को मारिके अवारजम नोक कुं पगयो है ॥ आस
वी को छु को ज्य असावधान जात किते ॥ आगे देयी महा बीरी
बासबी को जायो है ॥ २५ ॥ छुद दवावैत ॥ अर्जुन के पी छेड
रुदन के उमगायेते ॥ वेधन चक्र अह दिय मस्त के फुर
मायेते ॥ अनीमन के बीड़ाई न घोरै रथ लागत ही ॥ बगतर
तनधारत खसंघन के बागत ही ॥ रुक गोद सदि सहते वायू
दिन हयो सो न चक सो कालहि न पवुत्रन को नयो सो ॥
दिन मणि की रस्मी निरते जही दरसावै स ॥ कंपत न नर
र अहिको लहिक सकावै स ॥ कायर मुष सुकेतु ॥ तरनेत
न कंपत है ॥ सरन के जस की पर नोकहि की संपत है ॥ अहे
करि वेधन गो कंवर के ऊडन में ॥ छत्रन की छाया तकि मा
र सर मुडन में ॥ छई कय गई दल अर्जुन के छोने की ॥ नाघ
वता कर की कय गई मुष ॥ नाने की ॥ निरखे आचारि जछा
बिसुन झके नदन की ॥ कर की चल चालन गन सत्रुन नि
स्कंदन की पंचनेते बोले चप अहुत तापे ये ऊ ॥ ई अर्जुन ॥
ऐसी नई अष्टी रुंदे द ऊ ॥ राहे अरु बाये धनु मंडल सरसं
जुत है ॥ रस्मी जुत सरन परिबेध हि में रंजत है ॥ कालहि के वा
लहि सेवान नवर सावै जे सालन नट सालन दर सालहि द
सावै है ॥ अनीमन के सन मुष अज गयल जे अडते है ॥ जमपु

रके नगीन के उछाय लत डफ डते हैं। वीरन के जुयन वि
 लत तिहवें रुकी। संधे सुदवा लन के नालन सम से रूक
 नतन चिके नड जुटे रचि रचिके संधे। सच के लगि बाह
 य चिके धर लचिके संधे। गड गड ते सरन बड बड ते के उ
 त हो। निड ते के उ मंड ते के उ ऊड ते के उ पड ते है। कि ल
 ल मिलन कै दल वल के अगवारी पौ। चलन के छल वल
 न जल के इकतारी पौ। हो ले के उ डो ले के उ तो ले तरवा
 । हो ले नी सासन के जो ले अरि मारन कूं। न मे के उ ध मे

इन रयना ज्यो। फ मे के उ ड मे नड अछे दय आग
 जन है सचुन की सेना करि परती है। जोग निमिल नवः
 वन कूं नरती है। काका हसासन कूं मुछित करी डा सो
 सतन सुत्रन जुत लछ मन कूं मा सोही। नानु कता।

॥ नरीश्व बाधा आचारिजः सलि जुत मिल
 की नो जव मारन कज नो सिर संकर कौ पल रत
 को। पितु को जय म सुनय जय इय अपकारी व
 यन को दे कै विधवापन अरी प्यारी को उतर को दीना
 पुन निज नारी को। २५॥ डुहा॥ मा सो कंवर सभा सम
 यो सैन्य अवदारा। सो क सिंध विच धर्म कृतः करि करि
 पुकारा। २६॥ पत गांधार ज की तनया उछाह करे कुं

जतनयाके उछाहमियायैतै वासुदेव अर्जुन कूँवदनवता
उके सैयुयुत्सुकुं कितै सीय देहो विचलायैतै ॥ युधिष्ठिर क
हत मो कूँवन को मगन अयेय ॥ मन को मनोरथ सो मन मे वि
लायैतै ॥ नये मन नाये पाये गजपद अंधपूत ॥ सनशके जा
ये वीर स्वरग सिधायैतै ॥ २७ ॥ सदैव ॥ मधु नो जनमै मनि नख
न मे मइ से न न मे जरा पां नयीया ॥ सिव गो न न मे धेसु नो न न
मे यिरवार न ये सुत देख जिया ॥ करिये जिन को रन गहर अ
ग सो हाय अवे अकुलात दिया ॥ धिक मो धिक न त्रत्व कूँ
जुधवी च कहा करुवा न कूँ अय किया ॥ २८ ॥ इहा ॥ अर्जु
न देखे आंय के संधा सिव हरि संग ॥ नहि बादि व धदिपन ॥
हि नदी गगन दीरंग ॥ कविता ॥ आयो वीर संसप्तक गन को ॥
संधारि जव ॥ सने से सिवर देखे सो कबे सु मारे है ॥ सुछत दे
इस हृदसा चातन अमात्य न से ॥ के सव के संग मो किरीटी ॥
वेक गर है ॥ नर्तवंस न सन जो हसन इस हग न कुंतो को ल
डे तो ॥ मेरे पांन को आधार है ॥ बल नाग नेय कहां सनशके को
छावा कहां ॥ कहां पांडु नंदन अनिम सुकुमार है ॥ २९ ॥ ना
ना सर से न तेरी माता कुंती वीर सया ॥ पिता महसांत न सुपि
तान प पंडु है ॥ कीनो सुर लोक अने नीनो नर लोक जीत बा
सी नाग लोक रुके मानत बल बंड है ॥ के सव किरीटी जसंक

हैं अनिमन्त्रक हास जु जीती वे को तेरे विरद अयं डहै देखि
 धज दंड तनि मंड अरि मंड जात तेरे जु न दंड हू ते अ
 नय ब्रह्म डहै ॥ ३१ ॥ अर्जुन उवाच दोह को धारत हो सरल तु
 म ॥ महावीर चक्र जात तु मदि ग के से म सो ॥ या ते चित
 अकुलात ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कविता ॥ तेरे गये पीछे
 डो न चक्र अहर औला को ॥ वेध वे को की नो पन वे सो मे
 कुमार क ॥ विधि रू मे व्यहयी छे आय वे को संसय दौ ॥ आ
 रू जात तेरी पीठ रहे गे निकार क ॥ सिफर जवर के ड ना
 न आरू जीति रे के ॥ रुद्र के प्रताप में लख्यो न हो न हार क
 ॥ असे जी पि राय वे वे स जु कूं सि राय वे वे ॥ नां पं ते नि राय
 के म राय वे वे बार क ॥ ३२ ॥ सत्य छे दोस्त सत्य पुत्र ध
 नु डो नी अस्व नरी अबा जान डो न दाल करवाल हूं ॥ ड
 स्सासन पुत्र नये विरय गरा ते जु सो म छित न रे कूं दे
 विप्र हा सो विदाल कूं दंती के पछारि वीर मारि म सो ल
 धन कूं ॥ लछन कूं मार लं विडारि व्यह जान कूं म गे ल
 निवारी वे वे विषय विषारि वे वे य अ लोक धारि
 वे वे बाल कूं ॥ ३३ ॥ बार बार बारि ड ग धार व
 ॥ कहै पाय नाथ जसि रे नो बल ए वरे ॥ नीम आदी न प
 न कौ धारत सरल नट तिन कौ ॥ न घे रे रूप ॥ ३४ ॥

॥ कररी लोकं केहं केहं करे जे बीच देयो पारो पूत कहं
 अधको उता वरे दोतो सब छत्री मे रें जाने तो निहु त्री दल ॥
 जो न व्यूटारु न विदारु को दावरे ॥ ३४ ॥ प्रात न ये अग्रज
 तिहारो सो सवारि रय सारयी कौ सैन्य की बीच अनय विद
 रिहें कपिकी गरज दोस देव दत गा जीवकी : रिपु रिपु न
 रिन के गरब वद रिहें ॥ नां मां कित बांन मेरे पानी को संजो
 गपाय ॥ आछि रवीरन के बांन कं अहां रिहें ॥ जे से अबर दे
 न रे पुत्र की कलि न प्यारी : ते सैं पुन सत्रु की कलि न तं निहं
 रिहें ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ प्रात अस्त लो नार हो ॥ जय
 जय बामम जान ॥ हो उर दे तो हो उ नल : मो कूं नरक निहं न
 ॥ ३६ ॥ सरन युधिष्ठिर कृष्ण अथ वा न जिन दिन जाय तो ई
 डादि सहाय तो उ : पित न देह मिनाय ॥ ३७ ॥ सुनी पतज्ञा
 पार्थकी ॥ इत न ते ति दिवश ॥ जय जय नृप न गि जान कूं ॥ म
 ता कि यो ही य देय ॥ ३८ ॥ कहे सयोधन जो न तौ ॥ जय जय रा
 ऊ आ प ॥ प्रात अस्त मित ना बुजो ॥ मम जय तो र प्रताप ॥
 ३९ ॥ जो न कहें मगर जको ॥ करि अय एध अनीत ॥ जं बुक
 की मति स्पं क न य ह तो परम अनीत ॥ ४० ॥ विधा प्रातर वि
 रुच मं ॥ सक द प द्य अ वि व्यूह ॥ ता कं वेधन स मय न दि ॥
 सुर ई डादि स म ॥ ४१ ॥ एते ही ये न व सि व सि ॥ होय सिंधन

क

७

नासः अथ यस्तु वनं कौ जागि हैं॥ निधिके उस्वर्ग निवास॥ ४२॥
रमिस यनरचि पाय के॥ आपरुष्य ज जनायता हि सुवाय रु।
वन्नमौ॥ सिवपुर दरसाय साया॥ ४३॥ शिव हरि जाय रुपाय तहां
ऐकबांन अहिरूपः जय इय द्रव्य हित पासु पति॥ रजो अरज
अनं प॥ ४४॥ अरु शिषा यो स्वप्नमौ हरि निज डेर नि आय क
इत वामना अर्ध नि सा॥ हार कतें समजाय॥ ४५॥ कवित सुनो नि
नहार क जय इय के व चावे का जा॥ जो न से असाध प्रमिल व्यूह
की विचारी हो॥ घात न हि छो रूं ई इ आदिक सहाय जो पौ॥ अ
र्जुन को सजु सो हमारे सजु नारी दै॥ अर्जुन हे मेरो प्रांन मे लु
घान अर्जुन को अर्जुन की जीवन हमारी हो॥ अर्जुन विनांन
छिन देय सकुं विखरूं कुं॥ कहै गिरधारी में सदेव ऐसे भाति
हो॥ ४६॥ छटा॥ मम रय सजी नृत्त करि गय डमोर समीप॥
अर्जुन तेन मरै वडा मारि हो सिंध मही पा॥ ४७॥ एत प्रत सा
याद करिः चढो घात कुरुवीरा॥ मदि जय इय अकुलात होव
॥ धर धरा तत जिधीरा॥ ४८॥ कवित को पकी कटा सतें निहा
र तरिषु ओरः कांम कि कटा सवांमतिन की वितात हैं॥ सु
र्विगां जीवता कुं सपरस करत अरी नारिन के कजल को प
र समिटात है दसत है ओट आप पीर को सहत वी
ओटन की पीर सो विनात हो॥ बाहि न सकार

सचुनकी लीजिनकी चरिनको चरन दिखात है ॥ ४९ ॥ दो एव ॥
॥ रिन विन जीतै सचुको ॥ तं अर्जुन नहि जात ॥ जो मोहि जे
हे जीति अत्र ॥ तव यन सा चोतात ॥ ५० ॥ अर्जुन उवा ॥ तुम मेरे
नहि सचु हो ॥ आचार जहु जवंस ॥ जिन तै हारन जीत सम
॥ छवि न कहत प्रसंस ॥ ५१ ॥ दिगु रकु पर दछना ॥ आपसा
वन्दे पाश्या ॥ जय लछु न दे जो न कं ॥ चलो नाय के माथा ॥ ५२ ॥
राकविता ॥ कहते किरीटी जं सं करि है कल दकुर महास
रवीरन की मन मै मनीर ही ॥ वाहन के वेग वासुदेव प्रेरवते
बांजि वाहतो नई न चित चाहतो घनीर ही ॥ शैय को स आगे
सचु नास करे ॥ ऐसे वान ॥ शैय को सपी छे पर चक्र अनीर ही
पाये है न पति पति अछर चपति है पै पाय सख सपति तै वि
पति सिनीर ही ॥ ५३ ॥ आरचार को स विस्तार दिसा आरही मै
॥ कपि चिन्ह लिये व्योम मंडल तै जटिबो ॥ ऐसे ध्वज दंडर
धवे गहे अष्ट डते सो ॥ ज्वार वप्र चंद वस्त्राड की सी कटिबो
अर्जुन की सी घृता को को न पै वषां न वने ॥ एक साथ दूर पा
त सुनु आयु टुटिबो पांच सत वानन को छिन मै न जानो ॥
जाय ॥ तो न तै निका रिवो संधान अचि छुटिबो ॥ ५४ ॥ सूची ॥
ही सि ॥ २ ॥ करुणा ॥ ३ ॥ ओरेंद्र ॥ ४ ॥ वीर ॥ ५ ॥ हे विनछ ॥ ६ ॥ नया
नका ॥ ७ ॥ अद्भुता ॥ ८ ॥ ओमंता ॥ ९ ॥ लो विष्णो त है रती ॥ १० ॥ हा

सी। १५। सोका। ३। की। ५। ॥ उत्सवा। ५। गिताना। ६। नीती। ७। विस्मे
 निर्वेहा। १५। याईकारनकहातहैं। सुरी। १५। रिधी। २। सच्च
 त्रीमौ। ३। राजा। ४। सरो। ५। सकुनी। ६। मेकायन। ७। दिव्येयो। ८।
 धिष्टि। १५। मेसुहातहैं। सेन। २५। शेनातनतैं। अर्जुनकेहा
 नतो। कटे। ३। यीनायनतैं। नोरसदियातहैं। ५। ५। ॥ उतैंवेनिक
 वनमालपुष्पसंघटतौ। इतैं। २५। येतनतैं। निकारतहीवांन
 ॥ उतैंदेववध। मालगंधिकोसंधानकरैं। गाजीवकीसु
 वीयेंहोतहीसंधानकेइतैं। जायेंकोपकीकटाहचरैनेन
 परैउतेनरेकांसकीकटाहवेमपांनकेमारिवेकोहो।
 एकसायचलेइतैं। पायहायउतैंहायअछरानको। ५।
 जाईसैपैसंधानवांनगाजिवतैं। अर्जुनकोताहीपैंअछ
 रचषचंचरचलातहैं। रूपरंगनघनजेवसननिहारत।
 हीछिनहीमैं। औरहीकैं। औरसेरियातहैं। मेरेहीवसोहैं।
 औरकोवसोहैं। अिसोअस्त्रविनसस्त्रहीमैंविस्मेति
 पातहैं। याहीव्यालवीचहैं। विहालसुखालडासैं। स्वेतफू
 लमाललालनलाननईजातहैं। ५। गंगगतिगंनिवनि।
 रजितसहितधोसः रवितनयाकेरूपईधरपैनीदे॥
 सरस्वतीरूपजाकीपनचउदारसोहैं। लोकलोकवीच
 दनतजसलैनीहैं। नारायनगितैंचनीदैंकृष्णनई॥

० महासुरवीरनको जोतमें मिलेनीहै॥ हितोगति उर्ध्वदत्तव
र्गश्री नीपर दोयनचबेनी सुरलोककिनिसेनीहै॥ ५५
कोनसमेतोनतेनिका जोनसेभकहै॥ करतसंधानछोरि
आनकंगहतहै॥ दोयदोयकोसआगेपीछेबायेदसुदिमा
दसदसकुंजरकेपिजरदहतहै॥ जाकेताकैजत्रतत्रजहां
तहांजबेतवैअेकआनलगैकेरग्याननरहतहै॥ अर्जु
नकेबानकोधमांनदेससबुनकेप्रांनकोपयाननिजपा
ननचहतहै॥ ५६॥ छंदपधरी॥ करिप्रथमजोनतेजुहुवीर
जयललननंदैपुनिचलोधीरः दंतिनिकीसेनासबबिरा
रिजवनाधिपतीअवधमारि॥ अवंतीपतिअंदानुअंद
किनेदोउपुवनजुतनिकंदनंदीनपदरीकीयोधंद॥ नि
जअस्त्रहीतेपायोसुंदरः मुर्छाहरिअर्जुनकिमिशाय
हतिसबुसैन्यपरवेसपायः केउरथीऔरहयगजाये
दः कीनेबिनासअर्जुनसकोहवहसमयकसुनरतेउ
चारि॥ वरुअमितवधातुरहयविचारिततकालअस्त्र
तेरचक्रतानः सकुंडईकुमईपुनिअस्वसालः निरस
सकसुअस्वनपिवायः करिअनयजुधतंसधिरका
यः अंकदोहसहस्रकियोपायः सरवरहयसालाएकसा
यहयपायकियोहरियहप्रवेससोरहोपयाहोविजय

मेसा ॥ ६॥ ॥ हहा ॥ विधरय हरि सारयि विगर ॥ पाय न्मि
पेयि ॥ उमगे अरिफा नुसविनु ॥ रीप सल नग नदेयि ॥ १९
वित सुयर के बे न मे न कुल टा के न मे न मी न ग तिले न
न च प ला र ॥ ऐसी दो ॥ तार ष के गो न मे न ॥ तं ह्दी ॥ पुं ज पो न
न ॥ वि फ त के रो न मे न को न जाने कै सी है ॥ स व्य अ प
व्य क की कुर नि न जानी जाय ॥ किरी टी के हा य न मे न जै
रो म ते सी दो ॥ जितै तितै जै ती ते ती स बु से न जुरे ज बे
ते तितै ते ती ते ती सि ध ता अ ने सी दो ॥ ६ ॥ ॥ हहा ॥ ॥ अ
ग दे को अ ती य ज्य ॥ क व रु न वे मु य जाय ॥ सो अ र्जु
निर स मर ॥ वि न छि त को उ न ल षा या ॥ ३ ॥ क वित के
व तिक न जानेर र वां डु व न जा र दी नो ॥ सा त रू ल के
स बु र्द के किये नि पात ॥ नो ज न की बे र ॥ ओ र पु न र
स र स कू स कू स ब ही को द त न कर व ट त ल षा वै ता
अ र व मे अ र्जु न के उ ने बा ऊ अ के से दो ॥ न ये ता कं
जि व अ ला त च क सो ल षा ता ॥ वां म अ ग द ल न सो द
के अ गं बा म ॥ बां म न न्मां प बे के पै डं से व ट त जा त
॥ पा य के ष हार पर लो क प्र यी ना य न के ॥ पे यि ड यो
प छि ता त पी न पी सै सो डु स ड र य दि र्घ क पी ध्व ज दं डं

ॐ
दत्तसरस्वतीरः वादतकीरीटीवांनदसहृदिमीयैसो
वरकेवरीसैरूपसरससयीसैईतेकोदंडकसीसित्तौ॥अ
छरअसीसैसो॥६५॥सवैया॥सिधनरेसकेमारवैकाजलये
पनवासवीसद्यगयोचलः जाकेप्रवेसकेपीछेछिजेसने
मारविहारकुटारिदियेरवलः चछदेउमरसुडपगकम
ताहिकेकोषमहृङ्गीतेहोतगजंदस्युपांनजीनुपोनतेपा
रुवकोदन जुघमेनाहीकछुछल॥६६॥इतिश्रीपांडव
यसेडुचंद्रिकाएकादसममयरा॥११॥युधिष्ठिरउवाच
॥कविततेरेकाजवनहीमैंकहतोरीकैटीमोसुंः सातकी
जारहीतैसचुनकौमारिहौ॥रुसवलदेवजोयैहोयनसा
हायतोह॥अकसेअनेयहतेसवैकाजमारिह॥मोही
काजआजकोसहादसलौज्ञोनबूहतोविनतेरेयाकीदे
ताहितैडुकारिहौ॥दिवदतगजीवकीघोसनसुनुहतेय
रुविनपथाकुमैंकासुषदिपारिह॥१॥आसकी॥॥हहा॥
जवनसैन्यदसहसगजअर्जुनलायोजीत॥तेउजधक
सनसुषपरे॥नषडुकालविपरीत॥रुनहीज्ञोनजुतलो
पिके॥कनसैन्यकुंघाय॥इसासनजलसंधनि॥मिलनड
विजयतैजाया॥॥कविता॥अहकेउलंघिवेकोसोचमोहूँ रु
नेकनाशि॥आपकीहैसोचमैंनगसेछोरुकीनकौ॥इमेया ७

हीकाजहोउरुसयहोरथिगये॥जीवतग्रहनतेरेसुनो
नेमज्ञोनको॥जुधिष्टिरकहेमेकाक्षत्रीनाऊनीमादिकमेरेवै
सहाय॥कोनजाऊउतगोनको॥एतिसुनिमोनकेदिवाय
होनविघ्ननका॥अहज्ञोनकोभैचलोर्थीवेगपोनको॥४॥इ
॥सकटव्यहकरज्ञोनतेप्रथमहि नयोमिलनायः ज्ञोनकर
तउस्थयसो॥अधिसैन्यप्रताप॥५॥जामगकेतप्रगुरुक
द्योरेसात्वतमदअंधः सौअपसव्य केनिकरितुंकेतुहित
टहिकंध॥कविता॥जामगआचारजकटेकटतनसिषकुं
लोचः तिनकूजोहसितकेहेतिनवेरछिजज्ञोनः तिनसात्वत
जुधकुसलते॥कहिजयपावैकोन॥॥मारिसारथिज्ञोनको
कतवरमाकोजीता॥समजाइइसासनहि॥कपटव्युत्किरी
त॥६॥सांतकिबाननतेविकरना॥रनसागो जुवरजः डसास
नचितचकितसोगयोज्ञोनपैनाज॥१०॥सवैया सीसकेन
वनभूमिपरेकटिसातकीवीरकेवानकेभारेज्ञोनकरहे
सिकेकुरुजजुआयेनले॥करिसुंडउधारेः बीजकोवे
वतइतइसासनजान्योनरिफलजागिदेधारे॥जोधियह
यसोजाहरकीजीयेपाघमगावोकेचनरीप्यारे॥१॥जि
नकहोचकुटीकरबंकनयेमुतकायर्मंगजावैः ॥
सनाविचनाहररूपरूकांमपरिपरमानकरावैः ॥

सेनपपुतडसासनः गालवजायकेवीरतापावैः सासकीते
 वचो जन्मनयो नयोः सपवजावै किथालवजावै॥ धन
 रीहृदकरेनां संधानसरकोपुतवानीडजः कहतडसा
 सनते नापोलघिवारवार॥ सातकी कवांननते त्रासत
 होमेरेपुत्र॥ किरीटी केवांनन सहोगै के सैपलेकारः वर
 जतरओद्यतकांनन पिताकी कीन्दीः दोपहीको ओओ
 चीरसंधी कोनली नीधारः जानन करयेले देओ जाननले
 पासनके॥ वांननके जयके दे॥ प्रांननके लेनहार॥ १३॥ टे
 दिन्नगुटि जोनडसासनाननिकटदेधि बोलेपगटवाक्यकु
 सलजुतआयेधायः पातरसुयोधनकं सातकी कुंदीनीज
 ॥ पूर्वतजिगजसाजवनकेनकीनेजाय॥ कुरुदलविचरन
 रसिंघआपविरव जोधिकदेहजारजाको अरितैविमुयका
 य॥ बायबीजरायनसुं पायजुवरजपदः पायघायपीटरी
 टलाजरूनआईहाय॥ १४॥ कलार्जुनउ नयोक्ता॥ कवित
 जोनदलफारिकै विदारव्यूरदंतीनकीः मासो सुदर्शनज
 लसंधरुं कोगिलगी जवनपछारिपुनिजेन सारथी प्रहारि
 जादवउदारफेरहसासनैदलिंगो॥ विक्रमवधाने सबैवीर
 नतवंसिनके कुरुसे नसिंधनरदेषतं विचलिगोः सातकी
 महेनमतकुंजरकरलकृष्ण॥ बालिकनृपालयोत्रकी

चवीचकलिगो॥१५॥डुहा॥युयुधानन्तरीश्रवाः यङ्गुं
 गवकुरुवीरा॥जुदेविरथविनकवच नयो॥तोउनतजीन
 धीर॥१६॥धृष्टकेतुधकरिपटकिङ्कुरुः सातकिकोतहंसी॥
 सः छतीयाचदीकावनलगोः यादवनयोश्चनीस॥१७॥
 धृतराधाकवित॥१८॥कृष्णजेसोसारथी अनांसरथसंह्री
 अस्वः अयैनातांगजिवकी युनहकटेनहीः किरिटीसी
 रथीतासीसमताकरैयावीरः दोनरओमरुतावे अके
 लोनटेनहीः संकटकेविचपदमरवीचसचीओहः दो
 यदसकोसतादिदेवरुदटेनहीः अटनकियोहैताकं
 अस्मैसंति कीकोसीसल्लातिचटि नरिश्रवाकाटेयेकटे
 नही॥१९॥डुहा॥सुधामनु उतमोजके॥डुदपुवनयजे
 नः नररथांगरत्नकतोउ॥मरुवाह्यकियगोन॥२०॥मज
 णसोमदत्तताकोसनीकाटनलागोसीसकरीदयाजीव
 ततज्यो॥उननजिजाओईस॥२१॥याकेसुतकोमोरसुत
 मृतकषयोधमादिः करेविनयकनिकरजटीः तथा-
 स्तुकदितदि॥२२॥बमोजोगतातेईहै॥कृष्णकस्यौ
 दिधिः आयोकुरुदत्तसिंघतरि॥गोपदड्वनलेपि॥
 अर्जुनबपाविसोममदितसातकी॥कीनोनपतअ
 ॥स्तयाकीरसाउचितः इतजयद्रथवधआजः॥२३॥

हिवामहिपांनते॥ अष्टअष्टदिवानमो व्यो नुज नरीश
वा॥ यद्गुक्तकियदंन॥ २३॥ सागिसहसंमासनेकही
किरीटीदेविः ताकोअसीउचितकं॥ पुनिसंगतफन
देवि॥ २३॥ नरतआनतेवमतमे॥ ममउजछेघोसोय
रुसमित्रविनसवते॥ यहअधर्मनहिहोया॥ २४॥ अर्जु
नउरजपुत्रनिजसेनकु॥ एषिनेतनयवीर॥ बनीनरि
छाअंगकी॥ रुसहिनिदतफेर॥ २४॥ ममहितआयोसा
तिलीः तजिआसानिजपानः ताकोमनुसंकष्टमे॥ कून
होउतनत्रांसन॥ २५॥ इतनैसातकीनमितेसोदष्टउ
गायः रुसादिकवरजतरहै॥ इरकियेसिरकाय॥ २६॥
रुसः दारुकसातिकिकंकरहं॥ ममरथपरआरूढः
जोलेोगाजिववानते॥ मेरैसिधनयमूढ॥ २७॥ युधिष्ठिर
पांचजन्यकीघोसकनि॥ कह्योनीमकुंदोरादेवदतसं॥
धनिविनसने॥ मनअकुलावतगौर॥ २८॥ नहीकपीध्वज
कीकुसलः रुसलरतममकाज॥ दोनअहविचगोन
को॥ ओरकोनतआज॥ २९॥ कहिहैसबहितअनुजके
तजोसातकीदूरः करऊधनजयतेअधिक जाकोज
तनजरू॥ ३०॥ कवित॥ सातिकीमूनीमहकोपगयो
किरिटीकाज॥ दोनतेसुनायकदुबादवीररसमे॥ मेना

किरीटी सिध्या सात की धमि स्या नां हिं। हरिक लो कै सैं जू
 दे ने रेव स मे रे रे डि ज नी च अच मान ऊ स च तो कां जी
 वि न वै सैं कै सैं न सि न सि मे। धनु मुरवी के रथ ने मि उरव
 के घो म ग दा गुरवी के। स्तं क ना मे द स दि स मे। ३३ ॥ ३३ ॥
 क ग दा द त कर दी यो। अस्व सहित रथ चर। उतर ज म धु
 र ने त ते। शे न कू रि ग ये हर। ३४ ॥ एक ती स य क दि व स मे
 च र दानि स वि च धृत। ते रे ज म धु र कं ग यो। द ते नी म
 धू त्मा। ३५ ॥ क वित पां च वै र नी म तै नो प रा जै द ने स धु व
 क वै र सो इ जी सो नी म कं च कारि कौ। जे सो म रा नी
 सो का द कै डि धा सो की नो म सु ग ज चां ए सो दी छे
 मारि कौ। धनु की अली तै गो दा दे के क ह वा द क हैया
 शे वो दो त उ ग यो क रे हरि कै। आ ज पी छे
 कै प धा सो क रे। तु ल्य स धु धारि कै मै क ह त ऊ धु
 ३६ ॥ ३६ ॥ म र न प्रा य करि नी म को ना मा सो य द
 त कू ता कु च रु धु व को। दियो व च न करि चेत। ३७
 न उ। कर न पां च धा नी म तै। को न प रा कै ज म वा द। ऐ
 वि र तं करि वि र थ। वो ल त हें ड र वा द। ३८ ॥ क
 यो वां न की। इ ए बु धि र क ना य। त म धु र ओ गु न मे क रे।
 दि न प र गु न न ल या य। ३९ ॥ नि ज कु च त्रि य नि ज

मर्दतडुकअहलाहः होयतहोयसमुषहितौ॥ जसकतको
वाट॥ ४५॥ छंदपधरी॥ रुईसेमवाद्यामिलिहुपदपु
नः अरुमिलेसातिकी नीमअनः ईनबिनदिअकअर्जु
नउदारः कियसचुविकलकरअनयकारः मछितकि
यकपकूरकबांन॥ कृतज्ञोननाग्योलेमृतकजांनि॥ मइ
ससल्लकियषंडषंडः पुनिदतेडसासनयहप्रचंड॥ रथन
गेअस्वलेमरेस्त॥ ब्रह्मसेनकरनरोउपिताइतः नरी
अवासातिकिकियोनास॥ डरजोधननजिगोडोनपासउ
तदेयतरिनअरिसिरउगायः चितकृतितविजयहरस
रचलाय॥ ४६॥ डहा॥ वरुतनमिलिकीनोविकलः अ
निमनदलबिनअका॥ धमरेकगांजीवधरः कीनेविक
लअनेका॥ ४७॥ कवितअरुहीतेकीनोदेसरेवरअन्य
रूपः कीनेनिरसलअस्वनीरूपिबायोदे॥ नरीअवा
नुजाछेदिमासकीबचायलयो॥ तासोपुनिनासननोस
वकोंसुहायोदे॥ सिंधनपरसाकाजअष्टधनुधारिगढे
तिनकोदवायकियोआपमननायोदे॥ सीमछेदिताकोद
मजोजनउदायताकेपितागोदहारिसिरतादिकीगिरा
योदे॥ ४८॥ छंदपधरी॥ जयइयदिमारिपुनिफिरेजोधः क
रिनकवनतिनदिकरिसकोरेध॥ श्रीकृष्णकइतरिननू ८

नावः नार्थलघिहेगा जीवधनाव ॥ केउयरेवी स
 लेकेसबोलेदिनफाटेचवविसेसः गजरैइतैरथपय
 रुऊ जाजुलं कियोयदा जवनजुधः केउयरेधनुयस
 कीनिधंगः कऊअधो नाग कऊअधश्चिंगा ॥ क
 वर्मनियन कितेका ॥ कऊअस्वरथन केअंगकेका ॥
 तेअस्मजोधीअपारा ॥ सातिकी कियोअरिहलसंहार
 ॥ एकहतयधिष्टिरनिकटआया ॥ तपिविजयविजय
 जुतकठनाया ॥ वटहुतेमी ॥ गौकरिहुदयलीनः नृपमा
 निजन्मजिनकीनवीनः नगनिघतिमासो सुमो नृप ॥
 तवपुत्रपसो डधदियकपः वहसमयगमो छिजज्ञेन
 पासा ॥ नदिसधिरस्वासडारतनिसासा ॥ वहअमितवह
 छिजअधमादः बोलोफिरतिनते कहुकवाह ॥ तुमा
 विजयविजयकी चहीतना ॥ अजयममचहतगमपर
 अत्रः जानिकरिपार्थतुमदियो जानः सातिकीब्रको
 दररथसमानः जयइयहिजियतरविअस्तजोता ॥ तो
 जरतपार्थममविजयहोता ॥ मैआपनरोसेकसो जुध
 करतममसेन्यअरिनासकूध ॥ यहकनतकसो छिज
 ज्ञेनआया ॥ निसरचहुं जुधममनपिप्रताया ॥ ममहुद
 हिकवचकैमंतककाया ॥ अथवाकियुल

गंड १
१
माया धधा कविता ॥ जो न दगाइ सद दिवाय के के यो धन के
कहे राधे बेन त बे सर ता किते गरी ॥ अष्ट धनु धारी वीच
जय इय व जो न राय जिय की ॥ अरु जय की उर आस तो
रिते गरी ॥ पद लेरु जत न क सो न प्रां न राव वे को अव तो
सव से न्य क की आसु स श्ते गरी ॥ आदि न ते नी स म सर से
ज पोटे तादि न ते बडे बडे वीर न की वीर ता वि ते गरी ॥ ४५ ॥
सुने ते कहु क वा द न प त क यो धन को ॥ जो न कहे का हे न्य
उहु व करे न ही ॥ अष्ट म दार थी तु म र स क नि र य न ये द
सो सिं ध रा ज ता ते न व स ट रे न ही ॥ इ द स ही को स परि य
त मे गेर ओ अ द ॥ ता मे र क म दार थी सा त की ड रे न ही ॥ ज
व ते न इ ष्ट परे ध्व जा द ड नी स म को ॥ त व ही ते वि जे ते रो ड
इ ही प रे न ही ॥ ४६ ॥ ध धा ध त रा ॥ ६ ॥ सं ज य म म जा मा तु
को ॥ व ड न यो क नि कां न ॥ आ चारि ज का कर तु को ॥ व ड न
यो क नि कां न ॥ आ चारि ज का कर तु को ॥ क द ड व वा नि
क जा न ॥ ४७ ॥ सं ज य ड प व य द न क त ध र्म ये के हे नि सि
जु ध घो रा हे ऊ य ही से न्य के ॥ रा य ही प द ड ओ रा ॥ ४८ ॥ र
य डि ग णो च रु डि र द डि ग ॥ आ र ती न य द पा स ॥ य द अ उ
क म हो उ से न्य वि चा ॥ न ई सु सा त व का स ॥ ४९ ॥ सु गं ध ते न्य
वर त न म य ॥ न ये ओ म सु र दी य ॥ दे व न ध जे को ति क मि

लो॥ प्रछरवरन अवननीपा॥ पु॥ सवैया॥ जव
 सोतिहि सो न तेवु चयिता अति छुधरसे नपत
 वीचदिया पेशे॥ नास विगट के कै दरसे मनुहा
 रनको विवधे न के जा दर ना दरसे॥ छिज जो न
 त्रिन मेरो उरोय न गत्यति से दरसे॥ ५॥ हन
 हार करे छ ज जा को निरोध की को न करत थः
 कटेरन की डत॥ जो नय सो कै कटोर महा पय
 ते मी लाय दिये के उ और व चेति न की सुनिये
 तुरंग है सारथी ओ न ही ओ न ध्वजा अति
 था॥ ५॥ कविता प्रलेख की अंच के समान व
 ता पे अत रूप धे न पत सु ना वै है मरि बो दि
 रि बो विचारी सनु वीरता अपार तन नान में न
 नित है के स कर न नित चला की चित्र किरी
 ह उ प मान पावे है जा ही ओर न में ता की अ
 हरी तीन पंच दी सा मंच या नी दर सा वे है ॥ ५॥
 पी के उ सारथी वी ना देर थ मावत वि ना ही ग
 सा न्व मायः घोर विन जो रे के उ जो रे विन धो
 रे न से कटे क हो वि नु नाय दायः तन विन च
 न विन के ते तन म्मान विन

जत्र जत्र गोन होत दोन को सुत तत्र तत्र सत्रु से म्या छिन मे
विचित्र चित्र जानी जायः डो न त दुद मि द सो दि स रु के दि
गा ज ते ध ज त व र त पा व धी र ज ध र न ही ॥ जोग निकै ज स
चित च क त च हो धा चितै किर त अ न त त्र प त्र तौ न रै न
ही ॥ वीर न इ आदि न को सु ड मा न की विका जः वि य कि वि
जो के वि दी सं कर करै न ही ॥ श्रोन के पि वे या डोन वान न के
त्रा स मां नि पां ड द न यो धन को अ छुर व रै न ही ॥ ५५ ॥ मे रे
जो नै जा म द मि करी ही नि छु त्री न मि एक वि स वार को प
तो ऊ न सि ग यो हो ॥ पि ता के नि वारि वे ले सां त व त नी नो हो
यो ॥ दो न म्या ज ही तै ते ज व तै द र सा यो हो ॥ एक नि सार्थे सि
वी च सो ह नी व पा र सा तः ता की वि द्या धी र ही तै हो न द ल
या यो हो ॥ पि ता क हे ध म पु त क हे ध म पि ता पी ता पृ त हो न
रूप प्र ले को दि वा यो हो ॥ ५६ ॥ स र्वे यो न प रै ड ग गो च र आ न
क छु ग मि कै स व की ज नु बु धी ग री अ रु अ स्वर यी ग ज सा
र यी ते उ ध जा ये ध्व ज द ड न आ द ल र र न यो म य ता ल
दि सा वि रि सा रु म नो व ध स धा छि न रूप न री ॥ जि न ही जि
त पां ड व से म्य ति ते स व ही द ल के र हो दो न म री ॥ ५७ ॥ कर
न क सो म न प दो न को ॥ गि न ऊ न क छु अ प रा धः बु ध अ
मि त अ रु ब्र ध व यः न क र व च न तै वा धा ॥ ५८ ॥ दि य ऊ मे रे

धञ्चवकरिहंसचुनिकंदः देहंतोकं विजयजसः ८
 पांडवनंदा ॥ ५॥ छंदपधरी ॥ सजिचलो करन जहां महासरः
 किय नास पांडवी सैन कंरा निज सैन्य कंकु सनिक पिकेतु
 हरितै किय वीनती जल देतु ॥ अवघेर हूम मरथ कर
 रा करिर ह्यो सैन को कदन घोरै ॥ मारि कुंता हिति पुत्र मारि
 चको सो कलै दे विचारि ॥ यह समय रुद्र कदिर ह्य
 यः कर्नतै निर्न नही सुर समयै ॥ हरी क ह्यो हिडं वा सुत हक
 रि ॥ नि स जुध तो हि नाय क न दारि ॥ ६॥ घटोत्कचा ॥ एक सी
 हो हलि सैन्य और ॥ मम हती डोण सुत अवहि घोर ॥ तो उ
 करिहं माया सहित जुझा ॥ करन कंरा किरा यिहंस कुथा
 कदिरुघ मन कीनो अकास ॥ परवत न करी विरथा ॥ ७॥
 निज सैन्य सुयोधन होत नासा ॥ अधिक ह्यो करन प्रतिजुत
 नि सास ॥ मम सैन्य घनय सब होत आज ॥ फिर सक्ति वास
 वी कवन काज ॥ मोघी सुकरन यद सन तवैना ॥ ईक
 घातनी राक्षि अैन ॥ घटोत्कचा मारि ग ईडुधाम ॥ सुनिहर
 य की यो टिग विजय स्पाम ॥ अर्जुन उवाच किय हरय सो क
 रा कवन काज ॥ श्री कृष्ण ॥ यह मरत व मोह पाय आज ॥ ८॥
 धतराष्ट्र ॥ दोहा ॥ १॥ संजय स्वान वराद की स्वय च करावत
 रि ॥ मरे हो न विचार क को ॥ वाको हित दि विचारि ॥ २॥

प्राङ्ग
२३

हिक्रमकेकरनवा मेरेनीमस्तवीत। नरकोवचिवो
को। नारदरनयेउरीत॥२॥ कटतयेनयेउसरवरीत
नामगईवीति। दटननकोउपरसपरः सकतनकोउज
हि॥ इंदपधगी॥ पहरनिसरही फिरकहोपायः सयनच
करकुकुउचयसाय॥ पहरनतसवनरीनीचसीस
जयतवहोऊनरवीसवावीसः सवहयगजरयपरसय
निजागतकीनीमिलतनेनः पुनिवजेवीरविदित्रघात
नरतेचरुसरतेनपनयात॥ प्रथमदिनपांचपाचातउ
जमपुरहिपनायेजेनजच सोरलोचलियेनपजिससे
जेनतैनिहोउयसुदुदयदेनः दुपदकैजेनकैलगैवां
परवसदिवियातुरनयेपानः जिदिसमयजसोठिजको
आलः कियरुद्रूपमनुषलयकातः दुपदकोकादिसि
नमिडारिः वैराटपतिपुनिनियोमारिः वहसमयधस
कमस्तअनीतः येसवहजाररथजुतवतीत। वदलोपि
लेवेकाजवीर। आयोकनिसोठिजतैअधीराजदेसेउसे
नायतीउरुः कियसजुनासठिनसहितकुथ॥ इतिमेनर
यीयेसवहजार॥ वचायोसजुकारनविचारि॥ करिविरय
आपकहतकजलिः मोयोसुधएकमहिदिछांनि॥ २५॥
॥ ३॥ अष्टकेतुशिरयालपुत॥ मगधपतीसहदेवः निर

ररिनभूमिमें मारे दोन अजेवा ॥५॥ तवै पारिन के निम
 अक जुरी नदि जो न की संधि उपासन अं मुनिका वरु वीर
 न पांडु न के वर वे उतरी के उ अरु अवनिका ॥ वरमान
 कारन देर तही किर ते पो पायन मे फलिका ॥ मुरग ज
 बांगरु नंद मे क हा पु स ज दान मि ले कलिका ॥६॥ सो म
 करु जय नाग धि जे पर वा स य गे ड सी मान त ता की ॥ पां ध त
 र त सं जु व दार त ॥ बी न्द य रे न दी स ग न च ना की ॥ चार क
 स नि सार के मे वि र ले न दा वी र व चे फि र ता की ॥ सा त अ
 लो र नी पां ड व से न यि जा य द गि जो न यु ग की ॥६॥ गा न ॥
 जे ड य की र ता ज ना दो न यो ज व दी ते ॥ ए ते वी र मा र गि ने
 पा वै क वि पा र को ॥ अ द स प द र वी च न र यि ट पं आ तां मं ॥
 ना दि व मो क र्म क लु डि ज के दि चारि को ॥ के ते रे व न र्प नं द
 के ते पि त र्प न मे अ प ने किये ज्म म वु क रि दे उ दा र को
 ती न क अ लो र नी सं गार किये का र मि ठा र मां म पा र
 ना जो पे स व द जार को ॥ अ नं द क र न ना न म ना न ने ड
 न के वा न ॥ अ या न ते नो न न नो न पं रे ॥ कि न ने अ य ना न प
 मां न कि ले क ॥ व पा न न पा न न पा व द रे ॥ क दि आ न कि न प
 र य न च ने मु वि न न वे वि के वा ट ड रे ॥ वि न ना र प दान ने
 अ र मां मां क ने ॥ ए त व ना न न क दि मु र ॥ ६॥ दे दा रि य

० नकस्योमिलिदोनतैकरऊसखअवसागः यदअपनो
नहिधर्महैः करिहरितैअनुरग॥०१॥ कस्योहसुतधर्म
तौताहीसमयसिषायः दसोअस्वयामाइति॥ दोनदिकद
हुसुनाया॥०२॥ दरदोनतैकोईसैका॥ नरतहुतोनिजपू
त॥ प्रेसोनपहुतिरिसमय॥ जयकारनदरिधत॥०३॥
धिष्टिरउवाचा॥ बोल्कोऊदनआजन्सदजहिमेजइए
जः केसैबोल्कुड्महिजा॥ दोनबहुकेकाज॥०४॥ श्रीह
लउवाचा॥ छंदपधरी॥ छलवनतैकीजेसनुनासः य
दकइतरजनितदिधकासः निजसेन्यठिरदअसया
मनामः अकोदरदसोसुनिकलकामः सबदिनमिलि
प्रेसोधर्मराजः वदकस्योवचनठिजतैअकाज॥ वधपु
त्रअधियअतिसुनेबोल्न॥ तजिसखनमिआसनअ
डोलः करिदियोस्वामन्नकुटीचढाय॥ बहसमयहुप
दकतनिकटआय॥ छेचोसुषङ्गः लेदोनसीसः दोउसे
नकदैधिकधिकअनीस॥०५॥ उहा॥ कपटवादसुत
धर्मकेः सुनिकरिवाणायामः धष्टुन्तकेनिमनदेग
योवीरकरधाम॥०६॥ सहसरजसुतगजअयुत॥ ती
नसहसरथबंदः नयेपयादेदोनकर॥ चबदात्तावनि
कंद॥०७॥ कवैतदोनकोपतनदेषिसेमडरयोधनकी॥

अष्टविधसात्विककोसेवनकरतहैं॥पायनपयादेनगेवा
हनविकलदेशिकेतेस्त्रधारनकेआसुधगिरतहैं॥कोउ
मरेकुंजरकेपुंजरप्रवेसकरै॥तेउपलचारिनकेमुषतेंम
तहैं॥अपजसअजैसोकनयकेनयंकरसेइस्तरसमु
॥उमरतोवरसपचासी

जोलोअनयसंग्रामविषौ॥सत्रुनकीबटैन॥
जाकेसस्त्रहटैनदी॥मारेजोनकहाजोन॥इदैंजोनदतो
सैहीवकतरोगमानसीकटैनदी॥आधिसतेंऊ
कतेंपांडुसैनवीरनको॥जोनतोमिटोपेचिजोनको
टैनदी॥१०॥धगटपिताकोपरलोकपेधियाननमेंपै
नपकरिपीनाकिसोत्तवापरो॥नाशयएनअरुनि
कीनोसत्रुनासा॥अर्जुनतेंआदिनाहि॥औरते
पायनपयादेपुंजसस्त्रकेधरेपरोसपारथ
नोपांडुसैनपोरथमयापरो॥दीदजटजोनीदलदोव
नकेवीचपुत्र॥जोनतोपरोपेदमजोनसोदिवापरो॥१०॥
॥कसकह्योयदअरुको॥औरनसांतिउपायात
जिवादनसबसस्त्रतजियरियैनैमेक्रमपाया॥१०॥मवेय
जोनकेपुत्रकेअरुकेतेजतेंसगिमरे

०३० रत जै अहिसर उदे नही मात प्रयापय पां न लजे नीमय
०५ थार लंपाव अचार को लत्र त्वसी मकू नीमत जे ॥ ०५ ॥ दु
॥ नयो सख मय अग्नि मयः नम सेन परम ह ॥ कस्त वि
जय सब सखति ह ॥ छिन मे मिद्यो सम ह ॥ ०५ ॥ ब्रथा नयो
सुत जे न को चर नाग यन अरु ॥ विकल न रति वसे मन
पः गदे पांडवन सख ॥ ०५ ॥ कविता मे कंक दो ताहि स मे सकु
नी डसा सन ते मां नीनां बसा दीत वे क हा दिय स नो हो ॥ पां
च दो सनि सा अक स बुके मिटाय मिद्यो ॥ सो तो इ जग जदे
यो सब ही ते ज नो हो ता ही विन कुरु से स त्या सत अरु तो
अबः मामा भाग नेय बी जावे न दार ह नो हो ॥ गां निव की
भार की च को न अंग न नो हो ज डोन बोय रने जे स को
न बोय र नो हो ॥ ०३ ॥ त राष्ट्र ० सवे दान नीम मदा बु ज ही प
का स मे मो सुत स दय तंग ज रा सत ॥ बाढ बुको पये लाल
ची वे स ज ॥ नाव प्रवे सत नै क न वा सत ॥ नीम बु जान के बी
च सदा ज मरा ज कोरा ज समा ज प्रका सत ॥ संजय मो सुत
कंज को क्यार ॥ वयार तु यर ज नीम विना सत ॥ ०४ ॥ विच
ही प क जो त प तंग गिरे ॥ को उ ना स के को उ डि जा वत है ॥
ज मरा ज के लोक गये क जिये ॥ तिन की जग बात क ना वत
है ॥ वडवान ल बी च परे क स चै कर ते त सु कंद विषा वत

हैं सुनि संजय मो कृत काल गसे निर नीम ते को उन आवत
हैं ॥ ५ ॥ कवित जल रुते आग वट वा गरु ते जै सै जल के सा
री ते जै सी विध रुं जर निबल न हों ॥ वा ज ते कपोत जै सै तार
य ते उर्ग ते सै पो न के घ चंड गो न अ न्न जूं विचल न हें ॥ ६ ॥
ते इंदी वर रुइ ते विधुर सइ जा विधि विकल न हें ॥ पाछ ले स
बु जै सै संजय सव मेरे प्रतः ॥ अयम के स बु जै सै मारु ति
भव न हें ॥ ७ ॥ सवैया को प छिपी वडवानल आदि ॥ ति मंग
ल गार ग राध नु धारी वां न म हा उर गारि क दैं उर मी क मनो
रथ को म विहारी ॥ नाव को दाव कछु न लगे छि ज जो न सी
क र्न सी कार पछारी ॥ मो सुत नैं क न पैं रि स कै बु ज नीम नय
कर सागर नारी ॥ ८ ॥ र न मे निर कै दि रं वा सुर सो रू व क
सुर सो न विन छु टि दि गो ॥ फिर की च क सो रु ज रा संध सो कु
ल दो व न को सिर कू ट दि गो ॥ जग मे न दै स बु व मो जि न तै
ति न तै कृत जी व न त ट दि गो ॥ निर नीम म म हा बु ज पा द न
पा यः सु यो ध न सो घ ट कु ट दि गो ॥ ९ ॥ कविता ॥ गा जि ब ध नु
व ज हां अ य य नि यं ग दो य व रु द त वा द न म द मा रु त के
मी त हें ॥ सार थी रे क स नी म सा स की शि खें डी ओ रा ॥ भट
क म्म आ दि वी र ज ग ते अ जी त हें ॥ दि व छि ज दी न व ध मे व
न प सा व धा न ॥ वि दे कु ल लोक की म्म जा द वी च धी

के उदय ज्योतिश्च यप्रतीत जैसं युधिष्ठिर विजेरुं की विज
 यप्रतीत है ॥ ८५ ॥ तवैवा होवल वंड जरा संध सोतिन तै गये
 रूपन के गन के दटः और की का जगदीस नगे सोइ नीम
 य छारि के मारि लियो ऊट ॥ जीति सुरेस महाई करे सब की की
 नी कपि ध्वज लोक कहे रटः कोतिन जीति सके सुनि सं
 जय है जहां नीम धन जय से नटा ॥ ८६ ॥ कविता की रत्न नार
 द सो ॥ सोन क सो सुनि बोदे ॥ पूजन प्रथम सो ॥ ३ ॥ पद से वर मा
 र नी सो ॥ ४ ॥ दास त्वह नु सो ॥ ५ ॥ सरा वदन अकूर जै सो ॥ ६ ॥
 आतमानि वेद वलि दे सरा ज दानी सो ॥ ७ ॥ सषापन उधव
 सो ॥ ८ ॥ समरन से सको सो मनु सीत यस्या गान दत्ता त्रय ग्या
 नी सो ॥ नारायण जुक्त नर अमोता को जी सो च है के है को
 न मरु मेरे प्रुत अनिमां नी सो ॥ ९ ॥ संजय उद्दिष्टा ॥ सेना
 पति सुत जेन को ॥ चाइत होत वषुत्रः करन छुते शेनी स
 हो ॥ यहै उचित नही अत्र ॥ १० ॥ करन हि सेना पति कयो
 सो पि अंती इ नियंचः तीन रही सुत धर्म को ॥ तिउन हिर हि
 हं रंच ॥ ११ ॥ ले आग्या कुरु क्षेत्र प्रतिः चलो सुत सिर नाय
 ॥ फिर जै सो जुध दे विरुः ते सो कहिह आय ॥ इति श्री पां
 डव्य पयसे इ चंद्रिका द्रोण पर्वणि द्वादशम अध्याय ॥ १२ ॥
 कर्ण पर्व विशेष पायन ॥ १३ ॥ लखि डे दिन की जुध प्र

क
 द

संजयपरमसयान॥ कहि न्यतैतवधुत्रको॥ कद्योक्त
तनवान॥ १॥ कविता॥ जीमवडवागिजाकोनेककूनकी
नयः सात्यकीतिमंगलकोत्रासकूनमाशोरज॥ न
लसहदेवधृष्टकृष्णशिखंडीजैसैमहाबलगाहनके
वैसौनाकछुरिजाजः किरीटीकेकोपवायुचंडयंडकी
गीगाजीवलहरचलीलोपिकेंप्रमानपाजजातैनयच
रतहोआवेदेसमुद्रपारः कयोधनवारकर्ननवकाटा
गानीआजः पंकजुक्तनयोद्यतकीडातैसुधिशिरकेयस
कोसरोवरसोनीकैकैनिषरिगो॥ पानधुत्रकोपकोप्रच
रपोनगोनतातेचोकरिचंडालमैघमंडलवधरिगोः पं
नकीयेदेवीओननीमकूंडसासनकौ॥ मनीकोनलद
नताकोत्तदिनप्रियरिगो॥ कलनिदीगांजीवकीफिटतैस
योधनकेविजयमनोरथब्रह्मस्त्रदीउभरिगो॥ ३॥ मेरु
कोचलणईडरथकोपतननमिः उदयषनाकरकोपती
वीमैकदैकादि॥ सिंधकोसोसोधणअदाहतेजअगनि
कोफटिबोन्नगोत्तकेसोसंजयविचारैजांदि॥ आरुपांडु
धुवदिसाजीतीकोजितेयाएक॥ आयेतैकोआइवमै
देवदेसजीतैतादिकोअनिरसंमैअतीनातैकनिमानैजे
पेतोअनिरसंमैमेरेकर्नकोपतननांदि॥ ४॥ सवैया॥ मास

पांड०
८७

तीकं विषदीनौ जवेदसमादरति न को असुनायो॥ जा
तहो सो जसो परधान उतै न पड़ो परतै बल पायो॥ आप
का जग योइ जग जसो॥ आसिष देह मदी तै रुसायो॥ अ
अंधक देह मम पुत दे॥ अंधतै जीत बेहुं जुधव्य तव नायो॥
६६॥ करन मरन सुनिकां न हिय न फटत कहाव जहै
कित सुत विजय विधां नः धां नहां न जानी परी॥ ६७॥ कसो
इके सैं करनः मसो करन किम तात॥ ६८॥ सोम सो चित्र
नहितः कहूँ जयारथ वात॥ ६९॥ संजय उवाच महिष
कीनी करन अष्टक मन्त्राणि आधः त्रिरी परम परमेष्ठ
७॥ हो न लगे न पवाधा॥ ८॥ कविता नीम डोनी दोवन के युध
को समाज नयो॥ नागे नर देव धरा ओम वीच धां न सेः दोव
न के कटे सख दो उग्र दे और और दोवन के वचन कटे
फटे वख जे सौ दोवन के अंग हें पलास विना पां न से दोव
न के वान लगे दोवन के आनि नगे दोवन के पां न गे दोव
न के धान सौ॥ १॥ छंद पधरी॥ यहरीत नयो मिलि ठुं द जुठ॥
कुरु पांडव जूटत सहीत कुध॥ कुरु विरह नाम निज स
जुवेस॥ परम परफट वोलत असं स॥ नप तोर मंत्र को यह
विनाम॥ निज बंस दोउ और नाम॥ पांडवी से न विचमती पा
यः॥ हजार न करन दीने मिटा य॥ दस निरे नीम तै तोर पुन

निजदविदा
करनप्रतिनकुलबोमोदकारः धनिआजदिवसरिनवीत
नतमिलोसत्तातेवयैबीजकुरुकुरु
हेऊअन्मायाहेऊसंजमनीधुरपगायाजोअवहिना
जैहैननीचमिलिहेनकुटवसिरचटीमीचः दुपदाको
हेवचनसालासुषसयनकरदिधरमजनुवान॥ यह
नतकरनबोमोअनीतः नदिवऊतबोलिबोसुनटरी
असैनसुनटबोलतअ
संकदतचलेमार्गणअपारः यतउतदिनयोवांल
नरदोयघटिकानयोपुठः करनकुनयोपुनि
नकुलकेप्रथमचऊअस्वमारिः सारणीरेक
धनुषनिषंगपुनिध्वजादंडः हतवानकीयेस
बंडबंलाजैयर्द्धचर्मपुनिसुमषंदोरितेउवांनमारिदिय
नतोरिमासोनप्रयावायकर्सनारि॥ कटुवचनफदैग
धनुषडारिः अमीनकरऊमुयवऊरवातः संननटदिन
वणकरऊताताअनुजरथनयोआरुदआपः विभुरद
करंडगतयथासायः धनिधनिन्यपमानतऊंसधीरात्रीयगत
पतीकेअनुगवीरज्जुसंसप्तकमरतजातः सनरतैनि
मुरततातः अर्जुनतबसेनासांजवेसाअतिकरीबिक

३०) जनपथेरिघेरि॥ नोकरनयकितयिरटेरिटेरि॥ सवनगत
कपिध्वजहेरिहेरि॥ कटिपरेवीरकेउसमरघोर॥ अबड
रनयोदोउसैमओरा॥ ११॥ दुहा॥ कसौतोरसुतकरनप्रति
डरनहुदयविचारी॥ मानतहोतवजुजयनधरा॥ सरवजु
कोनारा॥ १२॥ सोइतवदेष्टतसैममम॥ करिकिरीटीनास॥ जी
वेकोजयकोवहु॥ रघुकुसविमवास॥ १३॥ कर्नरयद
यसंतनिमोगधनु॥ नरसममेरेनाहि॥ तिदिसमानजुधकर
ततोउ॥ कदतन्यूनममकाहि॥ १४॥ सत्यकरहुममसा
यी॥ नैकुविजयधनुदाय॥ रघुकुटिगवाननसकट॥ कदा
विचारोपाय॥ १५॥ परसगमदतविजयधनु॥ वहुदिनहु
जितबांन॥ अर्जुनदितरायेउनय॥ गहिहुवज्रसमान॥
१६॥ छंदधारी॥ तबपुत्रमइतप्रतिबुलाय॥ सबकसोक
नबाँछितसुनाय॥ ममविजयतोरआधीनआजा॥ हाकीये
कर्नरयमोरकाज॥ तुमअसकुसलहुसहिप्रमानाहेक
नरयीअर्जुनसमान॥ कर्नधनुविजयधुनिहुसबांन॥ तुम
जुक्तहरहिकपिकेतुघांन॥ कपिकेतुविनानीमादिओर॥ त
तकालवैकुंठपित्रघोर॥ तजिनागनेयममकियसहाय॥ यह
पुनसुतंजसतीहिमिलहिआया॥ १७॥ संजयवाचा॥ दुहा॥
गयोजुधिरतेमिलनय॥ सत्यवधमवयगट॥ मातुलतेज

ज्ञानपतसमस्तिनवस्यतघाट॥१५॥तुम्हेसुयोधनजचिदै
 ।करनसारथीकाजा॥अकरनकंकरियोअवमि॥मिरेहित
 माहारजा॥१६॥करनस्तुतिहैंअधिकबला॥निघातैंबला
 छीन॥कैसारथीनिघाकरऊ॥होदिइष्टमददिना॥१७॥त
 अस्तबोस्योतोउ॥नघोसत्यतिदिकाला॥करनमान
 यंडनकरन॥कदैवचनजिबुसाव॥१८॥सुतपुत्रकोसा
 रथीकरतनपतिकूंआजा॥मैंजगनीस्तआयुग्रहना
 तजेतवकाजा॥१९॥असैकदिनयउविचन्यो॥करऊ
 ऊइकंता॥कोनरहैतवदिगजचूं॥सरनरसंतअसंत
 ॥२०॥करनहिगिनतपगकमी॥ओरतजीकानांमहि॥
 बादिककीसैमकुं॥मैरेकुंरिनमांदि॥२१॥कैटपकरि
 गयदिगा॥विनतिकरीवहोरा॥मांनतहूंथीकस्तनै॥
 कमतोरा॥२२॥आदिकरनेपैएकअव॥अ
 नदंतकबांन॥तातैचाइतहूंनयति॥सारयितोरस॥
 मांन॥२३॥करीसायितारुडकी॥विधिनिधुशंकरवार॥
 नररयषेरकरुम॥नयि॥यदैप्रतसमुहारा॥२४॥सम
 सोरुस्तनैअधिसुति॥नयोधनगुनग्राम॥रुकिं॥
 रविमादनप॥करिऊंनीचक्रकाम॥२५॥करैकोन
 जोसुतसुत॥यदैवचनमममना॥करुंवीश्वर॥न

को॥ नोक्तामै अनुकूल॥ २५॥ रथि सार्थि कुं होत है॥ सुयउ
 य नोग समान॥ उ नय पर सपर वन ते हो॥ कष्ट परेत न अ
 न॥ ३०॥ ताते हित की अहित की॥ कहि है मऊ न रेसा॥ मेल
 हि हूं रिन न मिमै॥ करि हूं को धन लेस॥ ३१॥ छंद धरी॥
 न यो प्रात उंद नीव जे घोर॥ करि मूढ़ से मच दिउ न य अ
 र॥ २५॥ एक कर मे न अस म डर ज॥ गिर एक जघार विद्व
 न ना ज॥ तहां न ये सकुनि विपरीत रूप॥ न ये स न रति
 व से म न य॥ गिरि प सो कर को ध्व जा दंड॥ धुनि कियो स
 रा टे प्र चंड॥ अल कानि पात नो आर ओर॥ धर ध॥
 जि मि दौ र विष ना जो र॥ तित क सो कर न न प सु न रु म
 ड॥ २५॥ वि अ व ल या व त स दित छिद्र॥ उ त जु री स मु य रो उ
 से म आ य॥ स व न प्र ति कर न बो र न त सु ना य॥ ३२॥ क वि
 त दे हूं अ स्व करी आ ज किरी टी रि पा वै तो हि॥ दे हूं वा अ
 मो न व स्त्र न य न अ पार मे॥ दे हूं श त पा च त्रि यां रा मा
 दे स मा ग ध की ऐ ऊ न च हे तो ओ र दे वें कुं उ दार मे दे हूं
 नि ज दार पु त्र॥ ओ र म न बां छित जे क पी ध्व जा दे प त ही
 क ऊ नी र धार मे॥ पा ड व को वि नो ओ र बा स दे व रु को वि
 नो वि श्व मे वि श्वा त क र्म वा हो दे न दार मे॥ ३३॥ स त्म॥ गर
 की स म ता कुं म छ र उ डा डै॥ ति मं ग ल स म ता कुं की गा व न

ह्याजातैहैकेहरकीसमताकूंजंबंककरतजोररविकी॥
 समानताधिद्यौतकवेपातहैशेषकीसमानताजुंदिडन्त
 कियोहीचहैरसकीसमानताकंकाकअकृतातहै॥शर
 रुदैकंजरकीसमताचहैजुंचीटी॥अर्जुनकीसमतातंर
 रनदिषावतहै॥३५॥कहांसांचरुवकहाकाचकहाहीरक
 णी॥कहागईमेरुकहांमहीओवघांनहैं॥कहांनिसांयोसा
 कहांदीपककाहांरकाचंज॥कहांधीधरसिंधकहांरूपको
 प्रमानहै॥कहांदेवतरुकहांविकलबैबैलवछकहाहैकपी
 रकहांकंचनकीघांनहै॥अचलताथकीकहांकहांघांनपी
 परकोकहांकर्न॥अर्जुनकीसीलतासमानहै॥३५॥एकसां॥
 मकांजइजैसारथीतैवसोतंरूपःतीजैबंधोकासंनम
 शेतीनवंगतौ॥कएकहैसत्सुमरुचीयातैहैज्मजाकोचि ज
 चकहाअसोकडबोलैसोउंगतौ॥मासमदादरिणीउचा
 रिलीतेकामगीतधारणीकुसंगव्याकुलअनंगतैःपतिउ
 तजैबिसारीपूतकुंतिजैनिकारिजाराकृतजेननरीप्यारी
 कैप्रसंगतौ॥३५॥आकृतधतुयमेरगांजीवधनुअनासमे
 अययनिभंगसैं॥बाकेरुसप्तारथीसवेदे
 अककुलमतिमेरेप्रतिकुलतोसोसारथीकुसंगहैःशोक
 बाकुंवरसंनरुद्रइकोअन

सायकूकोटि रहरंग॥ नीनोत हां फटा यको॥ अर्जुन समर
 अ नंग॥ ४५॥ नरकू आवाहन कियो॥ सुसरमा जु जधको
 साजा॥ जापी छै जटन नये॥ कुरुपांडव जय काजा॥ ४७॥
 तेकर नर हक उतौ॥ नीम से नर नभीरा कटत मित नहि
 नहटत॥ उनय से नवरवर वीर॥ ४८॥ छंद मोती रांम॥
 टकत क्रोध जुरेति रिकाल अटकत अकन ऐक आ
 ल॥ चटकत बोलत बांन कबांन॥ दटकत अरु न
 प्रख समान॥ रटकत मोन रुं स्पद वरहा॥ कटकत अ
 धरंत सनाद॥ पटकत जासिर घाय प्रहारा॥ नटकत॥
 तनु जाम विसारि॥ अटकत नादिन अंग प्रहारा॥ सट
 कत बोलन कदेत न पानैरा॥ उठकत कायर के कदिहाय
 उटकत सखन दायर दाय॥ बटकत स्वापद आदि अ
 का॥ गटकत कंक रूसि रुकिते का॥ मटकत नेर ववी
 पारा॥ ऊटकत लेत उगय अहार॥ रसकत नादिन
 मीच विहाय॥ ढरकत मंचन ते सिर काय॥ परकत जान
 रूपांन अनेक॥ परकत बांन वर मन छेका॥ करकत
 हमान रुं बीज अकास॥ धरकत नेक नरेय विनाम
 रकत वादन नाजत हर॥ करकत बैद्य जटंड ममरा॥
 रक आवत आद ववीच॥ ववयत बांन मचावत वी

ताते ज्योदसागौ हे ॥ ५५ ॥ चयकोपीयकोनचंदकीमयु
 यकोसंचाहो नत्तनुयकोनचाहतहो जिमकुप्रथामात
 दुधकुतै ज्योदसचुखोनयांन ॥ औरकावताउस्वायाहमे
 रमनकुंकर्नादिकवीरकुंवकारकसौरसाकीजेरुधिर
 निकारपीथोपूरनकरपनकुं ॥ नारगयोदोषरीतैउरन
 अवारनयोकहोयंपुकारिकेडकारिडस्सासनकुं ॥
 ५७ ॥ उहा ॥ शोनपियतरिनसबुकोः दरसनीमअनप
 कहिरकसमबचघटकतः लख्योनजायस्वरूप ॥ ५८ ॥
 उस्सासनकेरुदयतै ॥ सबैकुटलतासोधि ॥ वायुतनय
 कुटलानको ॥ मनकुंरियावतबोध ॥ ५९ ॥ निरेचतुरद
 ससुत्रतव ॥ अग्रजवधलपिओर ॥ नीमगरातेछिनक
 मे ॥ गयेडसासनहोराधोईतिअपांडवयसेडचंद्रिका ॥
 कर्मपर्वणित्रयोदशमयय ॥ १३ ॥ होहा ॥ अर्जुनके
 इष्टनपसोधर्मपुत्रध्वजदंडकहोनीमतेसोधिकरि
 कितहेनयवलवंड ॥ १५ ॥ श्रीमदेवोवातमोअरिनरेगत
 मानिहो ॥ तुमहीसोधरुतातः आयोडेरनवीचरय ॥ लपि
 नयतिदिहरयात ॥ १६ ॥ जुषिष्टिखवाजाकेडरहीतैमोकुं
 तीनदसमंवत्सरनिकेनिडाआईनांदिताकुंमारिआ
 योत ॥ जाकेआगेआरदिगपालनकीविजेनाहितादिम

तपुत्रकमिदयविजेपायोत्तं॥तीनलोकवीचतीनका
लमेंनअसोकोउतैसोधनुधारीलोकलोकमेंकदाये
त्तं॥धुधिरकरेधमजागहेवधार्आजसारथीसमे
तअरक्तजसलायोत्तं॥अर्जुनव॥आपकीध्वजा
कोदंडनिजरपक्षोननीमनयोसत्रुनिहतेनिहारे
वैकोआयोमै॥अबलोहंकर्मविद्यमानमारेसोमकान
अनीदेवीआयोनीमसेनकोपगयोमै॥आयकुं
सलदेमिरवरेऊकमपाययायहुंविजयमारिदेउ
विजेपायोमै॥इइकोजरायोवनरुद्रकोरिजायोअंम
नानाधुधजीतिरेवदतकुंवजायोमै॥धुधिरउप
अपाकेअसततेरोनयोसातसोमपीछे॥नईयोमव
नीयोअनायुनकूपारिदेजीतिहंजिनाकअनैकरि
देअरओकमातैकोनजीतैनमिनारकुंउतारिदे
रेववानीमिप्यानईतनकंन्यानईकाहेजुधलोरेअ
योशत्रुदेयिकाउचारिदे॥कृष्णादिकयोअंतिदंगेध
नुसोधनुसोपदेऊयदंअंगेदेयिगधाधुत्रकोतेमामि
॥५॥दोहा॥धरुनीकियोविकोमअपिजेदवंधवध
काज॥कृष्णकदेसत्रुननिकवोपदेकोनगतिआजा
अर्जुनउवाच॥कोउमोहंमनमुयकरेउ

ताते ज्यार लागौ हे ॥५५॥ चयको पीय यको न चंद की मयु
 यको संचा सो न सचु यको न चाहत हो जिम कुं प्रथामात
 दुध ऊतें ज्यार सचु सो न पांन ॥ और कावता उखाया हमो
 र मन कुं कर्नादिक वीर कुं वकार कस्योर साकी जेरु धिर
 निकार पीयो पूरन कर पन कुं ॥ नारग यो दोष ही ते उर न
 आवार न यो कस्यो यं पुकारि के डकारि डस्सासन कुं ॥
 ५७॥ दुहा ॥ ओ न पिय तरिन सचु को ॥ दरस नीम अनप
 कहि शक सम बच यठ कत ॥ लप्यो न जाय स्वरूप ॥५८॥
 ॥ डस्सासन के रुदयते ॥ सवे कुटल ता सोधि ॥ वायु तनय
 कुटलान को ॥ मन ऊरि पावत बोध ॥५९॥ निरे चतुरद
 सचु ततव ॥ अग्रज वध लपि ओर ॥ नीम गराते छिनक
 मो ॥ गये डसासन दोरा ॥ पोईति श्री पांडु वय से डचं प्रिका ॥
 कर्म पर्वणि त्रयोदशम यय ॥१३॥ होहा ॥ अर्जुन के
 इष्टन पसो धर्म पुत्र ध्वज दंड कस्यो नीम ते सोधिक रि
 कित हे नय वल वंड ॥१४॥ श्रीमसे नो वत्स मो अरि नरे गल
 मानि है ॥ तुम ही सो धरुतात ॥ आयो डेर नवी चरया ॥ नपि
 नयति दिहरयात ॥१५॥ जुषिष्टि खुवा जा के डरही ते मो कुं
 तीन दस संवत्सर निके निडा आई नां हिता कुं मारि आ
 योत ॥ जा के आगे चार दिग पावन की विजे ना हिता हिस्

तपुत्ररुमिदायविजेपायोत्तं॥तीनलोकवीचतीनका
नमैनअसोकोउतेंसोधनुधारीलोकलोकमैकहायो
त्तं॥धुधिरकरेधननागदेवधार्आजसारथीसमे
तअरुतजसलायोत्तं॥अर्जुनवा॥आपक
कोहंडनिजरपसोननीमनयोसनुनिहातेनिरुपरि
वेकोआयोमै॥अबलोहंक
अनीदेयीआयोनीमसेनकोपगयोमै॥आपकुंक
सनदेधिरवगेऊकमपाययायहुंविजयमा
विजेपायोमै॥इइकोजरायोवनरुइके
नानायुधजी
अथाकेअसततेरेजयोसातद्योसपीछे॥नईओमव
नीयोअनाथनकूपारिहजीतिदेत्रिनोकअनेकरि
तकोनजीतेनमिनारकुउतारिह
ववानीमिथ्यानईतनकन्यानईकाहे
७॥षकाउचारिबोह्लादिकचोरकृतिहारोध
वा
॥५॥दोहा॥यसनीकियोविकोसअसिजेएवफवधा
रुसकहैसनुननिकदोष
अर्जुनउवाचा॥कोउमोहंसनमुयकरेउ

० न मेरो नैम अयडहै सदा हरति प्रान ॥ ७ ॥ कहे आपसौ के
कनत सोई धर्म पुत्र डरवाइ ॥ जीय को जय को राज को मि
ओ मोर अह्मद ॥ ८ ॥ धर्म राज कं मारि हं रयन प्रत सा
मोर ॥ फिर मेरो जीवन कद ॥ तजि हं प्रान बहोर ॥ ९ ॥ श्री
कृष्ण ० कहे धर्म डरवाइ तोहि ॥ कोध वडावन काज ॥ कोप्यो
अजुन कनक ॥ अवसि मारि है आज ॥ १० ॥ कहे समुपड
रवाइ रे ॥ तं संबोधन नीच ॥ गुरु जन को विन सखतै ॥ बरु
कहत श्रुति वीच ॥ ११ ॥ कविता ॥ युधिष्ठिर यते तिता कूं
कहत युधिष्ठिर सो आप धप धारे धध धीर ता कहारं ही ॥
आप तैं कनिष्ठ त्रधर्म ते गनिष्ठ नीम मो कूं जो कहै तो क
हे ता हं ऐसी ना कहि ॥ आपके अनाग यो यो पिता को वि
नाग की नासाग वं क आरु जी तीरिस आर की मही राव
री ये नून होत वंस निरमून कहि ॥ आप की कब न राषी
सून आज नौ सही ॥ १२ ॥ दोहा ॥ यंकही अचो यडग पुनि
सम कि पिता वध पाया ॥ आप घात कूं कल कहै ॥ बरु रिकर
त कहा आप ॥ १३ ॥ नो मोहि अग्र जन्मात को ॥ विना सख व
ध पाय ॥ कै सै राखु रे हक्त ॥ आगे घेर क आप ॥ १४ ॥ श्री कृ
आप करे नम आप को ॥ आप घात सम साच ॥ जीवन म
त गनि आप जमी ॥ स्वायं नमनु वाच ॥ १५ ॥ अजुन ड ॥

छप्यौ॥ एकधनुषगोजीवः विजयिष्यति सारसुतः ॥ १५ ॥
 धगोजीवः प्रगट्कियञ्च नयश्च मरुतः ॥ १६ ॥
 वः करिदिग्वीजयदति उषनः एकधनुषगोजीवः ॥ १७ ॥
 उडरजोधनकोदलः विनुसै न ए सगोजीवः ॥ १८ ॥
 दुषंडन करिया ॥ करिकोपभनुश्चोरको ॥ आपकहा ॥ १९ ॥
 चरिया ॥ २० ॥ दोहा ॥ ए सुनिश्चरवचनश्च उजयें ॥
 पवनरिसगोना ताके पदगहि रुसकरि ॥ करिहरपमत
 गतिकोना ॥ २१ ॥ युधिष्ठिर उवाच मे उरवि सनी नाम कृत ॥
 वरायक कुल केरा ॥ एनपको मे तपमरुतः ॥ आपकहा
 सति देरा ॥ २२ ॥ श्री कृष्णतिरिसे ॥ २३ ॥ मरुतः ॥ आपकहा
 जा ॥ रथन वत सविजय की किये गै मोगनिना ॥ २४ ॥
 जविजय जस लेका ॥ २५ ॥ धर्म सुत्र कें ॥ आपका ॥ निनय
 नायकपाल ॥ तिन कें ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥
 २६ ॥ मिनेप ॥ मप ॥ मप ॥ मप ॥ मप ॥ मप ॥
 होउ न्यतः करत युधिष्ठिर ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥
 वेताता ॥ २७ ॥ कें ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥
 निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥
 निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥
 निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥ निनय ॥

१० न मेरे नेम अखंड है। सदा रहोति प्रान॥ ७॥ कहे आपसी के
सनत सोई धर्म पुत्र डरवाइ। जीय को जय को राज्य को मि
थो मोर अक्रूर॥ ८॥ धर्म राज कं मारि हूं रथ न प्रत सा
मोरः फिर मेरे जीवन कइ। तजि हूं प्रान बहोर॥ ९॥ श्री
कृष्ण० कहे धर्म डरवाइ तो दिः को धवडावन काज। को प्यो।
अर्जुन कर्न कूं॥ अवसि मारि है आज॥ १०॥ कहे समुपड
रवाइ रथ। तं संबोधन नीचः गुरु जन को विन सस्रतै। वक्र
कइत श्रुति वीच॥ ११॥ कविता। जुधि स्थि यते तिता कूं
कइत युधि छिर सो आप धप धारे धध धीर ता कहरं ही॥
आप तै कं निरुत्त न धर्म तै ग निरु नीम मो कूं जो कहे तो क
हे ता हूं ऐसी नां कही॥ आपके अनाग यो यो पिता को वि
नाग की नासाग बंध आरु जीती हि सा आर की मही राव
री ये नून होत बंस निरमून कही॥ आप की कक न राषी
सून आज लो सही॥ १२॥ होहा॥ यं कही अचो यडग पुनि
सम कि पिता वध पाया। आप घात कूं कल कहे। वक्र कर
त कहा आप॥ १३॥ नो मोहि अग्र जन्म त कोः विना सस्र व
ध पायः कै सै राषु देह कं॥ आगे धैर क आपा॥ १४॥ श्री कृष्ण
आप करे जस आप को॥ आप घात सम साच॥ जीवन म
त गनि आप जसीः स्वायं न मनुवाच॥ १५॥ अर्जुन ड॥

छप्यौ॥ एकधनुषगंजीवः विजयिष्ये हरिं सुरसुरः एकधनुः
 जीवः प्रगट्कियञ्च नमश्चमरुतः॥ एकधनुषगंजीवः
 : करिदिग्वीजमदतिउषतः एकधनुषगंजीवः रत्नि
 कोदलः विनुसैन्यएकगंजीवभूतः॥ कोदल
 मंडनकरियः॥ करिहोपभुञ्जोरक्तः॥ शामरुहाई॥
 रिया॥ १५॥ दोहा॥ एस्तुनिह्वरवचनश्चउजके कितन
 पवनदिसगोन्नाताकेपदगहिरुसकहि॥ कहिनपभु
 तकोना॥ १६॥ युधिष्ठिरउवाचमेडरविसनीनाम्पदत॥ १७
 वरायककुलकेरा॥ एनपकोमेतपकरुः आतकह
 सतिदेरा॥ १८॥ श्रीकृष्णतिरितेरेबंधकीमस्तुवचावनक
 रयनप्रतस्तविजयकीकियेरेमोगनिकाज॥ १९॥ रा
 विजयजसत्नेका॥ २०॥ धर्मपुत्रकहेआपसै॥ जिनदे
 नाथकपात्ता॥ तिनकैधिनसैछिनकमै॥ करंनविष्णकोण
 ना॥ २१॥ मिलेपरसपरसपरदरसहरिसः दरतअंशु
 जातः करतयुधिष्ठिरछिमरुमम॥ विजयशेकुंत
 ताता॥ २२॥ कहैअर्जुनमेरीछिमरु॥ मातपितागुरुना
 ॥ त्रैसैडरबंचआपकुं॥ अवलंकहेनपाया॥ २३॥ कोडर
 की॥ विजयआसमिदजाका॥ किंगंधाः
 तथा॥ पुत्रसोकविलनावा॥ २४॥ किंकनकाय

मिद जे है तत काल ॥ तथा कर्न की वियन कुं ॥ नषण के
साल ॥ २५ ॥ धारि सुदर्शन कहत हरि ॥ नरतै मरै न आज ॥
तो उमै हति हूँ नय मत जि ॥ करन हि कुंतव काज ॥ २६ ॥ यंक
रय आदर नरे ॥ नरे सकुन सकय मल ॥ अनिमित्त उल
का पात जे ॥ कर्न हि हूँ प्रति कुल ॥ २७ ॥ नीम कहै या समय
जो ॥ वीर कपी ध्वज होय ॥ मरे डूधरा जाधात नय ॥ डरे स
योधन रोय ॥ २८ ॥ मोर जु ठुठते अमित यद ॥ निरे विगत अ
मवाय ॥ डर योधन की सैन्य सब ॥ अब दी होय अनाय ॥ २
९ ॥ कविता ॥ कहे देविसोक नाम सारथी महारथी ते स्यंदन
कीने मिते नथ जत ककात है ॥ देव दत्त पांच जन्म गांजीव
कीयो बहीत ॥ सैन्य को रबी के प्रांन पंछी उदै जात है ॥ सय
न कियो देस सत्त आज नो मुकुंद अव ॥ कर्न प्राण कर्म न
सुदर्शन सुहात है ॥ महामेरु कंदर सी रे पिध्वज अंदर संम
दर गिरी सो नीम बंदर दीषिता है ॥ ३० ॥ कसो सारथी ते र
थी ॥ हेरु चतुर्दश ग्राम ॥ यहै वधाई वीचही ॥ और गजा
दिई नाम ॥ ३१ ॥ जरे कर्न अर्जुन जबहि ॥ कुटिल रुद्र जुत
कुध ॥ राको आस विमान ते ॥ सरन निहार न जुझ ॥ ३२ ॥
शरणा ॥ जो कै है कपिकेतु ते ॥ करन मरन विधिकाय ॥ तो
हति हूँ कपिकेतु कं ॥ मेसे नापति होय ॥ ३३ ॥ श्री कृष्ण उ

होयधनंजयपात करिसनुअज

॥३॥हसोविजयजयसे-

।पकरिकोधकरनकरनहुं

॥छुप्ये॥यतेकससारथी॥उतेमः

उतेधनुवि

कीगर

उतअस्वेदतहिअस्वःइते

तनातुआदितमयोनिस्वइछतविज

इनविचअमंनवजयउनया॥कितेक

इता॥३॥

हइयःयतकुपराडरवादाउ

रिसमरनजुतकीधचलेगनवांननयंकर॥न

आदितनयोकटतहोउमैमबीरवर॥हयमहारथ

उसारथी॥नयेवसंतयनासममा॥कदेदेवकिरीटी

रनधनि॥करनधमकोउकहतयमा॥३॥होहा॥ना

नवसतिअसोअजुतजुधः

तुस्तकुध॥३॥हजेदिनरिनकरनको॥तीजेदीनस्त

गंगा॥चोयेदिनडिजडोनको॥अजुतधनुत्रिऊआगा॥३॥

पुरेकरनअर्जुनजहा॥होनौसैमविहाल॥होतजया

३० शोयग जानिरता कंदली कोषय काल ॥ ३९ ॥ कविता ॥ अ
रि को समुद्र घर घर को मिल्यो दै सै सता के वी चंदर को न
ले स जो के घर को वर को प्र नाव है कि नर को प्र नाव हो ॥
किसर को प्र नाव के प्र नाव उ ने कर को ॥ जिते अवनी स
दी स परे वी स वी स पे ड लो वी जोग सी स धर को के सो पा
के के सो को न गो न ते अ ने सो होत ॥ अ सो रि न जे सो व न
तारि नारी यर को ॥ ४० ॥ गं जीव की घो स देव द तर य ने
मिन की ॥ अ वै गु रा में ड्रा सु ने वा ह न तितै तितै र वी की उ
दे सो नर आ ग प ते ता र ग न नि रि वे कूं सर वी र ना स त
कितै कितै ॥ पां न शे न ह्रा थ को ष या न य ह ना थ का त्प न
जे कु रू सा च ते ज पा थ को चितै चितै ॥ ग्पां न न्द लि ला वौ
ला न हां नि न्द लि जा वे के तै पां न न्द लि जा वे वां न ला ग
त जितै जितै ॥ ४१ ॥ को र वी ह मारी सै स पां ड वी मि टा य दे
दे का यर कूं मा रे नां हि सुर न पे कु छ है ॥ बाल का ल ही ते
डर जो ध न कूं चा हे ह म ॥ बाल का ल ही ते या के य न ते वि
रु छ है ॥ आ गे जे ब दे गे पी छे सु न स प दे गे क वी कितै के
क ठे गे न्द मी जु छ तै नि रु छ है ॥ किरी टी नि रे ते आ य ॥
ख न्न की सी धु ली जा त कु थ है ॥ वि रु ध है नि रु छ है न जु छ
है ॥ ४२ ॥ कम ल के द ल ऊ तै को म ल जु ग ल कर जु छ वे

नकबोरताविचित्रहो॥ अर्जुनहैएकतथाअर्जुन

जैसेजुरेसजुजेतेकुलपावेजत्रजत्रहो॥ गाय

नाथनमेंहायसिधुमारचक्रइ

धेरवैतेसब्यअपसव्यदोने

सजुपत्रीमित्रनोकधेरवेकेपत्रहो॥ ४३॥ नांमनिजसे

नानाजन्मिरत्नलेनधेरीसजुसैसंस्पर्धमेंप्रवेस

तिनकीसनाहविभ्रबंदरूँमिरायेहो॥ त्रयोदसद्योस

तरेसिंधतीजोगेनोपांचद्योसबीचरोयनांगकु

येहो॥ सजुकेमरेतेकोपघोननोप्रचंडतातेसम

अपसव्यधर्ममानसैलपायेहो॥ ४४॥ छंदपधरी॥ ४८क

रिकोधजुसौरिनस्तनपुत्र॥ त्रिसिसैनपांडवीजत्रज

त्रः करनप्रतिनरनदितनिरकेका॥ उँनरूँनसरन॥

बिनमरनएक॥ सरवरनकरहुटतसीया॥ जतपरन

धरनविचगमनहोया॥ तरुनिजुधलयतथितधरनिजे

र॥ सुतअरनउउतैँनरनिरनघोरनपिकरनचपा

नताअरिनमध॥ तवपुत्रविजयमानीप्रसीरुःपरि

वांनतैकरिनत्रास॥ त्विक्करतनजतकेउहोत

जीमसेनतवगज

पांड०

६

रकितेक॥ डयहरनसयाजडपतिदयालः केउवा
चायो नरकपात॥ ४४॥ डहा॥ पांडुजरतअरिव
यो॥ निगनिउडीतिहिमातएकजानिईकवानकीः
नईनईपाता॥ ४५॥ कवित॥ सोश्चेरयादकीयेकन
नआपकजोआगेयोअमोघयाकेतेजतेबिसैस नो
नविनजानैताकोकियोहैंसंधानरेषीहाहाकारि न
अंतरिसदेसदेस नो॥ जोस्योकंउदेसकृष्णमचकल
शीअस्वगिरेभूमिविचनरसीसपेप्रवेस नोः गिस्सो
किरीटकटिरतनजस्योहैं॥ ताकेंवियतेंजस्योहैं॥ न
रीटीकौनचेस नो॥ ४७॥ पुनितंनिरपवेसकरिबोले
कर्नसंजारिः संधकृतवममसचुपै॥ नैऊषांननिका
॥ ४८॥ कर्नकहैंतुमकौनसोईकरतसर्पमोहिजानि
लैनवैरमममातुकोआयोसमयपिछानि॥ ४९॥ कर्न
कर्नजोरतेंआरकोजुधनकरेअहिराज॥ कपटवा
नजोरैनही सुतअर्जुनवधकाज॥ ५०॥ जगबिचप
रहारकत॥ जिनतैय्यारेषांन॥ षांननतैजसमोहिप्रिय
॥ स्वामिहीधर्मसमान॥ ५१॥ जयजियरसाकवचअर
ऊंडलजसकेकाजदियेतवहिठिजरूपधरिः जावा
ननोसुरराज॥ ५२॥ इहसुनिअहिसररूपकरिः लैनक

पिध्वजवांन। चलो सुहरि उपदेसते॥ नरछेद्योषट्वांन
 प३॥ कर्नगुरुद्विज आयेतौ॥ ब्रह्मसस्त्ररथ नष्टः उतस्यो
 चक्रनिकारवौ॥ कृष्णकस्यौ करिनिष्ठौ॥ ५४॥ श्लोक॥ नि
 मग्नेरथ च केतुकर्णस्य प्रथवीपते॥ तं केचिद्वागतेका
 लो॥ इत्युच्यमानिरीटीनो॥ ५५॥ मां कर्णं तु धनुर्मुवी कर्षय
 कर्णानि को॥ कुरूणां कुरुन कर्णे सि॥ त्वं कर्णे कुरूणां
 कुरू॥ ५६॥ कर्णरियागनिमग्नतेः नो मय च यत्तु य॥ क
 तनेषु रूसकिरीटीकुः कदत्त न ईदिरुय॥ ५७॥ मतिध
 तुजा कप्या तलो॥ इव ऊरुसवन॥ करन विष कन कर
 ऊ॥ तु कुरु तुष न नन॥ ५८॥ श्लोक॥ वध करन अ करन
 समुजि॥ तजो पाय धनुवांन॥ कृष्णकदत्त दत्ति स तु कंदे
 वत कद अग्नांन॥ ५९॥ कर्ण॥ सुमो वेद ते वड नतौ॥ क
 र्म कष्ट न न्या ज्ञान सो दम साधो आ जलौ जया शक्ति
 सुनिकांन॥ ६०॥ धर्म नक्तधिक धर्म के॥ जे दम डी जत जात
 ॥ पांडव गुरुपितु कपटपया॥ मारि वदत दिन राता॥ ६१॥
 सरनागत रु विजुं॥ इती वदत रि न मादि॥ कर्न धनं
 यतै कदत्ता तुम से दत्त न तादि॥ ६२॥ विष रे क च र्वि
 कव च पुनि विधनु विरय अरि चादि॥ बाल अध्वनि
 मित॥ तुम से दत्त न तादि॥ ६३॥ मरेतो

कत्रासमतिमानि॥उनकलिमाकरिभंमिते॥चक्रउधार
तजानि॥६४॥श्रीकृष्ण३०॥वियतपरेपरनीचरन॥वन
तधर्मिवरजोर॥धिकधिकनिंदतधर्मकूं॥कुकरमलपै
नकोरि॥६५॥उपे॥जदिनधर्मसुधकरियनीमकोरियो
विषमविषजदिनध०॥लायग्रहजारिसुवतलधिजदि
न०॥चुवरतजरूंकतरानी॥जदिनधर्मसुधकरियाक
पटकरिजीरजधानी॥कहकृष्णतहोसुधिनांकरिय॥
दुपदसुतावनविचहरिय॥अहोनागवधाइधन्यदिन
॥कर्मधर्मसिसुसुधकरिय॥आपकोविषयगयो॥जदिन०
॥धोषयात्राचदिआयो॥जदिन०॥सागिरनविचनपन
उजदिनधर्मसुधकरिया॥गायघेरतनहीलजेउ॥कहकृ
ष्णतथासुधिनांकरिय॥मितेबोरोतअनिमनमसो॥व
धाईआजदिनधन्यतुम॥करनधरमसुमरनकसो॥६५
होहा॥१॥कृष्णवचानसुनिपार्थकै॥कोधानलकीज्वा
ल॥ओनननासाचयनतै॥बढीसधमविसाल॥६७॥को
पचलितचषविजयनै॥कीयोधनुषटंकार॥सोफकारगुस
जनसुखद॥डरजनरुदयविहार॥६८॥कवित॥सरके
अवादनकोकायरविसर्जनको॥बंनकीरसाहीकोज
तैत्रेजजानोमे॥इडेकेउछाहूकोरविऊरकुऊकोअ

चरविवाहूँ कौः कारन रिहा नो छै। गांधारी के आश्रय
को प्रजाज के संपद को जुष्टि रवि य प्रताप उर आ नो
मैं गांधी वकी प्रतिचाटे कार कौं अगोष यो स म त ने भरा
य को बीज मंत्र मान्यो मों ॥ १५ ॥ छंद पशरी ॥ अभा जा द ह धी न
एक बां न ॥ सो म ह वीर अ निमन स मां न ॥ धुनि ह सो क
र न को ड तिय पुत्र ॥ जुत कुंड ल म स क गि सो ज न ॥ ३ ॥
य वा ह रु ब्र म य र्वा य छारि पुनिक गो स यो ध ग हो धु य ता रि ॥
तै किय विरुध य ह ह ह र त ति ह त त अ प दि कि न रा गि लि
ता ॥ यं क रि रु की यो गां जी व संधां न ॥ धन के रूप सो ई रु ह
बां ना ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अचिप न च क र्ना त धुनि ते ज बां ग क
र्नातः नो म्मो सिर ह रि कर न को ॥ की यो दी प रा म रां ता ॥ ७ ॥
॥ डर जो धन के गे ह बि न ॥ ता वि न यो अं पे य ति ग नि क ति
र वी च नोः स व रे य त सं वा य ॥ ७ ॥ दि व दे स अ दि न स गि
रि सिं ध न दी ध रि दे द ॥ आ ग जु ध न पि च कि त ज म् ॥ ग मे
वि ज य ल पि गे द ॥ ७ ॥ कर न म र न नं त्रि य ल ड र न गि
र त रु क र न गु रा ग ॥ ड र जो ध न ड प पि थ पि ॥ म र न न पा
व त्त पा र ॥ ७ ॥ धां जु यो ध न ड द ॥ क दि न ॥ ॥ ७ ॥ दी प र्वा
ओ रि के ड ह रे पि ना नी स म डूं दे से व ले न न हं न र्द
र कूं ना दे गी ॥ सो दी न दी अ दा य धा ह

रेप्रथानंदकीकाकीरतरहावैगी॥योहीछुलहीतेनीमसेनते
 दमारेबधर॥नवस्यमस्तदेहधारीकुंतोआवैगीःकर्नह
 केमनहीतेसबकंदियांनीमेरुपानहानिमानीयेकहा॥
 नितोनजावैगी॥७५॥एजयउवाच॥शमअवतारहीतेक॥
 रीहैबिनीमरीतःलघसेसअंसईहांअग्रजकरायोहो॥व
 हांअनहुंनरहैसदाअकयत्नीवतदछनकैइहांविनवा
 रपदपायोहै॥वहांनीतपयकुंउलघिपावधसोनांहिः॥
 यहाअेसीरीतहीतेकांमकुंवनायोहै॥वहांइइपरीत्र
 कोसंधारिगण्योनानुनंदयहावासवीकोरधीरविजमि
 टायोहै॥७६॥बोहा॥१४एजपुत्रहनिपांचसत॥उनयस
 दसरघवीरइतेकरनकजठैसहसा॥एकनसपदचार
 ॥७७॥कियोसलसेनापति॥जयअसास्ततोरा॥फिरक
 दिहुंनबिरुजया॥जुहुवनेगोभोरा॥७८॥परेनिस्मझेन
 ऊमरो॥कद्योकरनवलनचाना॥पांडुनजीतहिसत्यअव
 आसानयवलनबाना॥७९॥उतैएकैअसोरनी॥तेरेस
 तकीतीन॥रहीसत्यकेजुधमो॥सोसबकैहैलीन॥८०॥मि
 लेएजसजिहमो॥धर्मपुत्रकेपासःतितेदेसकेतोरमतन
 एरुकेहैनासा॥८१॥इतिश्रीपांडवयसेहुचंद्रिकाकएपि
 र्वचतुदसमयसु॥१५॥अथसत्यपवी॥इहा॥संजय

कस
 ए

लेना नीयन जु कुरुयेत

बधाई देना ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ कविता ॥ नीमकु

विषतादि नव हो मोदी जनाय गेह नये ताको अं

त क्रीडा काल विस तार पायव दो नयो

दोष दीहर न नये मै जरी ते छायो हो ॥ मछ गाय गेरी जने कु

फल नार न सो ते ने दी कु संत्र जन सी ची केवल यो दे

॥ कडर के वचन कु गार ते न क डो उछ वा को फ न पा को

न प तेरी नेट आयो हो ॥ २ ॥ दोहा ॥ अं सुनि न प म छि त

नयो ॥ घाई रुदय दशरः दाय दाय रि न वा म म वा ॥ कदि क

रि उटी पुकारा ॥ मछ जागी न प त की ॥ दरत अं शु दो उ

नेत्रा सिधु गम न र न थ च टि स क न ॥ च ले ज हां कु रु ले

त्रा ॥ संजय अरु धतर दु नयो ॥ अ क दि र य आ रे नु

पूछत पंथ विच जु रु की ॥ वा त न प त जु त मो हा ॥ अं न

पारी ॥ अं न ई क या ज थ वि य म ना य ॥ स व क ह न त या म

ज य रु ना य ॥ म डे स न यो से न य म दी प ॥ स व व र ड जु क

त व मु त म मी य ॥ की र हो न ल गो मं ग म न प ॥ अ रि र दे

सर नि त नि त अ नं प ॥ सु सर ना व रु नो न कु न हा य पु

नि र ति ता हि स व से म पा य ॥ रु द ते रे म नि स मी य ॥ मा

रे क री म रि न वि च म दी प ॥ म द दे न र सो त व मा न न ड

हयबीजप्रवर्तकसकुनिचुङ्गा॥ मोरिपकरिलियोमाति
 किसहाय॥ करिकपाछुडायोवेदमास॥ बुधिरिरा॥
 किलगिद्रदयबीच॥ मडेसगिस्वोवसिडसहमीच॥
 करधदयसारिअदवदनहोय॥ कामीवीयलयटेज
 याकोथ॥ ॥ ॥ नतैअष्टादससहस॥ धर्मसेन्यवचि
 और॥ कृतवर्मज्ञोलेयकप॥ तीनमहारथीतोर॥ ७॥
 सत्यमरेतैतोरकृत॥ निज्ञतेअकुत्ताय॥ जलस्थंन
 नकेमंत्रते॥ जलविचसोयोजाय॥ ८॥ नीमसेनके
 वधिकजे॥ गयेसिकारहितेन॥ तजेमृतकमगकुं
 दपैदइवधाईअन॥ ९॥ सोकनियेन्यतमारके॥ गर्ज
 हांकुरुनप॥ धरमराजकटुकहि॥ छेओकालमस्त्य
 १०॥ धिकडरजोधनतोरमत॥ अपजसकोडरनांदि॥
 करिसारेकुलकोकदन॥ मिलिसोयोजलमांदि॥ ११॥
 मेकेसोरनछोडहोकहतोतुकुरुज॥ नजिजलविच
 नयनीमके॥ आयछीप्योकुंआज॥ १२॥ सत्योध॥
 सोर॥ निततुमकपटनिवास॥ डरजोधननिकपट
 ल॥ सबकदसीस्वावास॥ अपजसहरसीआपरे॥ १३॥
 ३॥ कवित॥ उकुलकोविनासकरिजलकोनिवास॥ की॥
 नोनीमकोनत्रास॥ औरनाजनेकआईना॥ नीसम॥

रुस
 १५

जेन कर्न सत्य से मय वेवोडु स्तान दसा देखितो ऊर
 ईनां॥ नीम कदेक दतो त अके लो मिदा मदे ऊर
 सता कहां गई कव ऊरि धाईनां॥ करी लमराई ते तो
 बे विसराई मे तो॥ जो परि पि राई ता कौं अ ब लो शि रा
 नां॥ १४॥ दोहा॥ कोपी डुप द कु मारि तौ॥ उर कौं ऊं अ
 ॥ ने जिय तो से डुकोः देखे अग्र ज कुं रजः॥ १५॥ सुखी
 धन॥ कवित जेन कर्न सो कहि ते मो को नी द नागी
 ॥ नी न दो स न ए हो न हार यं वि चारै गो॥ एक जा गा
 सो उ तो में अ म तौ नि व र्त हो उ सु यो धन ता ते नी र स ज
 त धारै गो॥ कु स में ज गा यो स रा अ से ई धर्म करी अ
 के जो है तो उ नौ॥ क तु म नै न हारै गो॥ च क जै है कै से
 अ क वे से नां उ न पै॥ ड क न यो ल वा तो उ न य करि डा
 गो॥ १६॥ जु धि छि र उ वा चा॥ ड हा॥ ४ क सौ जु धि छि र न
 प त सु नि॥ अ व र्ध धर्म न लेऊ॥ अंध मा त पि तु ड धित
 कौ॥ सं त ति को सु य देऊ॥ १७॥ क वित॥ ग रा धा रे कं थ पे
 ॥ वि कार त म दां ध न प॥ नी म आ दि सु नि ये वि चार क हं
 पं न मै॥ कै तो मु दि मार के अ जा त स तु र ज क रो॥ कै सं
 धार तु म हं नि वा स क रू व न मै॥ रि न पै ना वें नां
 मे संहरी जु ध ज ट्य सौ जं य दे स॥ नां ही द द

८५ सौरनमो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ नीम मिषाये कृष्ण के ॥ वाम ही
 जंघा प्रहार ॥ कसोगदा को दह पस्यो ॥ कुरुकुल नखन न
 र ॥ १९ ॥ कवित ॥ काली को सोच कैं कैं नाली को सो फ
 तकार ॥ ज्योन कपाली के कपाल के सो है उरोत ॥ आशु
 धर रेस के सो मान कुसले को नानु ॥ कोप की कसान कि
 धोमी चहूं की मानं सोति ॥ सुयोधन डसा स न डर्म डस द
 गन ॥ दिव्ये दोष दारु दिव्ये हनी रूते हनी होति जेव जाना
 जाना है कि जीव जमराज की सी ॥ जहर जलाहन के ॥
 नीम की गदा की जोति ॥ २० ॥ दोहा ॥ १ ॥ असी गदा प्रहार तें ॥
 नयो तोर सत नास ॥ नीम न तो सुत तें मसौर लक कृष्ण
 प्रकास ॥ २१ ॥ कवित ॥ चामी कर को सम बव सन के को स
 और रत्नन के सो को सरे क ए क तें नवी नें दों ॥ देस देस में
 नवतुरंग रंग के जेगती है विहंग संग घेर क अधी नें है ॥
 और रू अने कर जव नव सरा दुजे ते ॥ काज धतरा दु क
 न सत्रु न तें छी नें दों ॥ महावली अर्जुन को अग्रज वियण
 कार गदा को प्रहार एक दैस नारी ली नें दों ॥ २१ ॥ निमुखी कुं
 र्ड जै सौ ॥ त्रिपुर रू रू द तें सै मक को उयें डनी कै मं ल हं
 मिशाय कै ॥ नांग रू घगे जै सै गज को मगे द तें सै कुं नरा
 मचरु जुतर वन पचाय कै ॥ मेघ रू कु निंद महा काली दै सै

कुंजुंठंरकोकपीइंरहीपोरसवदंयके॥कोरवैइ
उगयकेमहो॥नगदाप्रधानंदगहोयोनरेइविजे
॥२२॥अरनीकुपरजाईकोपनीमकोसुआगिजन
जुधिधिरसंभारस्वागतीनेहो॥होताहैकिरीटीधनंस
जासद्यस्वहासाकर्महैवीरआजवीररसतीनेहो॥
योधनयज्ञपस्तकुस्तत्रअग्निहोडपुरणारूतिमेंग
हीतेंअंगछीनेहो॥वारीप्रयाकंछकीसुरेसैजग्यकारी
वकोतेजुवचारीसुरलोकचारीकीनेहो॥२३॥अग्नेइ
अनिमनहै॥वायुतनयउजायाकपीकीध्वजाकोजहो॥
रूपकरिराखोहै॥धृष्टकर्मचतुराननअध्वर्युतकीयेगा
हैसिंधीबेरबेरलेनअनिनाखोहो॥आहुतीबडी
केबीचकर्नइनेनीसमओजयइयसेहोमैत्रिनोकजस
नाखोहो॥जज्ञरूपदेहधरेहोताकेसमीपवेगोसनासो
मघोरिविजेसुधाचाखोहो॥२४॥गदानंगहोयकैपरैकुं
धर्मराजकहै॥बातेंसजुताईकीउगाईछानीछानीतै॥मा
नपितानिस्मइनेरुसविडुदिकनेनीकैसमजायोतामे
एकरूनमानीतै॥मेरीहीअनीतआग्नासवधैरहैगीव
नीकोनऐसोमोहिकोमिटावेऐसीजानीतै॥कुरुराज
धानीकूनसोचतसुयोधनमेकेनीराजधानीहाय

धानीतौ ॥ २५ ॥ इह ॥ इरयोधनकेशिवरसव ॥ करी आग
 आधीनः उतरेरथ ते विजयहरिसिधनयोरथ हीन ॥
 २६ ॥ वयमउतासो पाथ कूडुनि हरिउतरे आप ॥ नये
 नस्मरथ अस्त्रतौ ॥ नीस्मद्रोनप्रताप ॥ २७ ॥ छदपधरी ॥
 गोसिवरवीचउगीधर्मराज ॥ सुतद्रोन आधुसुततोर
 काज ॥ नयि नयदसाचितविकलसिध ॥ कियसत्रुहत
 नसंकल्पविध ॥ कर्तवमामातुलनजुक्तजाय ॥ त्रिहुछोरे
 रथनिशोधमाय ॥ कहुकरेसयनजीलगेनेन ॥ अमसम
 रमिटेतनहोयचैन ॥ एकआयद्युक्तहानिसाचारः ॥
 सबकाकनकोकीनोसंहार ॥ गुरगमोताहिअरिनासक
 ज ॥ मातुलनपतिबोलेविषराज ॥ पितुवयरओरनयव
 यरहोय ॥ सिरधरेमरतनेनारसोय ॥ निद्रानलगतआ
 वतनिसास ॥ तुमचलरुकरुनिमसत्रुनासा ॥ २८ ॥ क
 पा ॥ हकरिवोजुक्तनविषक ॥ हातसस्त्रगदिजुध ॥ जो
 जुधकरिवोहोयतोउ ॥ स्वामीठिगअविरुद्ध ॥ २९ ॥ वि
 नस्वामीजोकियचहैसावधानअरियाय ॥ करुजात
 जुद्धहोयहै ॥ हमहोउतोरसहाय ॥ ३० ॥ तंछिजनपरि
 नकपटियसो ॥ निद्रागतिअरिबंदा ॥ तोहिअर्मतं नाघ
 टो ॥ करिवोसत्रुनिकंदः ॥ ३१ ॥ अस्वयामाधनिस्मद्रोनअर

रध्वतकहै नो जव अथ वत सरेयि ॥ पिता पिता सचु के मिटा ॥
 नहर छेटी को डोनी कै घर तेन सोम ककने गेवचे ॥
 जावा ज्योन वच्यो सुन्यो वा जके ऊपेटा को ॥ निसा विचता को
 ते ज प्रलेता न के समान उवादे विकास यद्गुहाटक लपे
 टा को ॥ मारत चपेटा मेरा चहै वंस जो परकी घेरा करै धेरा
 गले बेरा वमने टा को ॥ ४१ ॥ मातुल की कांन को ममानी ॥
 मनन्यो कियो कर उरने चबी चबी रस छाये दो ॥ ताही ॥
 छिन जोति अस्व आसुध संनारि बेगो सांन को रिजाय सां ॥
 नरूप दरसायो है ॥ बहि निसा वीचना सकी नो चतुरंग ॥
 नीको धन्य कपी कुंय जाके वीच वीर जायो है ॥ जो न अपक
 र कै विषे स्यो कुल जो परको डोनी उपकार कै विजोग कुंमि
 टायो है ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥ पांचात्मास्त गता स्वर्गे ॥ दोलेन वा
 कृशालिना अवशेयाद ते गच्छिं ज्ञोणी ना योजिता पुन ॥
 ४३ ॥ कवित ॥ रुको मन पाप मै न जो पदी विनाय मै न मातु
 ल की सीय सुनै शोर न कताय मै ॥ सचु मारि सात सेष कना
 ये कमी धन को दिवायो वसायो केरवाय मै रुआय मै ॥ अ
 सीरि ससां प मै न प्रले के वताय मै न जे सीरि सज्ञेनी की वा
 स सचु के मिनाय मै ॥ आधी रत सो ये ये मिशय दिये पिछि
 ली मै आयो चुपचाय मै ॥ सौगयो चुपचाय मै ॥ ४४ ॥ इह ॥

बाजबधकहजिदुनदिनारवहिकुहारेसाविारसौनअ
 एदससहसाविचकोरिदेखुसारिधध॥संजयसंजय
 कोजतकसुअरलुतैहोयसुतोसदहैदअशंनोःसो
 नकोकोनकोसोचकरेसबछविदकोननुधैहोनी
 जेनसेजेनीसेहोतेरसेकतोहोतकतोखुतकोवतरी
 नो॥बोयगोरनकोषेतपितासंदी॥इतनिसादेरतना
 जलकीनो॥धधकविता॥पिलुकोमरेकोसोकनाहिअ॥
 लोकसोका॥स्वामीरुमरैतेरामिधर्मरिक्ततारीपै॥जा
 रअजवंसअवतंसवंसओपदकोछेदकोचकाईतज
 जुधकयासारीपैःजनोहोतोओशोजनोजेननदधान
 बोवैतेरेधुत्रहेधिकेयुकारिकरुंगारीपैःगांधारीकह
 तकपीमेरीसतपुत्रभारीवारीवारिनासंदुंगअन्नेकधु
 त्रवारीपै॥संजयभादोहा॥आदोणिमुधरिपुत्रकलुनि
 गयोसुयोधनप्रांन॥विप्रसस्त्रपरितांगकशिपिनाए
 अमयांन॥धध॥हरिलेआएपांडवनाशितरनसम
 यधनात॥उपदकरतविनायजिता॥हायपुत्रइजा
 त॥धध॥सबनिसर्वातीवातकनिविजयवतंगीनी
 त्याहेकुंसिरसकुको॥मतिरोवेअरिदीन॥धध
 रभीपांवतःसुतककरियोसांन॥फिरवे

तनरुं॥ देऊजलां जुनि राना॥ ५१॥ छंद पधरी॥ ५२॥ एक ही
रुकी योरय जुक्त गो न॥ प्रत आसा स्रम नर गती पो न॥ स्मर
न लबि दो नि विगत सस्र॥ उत प्रेसो नर पर ब्रह्म अस्त्र॥
लबि अस्त्र वंस पाउ वनि कंद॥ गर्न की करी रत्ता गों बिर
प्रति रोध करन सोर अस्त्र पाय॥ प्रेसो सुनि रे दोर एक सा
था॥ ५३॥ आसव॥ पार्थ विधि अस्त्र आ कथि पुत्र॥ अया
वा कि होय जग प्रलय अत्र॥ प्रेसो यद्दो नी जुत प्रमा
द॥ आ कथि एयां रूना हिया द॥ लबि उ नय अस्त्र जग प्र
लय कार॥ कनि आसव चन की ते संहार॥ कत दो न पक
रि रथे वि गाय॥ जुधि छिर अग्र ले की यो जाया॥ ५४॥ दो
हा॥ कृष्ण नीम दो नं करत॥ आन ताई न ही विप्र॥ करतर
या देय त कहां दत रुड रुड कलि प्र॥ ५५॥ कसो जुधि छिर
दो पदी॥ यह ह मते न हि होय॥ छिज विधम मस्त नानि ले
कहे कपी कारेय॥ ५६॥ चुडा मणि जुत हरि सिधा॥ विजय
देऊ छुट काय॥ विना सख यह विप्र नय॥ निगम कहत वि
धियाय॥ ५७॥ कसो जुधि छिर सुं कियो॥ सिधा छेदि मुवडा
रि॥ यो योग धरि नर करत॥ कर ऊस्मान अव नारि॥ ५८॥
ईति धृत राट्ट संजय संवाद॥ वैशंपाय॥ जुध नमि
विचन पति जव॥ आयो त्रिय न समेत॥ गांधारि प्रतिकर॥

तमिहिल्लसंसासुलहेतु ॥ १५ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
नदीअधिहीरदेमा कसो संसुहसो सदन ॥ १६ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
नरोव ॥ १७ ॥ अक्षतो हैतदुद्धरै ॥ १८ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
परतअधिहीरपायतम ॥ १९ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
यपरतकरनवनपरपरीमातुको ॥ २० ॥ लोको नतसा नलोको ॥
छिऊतो ॥ नयेकरजदसमर ॥ २१ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
विनजंघममपुत्रकी ॥ २२ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
तकिरा ॥ स्यात्तसिंघपरलीरि ॥ २३ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
उत्रधारिनकेसीसा ॥ पलचागीपदही ॥ २४ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
अनीसा ॥ २५ ॥ युधिष्ठिरप्रति ॥ २६ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
मिदानीसईरंधिनकी ॥ चरीगपयापुर्वा ॥ २७ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
कुं ॥ गंधीरगरे जयेनिचांरका ॥ २८ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
॥ संगंम कामयोरंका ॥ २९ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
उबीचा ॥ गंधीरक ॥ ३० ॥ लोको नतसा नलोको ॥
एलीनतंत्रमिनकी ॥ ३१ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
कजगेदेऊ ॥ ३२ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
रायकरदेतु ॥ ३३ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
देतु ॥ ३४ ॥ लोको नतसा नलोको ॥
यंभनंकरनकु ॥ ३५ ॥ लोको नतसा नलोको ॥

तवि
दुडा
५७
समि
कर

ज्ञानीमको॥सतसुतदियेमिराय॥एकसुताममसोउह
 ती॥अर्जुनकुमतिअघाय॥६६॥अर्जुनउ०॥अथमह
 रनकीयजोपरी॥इतीयहसौसुतमीर॥तातेनगनीपति
 हतन॥कियोसंकल्पघोर॥६७॥गांधारी॥पतिसिरधारे
 गोंदमे॥अखिसुतमछकुमारि॥रक्तिलिप्रमुखकचनकुं
 ॥पैछतकहतपुकारि॥६८॥करुसागीअपराधक॥कित
 जेकुंकछुबोनि॥मैकांताजाणेसहं॥अंतरगतीकीबो
 ली॥६९॥बुधिरि॥मातामेंगधीछिमा॥कुनरिवचावना
 काजा॥इरयोधनकलिरूपतौ॥अधमनयोमेंआज॥७०
 धृतरा॥अबमेरेसुतपांचरे॥तिनमेंअतिबलधीया
 नीममीलावहुमोरतौ॥कैसीतनममजीया॥७१॥मिलत
 बकोदरवरजिहरि॥पुतराधातुवनाय॥मिनवायोचरन
 कियो॥नयहुयस्योमुखगय॥७२॥दायनीमअतिडुषि
 तहुं॥मारेससुतमोहि॥सुनितनीचमेंकुमतीकरि॥तिन
 हितमास्योतोहि॥७३॥संजय॥अबनपमारेनीमकै
 मिलेकितवसुतआया॥अयमयदरीपुतरारजो॥नि
 महिनीयोवचाया॥७४॥धृतराष्ट्रकपाकरिममडुधितपै॥
 ईस्वरसुमतिअगाध॥गळ्योछुनकरीनीमकुं॥रास्योमो
 हिअपराध॥७५॥कियोसवनकोरादकम॥धर्मपुत्रजुत॥

तः प्रयागस्यै अवकरनकं देऊ जुलां जुलितात॥
 धासेजत अग्रज प्रांडुस्त॥ तेरे वांधव सोय॥ मातव
 चनसुनिविवसकौ॥ गिस्तो जुष्टिधिरगेया॥ ७७ जुष्टि
 प्रथमसोक नमो सबै॥ सोकनसो सुनिस्तथा॥ पहलें मो कूं
 करत तो॥ ननिन करतो जुध॥ ७८॥ छंद जो टका॥ धिके
 नयवं सविनासनयो॥ जल अं जुलिदेत विदालन नयो॥
 हरिबास देऊ समजाय कर्यो॥ सुनिग्या न ऊं दे नहि नैव
 कगस्यो॥ समजाय न जायय है हम पै॥ मिलित्वा ऐस वेंति
 रनी समपै॥ नपबोलत नी समतें वतिया॥ निरवे रहें जा
 फटी छतीया॥ तुम रे सुषगा स सुबोधरियो॥ तिन पै कुनी
 प्रहार कियो॥ जिन डो न सिंयाय रियो नरकू॥ अवसेष
 न अस्त्ररये घर कू॥ तिन कूं रि न मेरु ममार लियो॥ जव
 मां नरुंधिक मोरजियो॥ जिन स्वाद कछु न लिये जग को॥ स
 व बाल मरे मत मो वग को॥ जिन की अवल विधवा वरें
 तिन कूं न निहारि सुकुंडरतौ॥ विन जां निरवीस्त न्ना
 तरयो॥ सब ते निज सत्रु विसेस गियो॥ सवहि कुल को
 हम नास कीयो॥ यन बात न ते अकुलात रियो॥ किहरी
 त पिता हम राज कसू॥ यद पाप तें पार कदा उतसू॥ यत न
 कहि पाय न वीच गिस्तो॥ उवाय के नी सम अंकन स्यो॥

पांड०

१०५

सरसेऊपेबोधकरै सुतकी॥ मुयितापि वेदांत किंके
॥ सब आयकी आगितै आय जरी॥ किंरीत तं पुत्र
पकरै॥ कुनमारत को न मरै कबहुं॥ सुधरूप अ
बोसबहुं॥ करता हम सात न मुट किते॥ जग बिंच
जनिजिते॥ करता तु गता बहुता कहिये॥ निज जां
प्रसर रहिये॥ निज अंग अलिगत है प्रमदा॥ तिन
तांदो उभाव जुदा॥ गति ना बहि बंधरु मुक्ति गिनो स
पुन उने सुपनो॥ लिंग यल रुकार न देह न ऊ॥ न
वनी न ही सत्त कहूँ॥ तिन ऊ वन ते कर्म न स सबने
नाम गनी रन को यगिने सुनिनी समवेन अग्यान
नु नांनु उदैत मनुना सनयो॥ ७२॥ दिवस पिचो
सर॥ एयै नी सम प्रांन॥ माघ सुक्ल पय अष्टमी॥ सु
यो प्रयान॥ ७५॥ राहु कर्म करि नी स्मको॥ न पत ग
नागः सिंहासन बेडो सदय॥ नई प्रजा बड नाग॥
पांड० पंचदस मद्य॥ १५॥ सोरठा॥ अत ए दूर
धरम सुत्र सर परधे सो जया सुयो जन लेस॥ कव
गी कत कस्यो॥ १॥ स्नान रां नग जगा यमहि॥ नोज
सनाय॥ प्रथम करै अत रा दूजव॥ पीछे न पत स
॥ जो पसारय होवे निजर॥ करि अत रा दू बिनाग॥

युक्त्यादिदैः सबकुदेतसनाग॥३॥किदेउधिष्टीरकोकि
 दिधतराष्ट्रछोरि॥किदेकियोधतराष्ट्रको॥छोरिसकेन
 कोमा॥४॥युधिष्टि॥समरनर्षविशेधकरि॥करेपिताते
 सोमेरेअतिसत्रुहै॥बलनजदधिविसेस॥५॥नमोप
 कोतेजनमः सबकुनकोसुयरांन॥दैकोटिनधनहिजन
 रू॥कसो न्यपसनमाना॥६॥कीनीविडरषधानता॥नपति
 रुकीबेशसोईयुयुत्सनेकरी॥कपाजुधिष्टिरदेरि॥७॥
 नारच॥वितीतरात्रितीनजामा॥न्यमंजनकरै॥पितंब
 रंरुधारिकेरदेवसेवविस्तारै॥जुहांवअग्निहोत्ररूरा
 यविषयजिकै॥बुलायकैअमासब्रह्मानयचब्रह्मिकै
 पितारूमातरूषाणामधारिकैसनाकरेप्रतापदेधिसत्रु
 आपतायतेजडेरैरै॥स्वदेसकेविदेसकेकवीअमास
 मकै॥जयास्थितंसुमानदानेजेचलंतपायकै॥निकरि
 अस्वमानरूंसोईयानआवना॥सहस्रअष्टओअसी॥
 रिधीनरूंजिमावनो॥सबंधकरेजीमिन्यपन्यपब्रह्मसंजु
 तो॥करैविचारसास्त्रकोअगेगीयांनअमृतोत्रतीय
 पायकैनयंतसेन्यदाजरी॥करंतसस्त्रएकरकतैवरव
 री॥प्रहोसंसंधिसाधकेकरंतरात्रिकूंसना॥नयांतगोन
 सतैसुरेइलोकाकीधना॥करंतमंत्रछेधरी॥कियेसना॥

३०६ विसर्जनं प्रकाशमंत्रद्वेतना विना सपत्नतर्जनं ॥ वितीता ॥
०६ मेरुजामरविकेडतीयनोजनं ॥ समग्रनगरदेसकेवचा ॥
वकोप्रयोजनं ॥ यतेतकाजनित्यहै ॥ निमित्तकाजऔरजे ॥
अनेकदंमहोमजापद्वेतसांजनोरजे ॥ प्रहारकैधमा ॥
अपेपुकारदीमीनये ॥ निवेरनीरपीरहोतराजकारये ॥
गये ॥ ॥ दोहा ॥ अंधरेकुशीपांगुरे ॥ जेकोउबिबुआधार ॥
तिनकुंसावनसातसत ॥ शिवकाकरतप्रचारा ॥ जि ॥
ततितकीनेधर्मसुतवापीकूपतडाग ॥ तथाप्रजाराजस ॥
या ॥ ब्रह्मदेवालयवाग ॥ १० ॥ कसोरायेजेहरीतनपा ॥ अ ॥
स्वमेधकियतीना ॥ अन्धनोमयत्रतीयको ॥ उछवरोत ॥
नवीन ॥ ११ ॥ पांचत्रातश्रीकृष्णजुत ॥ नोजनकरतजन ॥
त ॥ प्रयाप्रपरीउनयदिग ॥ चलीधूर्वकीवात ॥ १२ ॥ विप ॥
तिसमयकोनावसवा ॥ अपनिमतिअनूप ॥ कहतसु ॥
तीकरिहसकी ॥ सुनतजुधिद्विरनूप ॥ १३ ॥ कविता ॥ अ ॥
वन्धयस्त्रानअस्वमेधनयेकुंताकहै ॥ जानतीमेअसो ॥
नागमेरेकवैहोयहै ॥ गुरजनधुरकीअमासअमरा ॥
वनकी ॥ त्रियामितिअहैमेरीकयादीवजोयहै ॥ तिन ॥
कोकरुंगीसतकारसरातांतिनांति ॥ वस्त्रसुगंधसीनी ॥
येतैत्यतोयहै ॥ कृष्णकैउतापअवैताहीआवआदरमे ॥

वीतीतदिवसनिस्सामोचैकवसोयहैं॥१४॥ जोपरीकहत
 मेरोबांछितमदेवदत्तो॥ कदा नाना नानातिनकेअंजनव
 नाउगी॥ छऊरसनत नोज्यलेसुचुस्यपाकपांनरिषी॥
 नपयंकीजुतनपकुंजिमाउगी॥ करिहैप्रसंसामेंरीसुनि
 केअवनताहि॥ विघनकीआसिधातैंअतीहीअघाउगी॥
 कलकेप्रसादअवमहानसदहलवीचा॥ सोत्रोंनिसनेम
 अवकासकवपाउगी॥१५॥ नीमसेनकहेमेरेंहतीअनि
 नायाअैसीगांधारीकेवृत्तकदंगदातैंप्रहारिहं
 अनेकताकैदोयहैंसहायनयमसकासमानतेउजुदे
 रकारिहं॥ सवैरनिगजकुरुवंसिनिकोछत्रताहि॥ युधि
 छिरडिमामीलताकैसिरधारिहं॥ सुधसिंभग्राहनोरजु
 कसोतसोमेंनीकौ॥ कलकेप्रतापताकौकाजसप्रकारि
 हं॥१६॥ अर्जुनकहतसोमोकुंरहतिबडीसीचाही॥ नप
 नकेपुत्रदेसदेसनतैंआयहैं॥ अखसलधनुकोप्रताप
 मोपरेपिहतेआपरोपराकमसोहमकोदीपायहैं॥ धनु
 बिद्याचारनातिमिषीहैंदमारेपासि॥ अैसोदिनकैहैंक
 सजनकुंनयहैं॥ तिरैसिधाहैतेमोकुंनितसकुंसमयन
 हि॥ कलकोकदायकेरकुंनमिधिपायहैं॥१७॥ नकुल
 हैविचारआपराकीवारमेंगेजाकेहारएकअखधन

४० छत्री जात सो दोय कांन चार पाव अक पुछ अमोह यम
०० रे होय अहो नाग्य मांनो वही वात सो॥ जाके अलन नमुन
न विचा सो कस्यो न पांन से वाको विधान सो क पात सो॥ क
सकी कृपा वसंग लाय देतुरंग जु दे अंग रंग ची कृत ही
आयं कं वितात सो॥ १८॥ कहै सह देव अनि पाय समै आ
पस को जान तो मै धन्य जाहुं विषन को संग दे॥ अष्ट ही ति
हांन ओ उपाय पट वेता वेदा॥ राशी ओ न पत्र ग्रह जोति
षके अंग हौ॥ चार वेद साख्य पट॥ काव्य को स व्याकरण॥
साहित्य संगीत ध्वनी लज्जु नाद अंग हौ॥ कल केष साद अ
सी विद्या जु तब सब बंद॥ आवत अने कर दें नि साद्यो सरं
ग हौ॥ १९॥ छंद पधरी॥ जु धिष्टिर कहत न डकुन उद्योत
हरि स्तुति कहतु मम इह होत महि नई नारपी डाय मां
न॥ अवतार लियो जड वंस अनि॥ इत नासकट अरु त्रणा
वत॥ केशी परबक अजगर कुकत॥ बछासुर वलं वास
र संघारि मघवा विधिकालिय मांन मारि॥ कंश दंत वक्र सि
श पालन कूर दलिकाल जवन कीय नारहरा॥ न की कर माग
ध अदिनी चा॥ बाकी अष्टादस दिवस बीच॥ सब नृमी नार
की नो संघार॥ धुनि से बसोई करि होष दार॥ कलम मम वि
घ्न दारे कपाल॥ गिन तेन पार पाउ गुपाल॥ नीम को दिमो

धसचुनाव॥विष्णुकोकरतनुमविनवनाव॥वह्निके
 दनसवजरतनारा॥कोविडरूपउपदेसकारा॥मदिनप
 मागधमरंध॥सवपासलियोकरजरासंध॥नीस्मते
 यतउतवधनाव॥तिनविगरसवनरूंदियोताव॥अ
 तगजआणसोईनपञ्चवासा॥नरहरिप्रतापकियनीस
 मनास॥दोपदीसनाविचवस्त्रएक॥अंचतद्विथकोछल
 करिअनेका॥डरवासाआयोआपदेना॥लमिकुसमयमे
 धर्मलैन॥तवकपाप्रसेनकैदैअसीसा॥वेरकतैकीनीउ
 लटीरीसा॥प्रथमदियकर्नमनकोपजेरि॥गनिनीस्मछेय
 जिनसल्लगेरि॥नटकनेझोननीसमअनीतः॥अकेवेत्त
 रतदेतेअजीत॥नीस्मकोपतनरिनअसंताव॥अप्रविन
 कठिनवनतोउपावा॥वेस्मवस्त्रअस्त्रनगरतवकारि॥मो
 बौसुआपदेमोसुगरी॥अर्जुनववायजयइयअसंत
 नरपिनवीचमासोअनंत॥ताकौसिरताकेपितुसकाः
 अंजुलिगतिकरीकियउचयनासवासवीसक्तिअर्जुन
 य॥मोघकियहिडंवास्तुतमरायझोनकोकोनकरतो
 निपातगुरुजानीतअर्जुनकरतयात॥आपकरिबोहो
 तछलअनायास॥डुपदरुतहापकीनोविनास॥झोनी
 नारायनअरुडारि॥ममसेमजीततोसवनमारि॥अ

छत्री जात सो होय कोन चार पाव अक पुछ अयो हय मे
 रे होय अहो नाग्य मानो बदी वात सो ॥ जाके अलन सुन
 न विचा सो कस्यो न पांन सेवा को विधान सां क पात सो ॥ क
 लकी कृपा वसंग लाय है तुरंग जुदे अंग रंग ची नूत ही
 आयं कं वि तात सो ॥ १८ ॥ कहै सह देव अनि प्राय समै आ
 पद को जान तो मै धन्य जा कं विघन को संग दे ॥ अष्ट हीति
 दान ओ उपाय षट वैता वैद्य ॥ राशी ओ न षत्र ग्रह जोति
 षके अंग हों ॥ चार वेद साख्य षट ॥ काव्य को स व्या करन ॥
 साहित्य संगीत ध्वनी लछु नारु अंग हों ॥ कल कै व सार अ
 सी विद्या जु त बल्य बंद ॥ आवत अने कर दें नि साद्यो सरं
 ग हों ॥ १९ ॥ छंद पथरी ॥ जु धिष्टिर कहत जड कुन उद्योत
 हरि स्तुति कहतु मम सहोत महि नई नार पी डाय मां
 न ॥ अवतार लियो जड वंस अनि ॥ पुत नास कट अरु त्रणा
 वत ॥ केशी परब क अ जगर कुकत ॥ वछा सुर पतन वास
 र संघारि मघ वा विधिका लिय मां न मारि ॥ कंश दंत वक्र सि
 शपाल नरु र दलिका ल जवन कीय नार हर ॥ नर्का सर माग
 ध अदि नीच ॥ बाकी असा द स दिव स बीच ॥ सब न सी नार
 की नो संघार ॥ पुनि सेष सोई करि हो प्रहार ॥ कल म म वि
 घ्न टारे कपाल ॥ गिन तेन पार पा उगु पाल ॥ नीम को दिगो

धसचुनाव॥विष्णुकोकरतनुमविनवचाव॥वन्दिके
 दनसबजरतनारा॥कोविडुररूपउपदेसकारा॥मदिनप
 मागधमरंध॥सवपासलियोकरजरसंध॥नीस्मते
 यतउतवधचाव॥तिनविगरसवनकूंदियोताव॥अ
 तगजप्राणसोईनपञ्चनासा॥नरदरिद्रतापकियनीस
 मनास॥झोपदीसनाविचवक्षएक॥अंचतदियकोछल
 करिअनेका॥डरबासाआयोआपदेन॥नमिकुसमयमे
 धर्मनैन॥तवकपाप्रसन्नकैदैअसीस॥घेरकतैकीनीउ
 लदीरीस॥प्रथमदियकर्नमनकोपजेरि॥गनिनीस्मछेय
 जिनसल्लगेरि॥नटकनेझोननीसमअनीतः॥अकेवेत्त
 रनदेतेअजीत॥नीस्मकोपतनरिनअसंजाव॥अप्रविन
 कविनवनतोउपाव॥वेस्मवसअल्लनगदतवकारि॥मो
 षौसुआपदेमोसुररी॥अर्जुनवचायजयइयअसंत
 नरथिनवीचमासोअनंत॥ताकोसिरताकेपितुसकाः
 अंजुलिगतिकरीकियउचयनासवासवीसक्तिअर्जुन
 य॥मोघकियहिडंबासुतमरायझोनकोकोनकरतो
 निपातयुरुजानीतअर्जुनकरतयात॥आपकरिबोहो
 तछलअनायास॥डुपदसुतदापकीनोविनास
 रायनअल्लडरि॥ममसेमजीततोस

पसे होय रह क उदार ॥ विस्मय न ना स पावै विंकार ॥ अ
 र्जुन मोहि मार न मर न धारि ॥ उन समय डकुं न लीने उबारी
 कह्यो नव करन को सरपवान ॥ पटकि रय सवा के रये पान
 ॥ नीम कुंगरा छल कहि सुनाया ॥ सुयोधन मारि की नो सर
 य निम कियो जो न कृत कर्म नीचा ॥ पांचहि कौले गये विपु
 नीच ॥ सुवन जाताहि नीती सुनाय ॥ विषम मम आपतें लि
 यव चाय ॥ निमतें मिलन जव पिता नाथि ॥ जो हम य कियो
 तन लियो राधि ॥ ब्रह्मास्य ते जतें गर्नवान ॥ करच कवेरी रा
 व्यो कपाल ॥ पूर्णता जिह निरविघ्न पाय ॥ श्रीकृष्ण आप होतो
 मदाय ॥ दिन प्रति जिह जत अस्तर देव ॥ सोई करत आप
 मम अबुज सेव ॥ दास के दास दी न न दयाल क रुना निधा
 न अघ हर कपाल ॥ रीजतें देत सरस्व लोक ॥ आपतो पि
 जते कुं विसुं ओक ॥ औसोत जिस्वांसी चहत आन ॥ सोहि प
 द रूप चो पद समान ॥ नुगति डय मिलै अबराज नोग ॥ जे
 रा एवरी सुती जोग ॥ वरु नंद कर्म हम जुत विकार ॥ की
 तितें किये जग पवित्र कार ॥ निज हो सकृस की सुति निह
 रि ॥ बंधन तें बोलत नय बहोरि ॥ २५ ॥ कविता ॥ दादो कानी
 न पिता गो ल कहम कुंड जहौ ॥ पांचपत्री ऐकजीया ऐकु ॥
 विपरीत हैं ॥ पितामह बंध विषमारे तुछ लो न लांगि मस्त

करजकाज अतिसे न्यनीतहों। हमकंनपुक्तिदेछुनी
 सैकर्मकारितिनकोसुजससुनैमिटै नर्क नीतहों। न
 रजनागीडयनागीतैस्तुतिकरोकहै नपहुसकीक
 नताकीधीतहों॥२१॥हुहा॥ करीस्तुतिनयधर्मकी
 रेपावजोकोयः सब नारतकेपावको॥रुनपावेनर
 य॥२२॥ श्रीरुस॥ कवितदांनकोनमानजाकेमा॥
 नसयानरुकोवसकोनमानजाकूं देखतथकातहूं
 राधुत्रआतमादिमेरेकरिगयेकहा॥ताकोउपकार
 रैमनमैसंकातहूं॥जीवमात्रमेरुरूपजानिसराधु
 तहैं॥ताकैपापहोयहुंजोहोयतोधकातहूं॥रुसचं
 हूँतोसोहोयजोअनन्यनक्तमेरेनैनताकैहातवेचे
 बिकातहूं॥२३॥हुहा॥ सीधमागीहरावती॥गयेरुस॥
 नेजगेह॥डरनिकटदरिरदततोउ॥नयनतववदतस
 हा॥२४॥कछुकनीमडरवचनेतौ॥कछुकबिडरसुनि
 नान॥नोधतराधुविरगमया॥वायोवियनषयांन॥२५॥
 गेोनपस्ततधर्मतौ॥आतुरकेआदेसा॥कहतजुधिष्टि
 दीनकौ॥विस्मयजुक्तविसेस॥२६॥सीधलेहितेआप
 गे॥आपसीधकिहियास॥नेतयिताकरकरतहों॥हमा
 रंपरमनिरास॥२७॥सुनिलिपद्योगंधारीगर॥मुहि

यानरेस॥ तवही पितु कुंधर्मकृत॥ जान्यो डपित विसे
 ॥२८॥ आसवचन॥ चोये आश्रम तप करे॥ संचै विपन
 प्रीत॥ हवन कर कृत ज्ञान दे॥ यह राजन कीरीत॥
 ॥२९॥ धर्म पिता मद सीष सुनि॥ तथा अस्त कहि बैन॥ कुल
 तप कृंचा वैचलो॥ दरत अंशु दोउनेन॥ ३०॥ तृतीय
 जन्त तै सीष ले॥ नृपचलो निज गेह॥ प्रथा संग कुरु
 न गहो॥ तजि पुवन को नेह॥ ३१॥ जुधि छिर ड॥ तेरे
 सहित वंस को॥ कसो द्विज न जुत पात॥ मात छांकी
 त राज श्री॥ किहिकार न बन जात॥ ३२॥ प्रथा गाथा
 धतर दूदोउ॥ सास ससर समान यन कि सेवाईन॥
 हतै॥ करि डं अर्धत मभान॥ ३३॥ नृपत त्रिया जुत विड
 जुत॥ संजय प्रथा समेत॥ तप हित विपन निवास किय
 आसाश्रम जुत हेत॥ ३४॥ ततय वर्ष कृत धर्म तिता॥ आ
 दर मन लेन॥ आस कपा देखी सवन॥ मरी से नृप निज
 न॥ ३५॥ निकरी विडर की देह तै॥ धर्म राज को अंस ली
 युधि छिर मै नयो॥ सव देष तरि धी वंस॥ ३६॥ गर्भो जु
 छिर गेह पुनि॥ अक बर्य उपरांत॥ दाह न गोवन ता
 हतै॥ नयो मात पीतु अंत॥ ३७॥ दी आगा धतर दूने स
 यव दिनि केत॥ गयो बहुरित य करन कूं॥ आयर

यद्देतः॥३॥ मिलैकस्तैवकुतदिना॥ नयेपार्थजि
 प्रजानि॥ लैः प्राग्यानययैकसो॥ क्षणधुरीषयाना॥३॥
 कालतितः कीनेविवधविहारा॥ नयिन
 सागमजडनको॥ बोलेकस्तैवकुतदिना॥४॥ छंदपधरी॥४॥
 नरकैहैकनिजडवंसनासा॥ पुनिमस्तुलोकतजिह्व
 कासा॥ त्रियनजुतजाऊंलैवजना॥ मक्षधुरीणजदीज
 हस्तुलाना॥ दिनरसकवीचमुरजादलोपि॥ करिहैधुर
 मजनउदधिकोपि॥ मेरीयद्दृष्टाजानिमीत॥ पुरस्वर्गमि
 लकमोतैसधीता॥५॥ अर्जुनवचनछंदलनि॥ अमिलना
 जक्तकेहेतुरूपहो॥ नरसरीरतैविश्वरूपहो॥ निगमगो
 नतैपारतोरना॥ स्तुतिकरूजयाबुद्धिमोरना॥ बुधविरंच
 से॥ चलिजातैहै॥ पवलतारमायंदियातेहै॥ दरतसासदा
 ॥ तेजआपतेरइतकालकुं॥ नीतितापतैतुमअधीनतै॥
 दीनरासतै॥ अतुगमैजियो॥ याकुलासतैअवनदासकौ
 सागकीजीये॥ विरनांसहंगलनिजियो॥ मिलहोसदा॥
 सेजयानहो॥ कछुनमैगिगोला नहानिहो॥ विषमतापरी
 जवजवहीसुखनताकरी॥ तवतवहीचरनरासकूं
 नछोरियो॥ कलिकलंकमैनाहिवोरियो॥ जडनकोयदना

कंकहं कौरवे कंक॥ विपति और तो सी स डारिये॥ च
 न सरन में गते ना दिटारिये॥ ४२॥ उह॥ सुनि वीन तीय
 पाय की॥ कल कही सम जाय॥ पांच नात गिरितु हिन पे
 देह गारीयो जाय॥ ४३॥ नयो तुम्हारे जक्त विच कुन वि
 म अय बाद॥ पद सांति अय बाद की॥ कर कुन और वि
 दा॥ ४४॥ त तो मेरे रूप है॥ मिलि दे मो ते आय॥ जेगे फिर
 अवतार कछु॥ ऐ सो ईकार न पाय॥ ४५॥ छंद पधरी॥ सुनि
 लो पाय जइ त्रिया लिवाय॥ पंथ वीच नुटेरे मिले आय
 उदि मन किरी टी कु सोर च॥ कै गये सख अख कु प्रपंच
 ने गऐ जइ न की त्रिया न्दरी॥ परि पंथी बा ए न स के छुटि
 नुर असुर न गां जी बधर अजेय॥ तिह छु ते द सो धन अय
 य॥ अकु लाय आप धात हि विचारि॥ आस ते कहे दूर वा
 कार॥ श्री आस कहि निज वात निह॥ बड न ते बडी माया
 लिह॥ सोई माया घेर क जक्त इस॥ उन ईस विनां सारे अ
 सीस॥ वहुन न ते ऐसी वहुन वेर॥ कै जात पुत्र विविच
 अंधेर॥ सुनि आस वचन कछु न जि विदा॥ आयो ह्य नाप
 अय माद॥ गिरि प सो जु धि छिर चर न ची च॥ अं सु न ते दी
 नि मि सी च॥ उवा वत जु धि छिर उवत नां दि॥ मि न र ह्यो
 स दो उ चर न मां दि॥ जु धि छि इत नो प ता प कि ही री त ता त

तंकहतवातनदिकहीजाता॥अनिमीतनये
॥शोधरीवषाआदिककितेकाहिकुसलरु
ताता॥कलुकदरुंमोरहीयफटलजाता॥अ
कुलतेरुषचंजजिनकेप्रतापजीसोसुरे
पाशेनःजीसममीराय॥इकछत्रराजतव
दिविदपछांहिसुषमिस्योरजा॥वाग्योकुव
आजा॥धं॥कवित॥हिनागोडरेउतरसोगहे
रीताकुंवेषरुमैपीवअरिकुंवतांइना॥अ
यनयेवनवीचशिव॥कपटनियादतातैतो
नांनागदेवदेत्यनतैविजयकरैया॥मेरेना
सविनांविजेपाईना॥गाजीवअवयतौनज
लही॥जादोनकीसेषगशीविनतावचार्न
धरी॥विजयसुषसुनतनपवियमंवात॥नोमि
सिसनीपात॥कलुकालवीतिसुधिनईनप
हीआदीकअनंपा॥परितततदुनसिरछ
युसुत्सुकरंराजजार॥धंवाहुंदकुरंगहाणरा
सबंधधर्मकाजातीसमष्टवर्षकीनरेकछत्ररा
धीनओरइसीसहं॥आयकेपरंतपायदेस
नेकदांनविप्रबंदकउदाश॥तीनअश्वमेधकी

२॥ नागनामग्रामपेपरीसतैविटाय॥ वज्रनां निहं पुरी॥
 मायुशयगय॥ पांचबंधोपदीसमेतछाहिजोनहेमअ
 कैप्रवेसधारिस्वर्गगो॥ दोपदीसमेतचारबंधदेहसीन
 यमत्कदेहतेसुनाकगोनकीन॥ ओमगंगारूपकेसुदि
 देहधारि॥ बंसतेमितो नरेइइइपेपधारि॥ जोनअंसजो
 कोसुतो नबीचलीन॥ कैगयोसुधर्मराजगोनकेअधीक्षो
 वेसवानांयथासंनु॥ देवानागरुडध्वज॥ नरीनांचयया
 गा॥ शास्त्राणां नारतकथा॥ ५१॥ इदं नारतमाख्याने॥ य
 वेअणयानर॥ अश्वमेधाधिकंपुण्य॥ अनतेनात्रशं
 य॥ ५२॥ इदं श्रुत्वा यथाशक्त्वा॥ ब्राह्मणान्नोजयेनर
 देत्वा सोऽयमहं च॥ सतेबिलुपदंअजेत॥ ५३॥ इह॥
 हिजसक्तनोकिनासक्तनोजनजससुनोतसूर॥ ओमो
 मीपुषकोवचन॥ शुभो निकटअरुहर॥ ५४॥ फिरचा
 रजसहोनतै॥ गकरकीअधिकार॥ दरसनयहविष्मात
 मैकाकरुपुकारि॥ ५५॥ तातैकीनीचंडीका॥ मेरीमति
 प्रभुमान॥ नक्तसंगअरुनक्तिको॥ देहकूपानिधिरांन
 ५६॥ पंगुनगुंगोरोगजुत॥ वनिकछुधातुरजीवा॥ नयजु
 वालकत्रियअचष॥ सुनतअनायसदीव॥ ५७॥ कवि
 शोनओविरगहोउपांयनविनांकपंगु॥ नक्तिरसनाते

कृष्ण

१११

हीनगुणकुंनिहो रेग॥ विधातापरे गार्कर्मवानिजवनिक
 कुंमै॥ ऋषोदसधाको उजन्मको विरेगे॥ कालनीतवान
 बुधियातमादे अवना ओ अंधतत्त्व अंजनकुं अनेक
 धारेगे॥ अक-अंग के अनायता के विके सुने हाथ आदि अ
 तमे अनायनाय को विमारेगे॥ ५७॥ छपया॥ पंगु कुच जा
 संपानि॥ गुंग जमना जुन गावता॥ रेगी प्राधवदा सवनिक
 तिरिनोचन आवत॥ छुधित फुदा मा बिघा॥ नीत जुत ब
 जकी नामनि॥ बालक वधा प्रहनादा॥ अवल दुपदादिक
 कामनि॥ हे अंध सरनो हम सुने हाथ विके तिन के हरी॥
 जग के निवास सब गुन संजुता॥ छपदा सवीनती करी॥ ५
 ८॥ हहा॥ ४२ सरु अलंकृत ग्रंथ मे लिखे नाहि ईह नाय स
 सुदि बुधि जिन विवृतये॥ अबुधतीये न लयाया॥ ५९॥
 पंगल डिगल संसकत॥ सब समरुन के काजा॥ मिश्रत सी
 नाया धरी॥ छिमा कर फु क विराज॥ नयर सको बलनी क
 ॥ अथीत धुनी अवीरुनयो॥ इयन यरन जदीक॥ नारवा
 रुमे दही कना॥ ६०॥ कलि जुग छोटें ग्रंथ कुं॥ लिखे पछे
 सब नोका॥ ताते श्री क ह तार नया॥ सर्व ग्रंथ को ओक
 ॥ ६१॥ कविता की रचना नरी वाच छंद विचलीन॥ नरी
 उक्ति कविता नमै॥ कथा संकीरन कीन॥ ६२॥ न

तार्धमहै॥ नदि नारतकी वात॥ निकमै चंचलता करी॥ कर
नछि माक विपात॥ इति श्री पांडव यमोदचंद्रिका स॥
रूपदास विरचितं षोडशम सर्ग॥ १६॥ समापत्॥
वत्॥ १९॥ १७॥ काडती आसो जसुही॥ ८॥ आवम
वदवायरे॥ श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ शुभं नवस्तु॥
श्रीश्री त्वं व्यास चंद्रनाथ वडो पत्ने बाल॥ गामबो जुह
तो गराक्षो रे वास राय श्रीनी वासजी की चंमपुरी म॥
मे॥ पवनार्थ गकुरा श्री वशीवाला
हेली श्री ज्योवां चेरी येपढेजी सुगंम गंम वंचसी॥

